RATNA JYOTI RATNA JYOTI

sampletest

16 Jan 2019 04:05 PM

Durgapur

Model: Web-10YearPredictionPack **Order No: 107538301**

Phone: +91-341-2668022
Mobile : +91 -9732150484
Whatsapp : +91 -9732150484

RATNA JYOTI®

Website: https://www.ratnajyoti.com/
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan ,W.B , India ,Zip-713322

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**16/01/2019**
दिन	बुधवार
जन्म समय	**16:05:00 घंटे**
इष्ट	24:07:56 घटी
स्थान	**Durgapur**
देश	India

अक्षांश	23:39:18 पूर्व
रेखांश	87:11:23 उत्तर
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	00:18:46 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	16:23:45 घंटे
वेलान्तर	-00:09:35 घंटे
साम्पातिक काल	00:06:05 घंटे
सूर्योदय	06:25:49 घंटे
सूर्यास्त	17:16:10 घंटे
दिनमान	10:50:21 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	01:52:37 मकर
लग्न के अंश	17:06:41 मिथुन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	मिथुन - बुध
राशि-स्वामी	**मेष - मंगल**
नक्षत्र-चरण	**कृतिका - 1**
नक्षत्र स्वामी	सूर्य
योग	शुभ
करण	गर
गण	राक्षस
योनि	मेष
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	गरुड़
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	अ-अश्विनी
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मकर

पंचांग

दादा का नाम ____________:
पिता का नाम ____________:
माता का नाम ____________:
जाति ____________:
गोत्र ____________:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1940	पौष	26
पंजाबी	संवत : 2075	माघ	3
बंगाली	सन् : 1425	माघ	2
तमिल	संवत : 2075	थई	2
केरल	कोल्लम : 1194	मकरम	2
नेपाली	संवत : 2075	माघ	3
चैत्रादि	संवत : 2075	पौष	शुक्ल 10
कार्तिकादि	संवत : 2075	पौष	शुक्ल 10

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ______: 10
तिथि समाप्ति काल ______: 24:03:36
जन्म तिथि ______: 10
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ______: भरणी
नक्षत्र समाप्ति काल ______: 14:11:45 घंटे
जन्म योग ______: कृतिका
सूर्योदय कालीन योग ______: शुभ
योग समाप्ति काल ______: 27:43:26 घंटे
जन्म योग ______: शुभ
सूर्योदय कालीन करण ______: तैतिल
करण समाप्ति काल ______: 12:30:31 घंटे
जन्म करण ______: गर
भयात ______: 04:43:07
भभोग ______: 58:41:34
भोग्य दशा काल ______: सूर्य 5 वर्ष 6 मा 9 दि

घात चक्र

मास ______: कार्तिक
तिथि ______: 1-6-11
दिन ______: रविवार
नक्षत्र ______: मघा
योग ______: विष्कुम्भ
करण ______: बव
प्रहर ______: 1
वर्ग ______: सर्प
लग्न ______: मेष
सूर्य ______: कर्क
चन्द्र ______: मेष
मंगल ______: सिंह
बुध ______: वृष
गुरु ______: कन्या
शुक्र ______: तुला
शनि ______: मिथुन
राहु ______: वृश्चिक

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

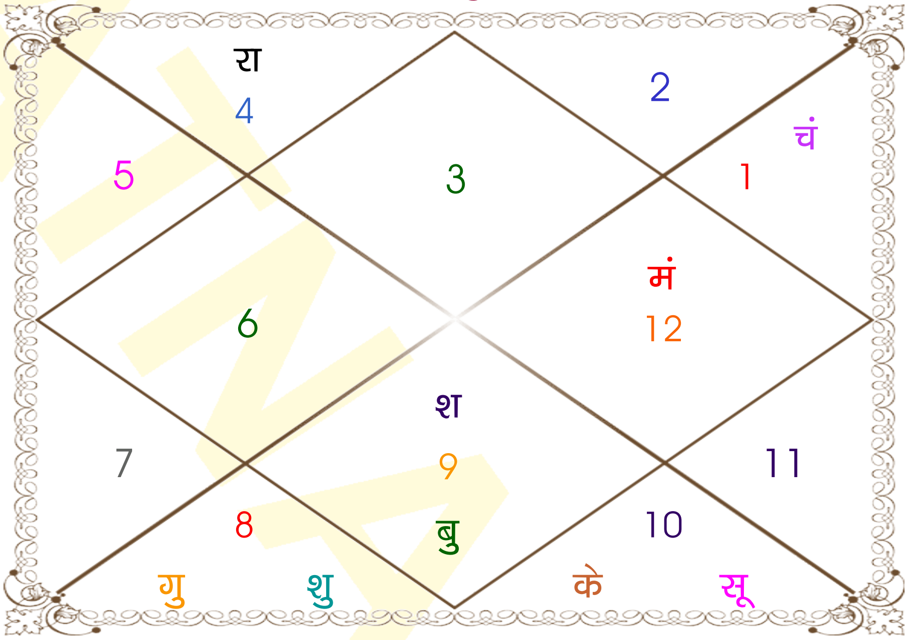

चन्द्र कुंडली

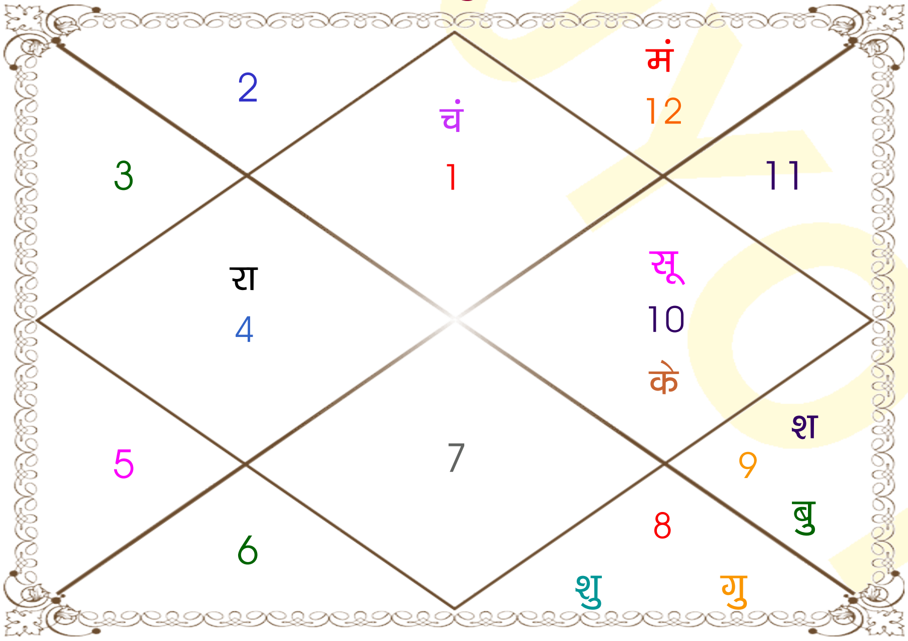

RATNA JYOTI

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

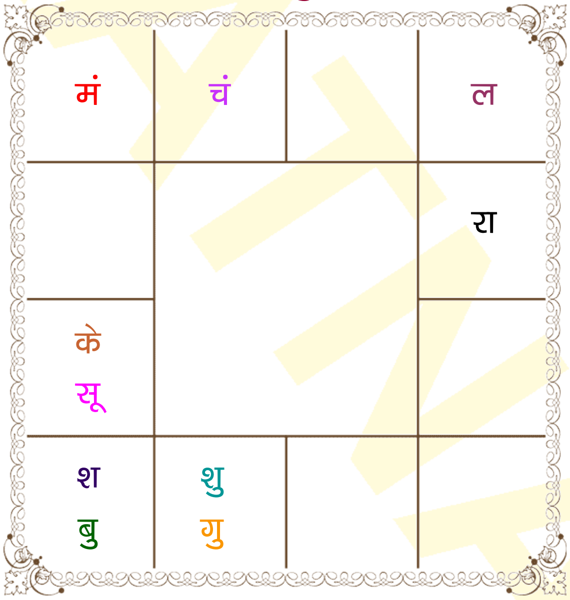

लग्न कुंडली

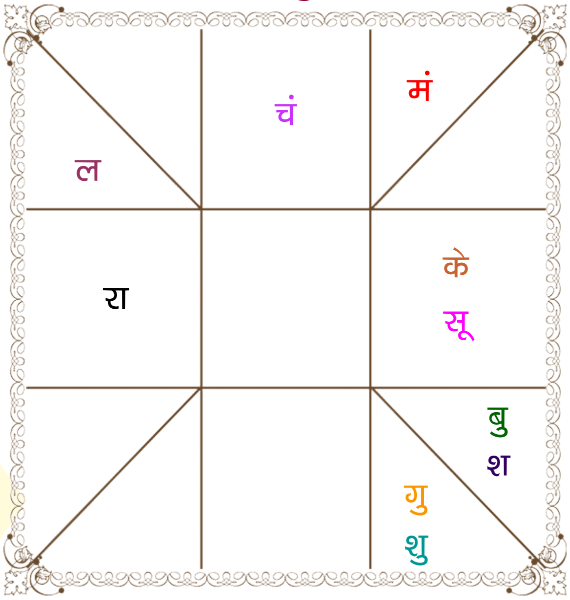

विंशोत्तरी
सूर्य 5वर्ष 6मा 9दि

सूर्य	
16/01/2019	
28/07/2138	
सूर्य	26/07/2024
चन्द्र	27/07/2034
मंगल	26/07/2041
राहु	27/07/2059
गुरु	27/07/2075
शनि	27/07/2094
बुध	28/07/2111
केतु	28/07/2118
शुक्र	28/07/2138

योगिनी
उल्का 5वर्ष 6मा 9दि

उल्का	
16/01/2019	
26/07/2024	
उल्का	27/07/2019
सिद्धा	25/09/2020
संकटा	25/01/2022
मंगला	27/03/2022
पिंगला	27/07/2022
धान्या	25/01/2023
भ्रामरी	26/09/2023
भद्रिका	26/07/2024

RATNA JYOTI

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मिथु	17:06:41	320:21:32	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	शुक्र	---
सूर्य			मक	01:52:37	01:01:06	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	गुरु	शत्रु राशि
चंद्र			मेष	27:43:21	13:26:33	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	चंद्र	सम राशि
मंगल			मीन	16:14:15	00:40:37	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	गुरु	मित्र राशि
बुध		अ	धनु	23:15:39	01:34:59	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	शनि	सम राशि
गुरु			वृश्चि	20:46:58	00:11:41	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	मित्र राशि
शुक्र			वृश्चि	15:19:30	01:04:33	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	गुरु	सम राशि
शनि		अ	धनु	19:04:27	00:06:59	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	सम राशि
राहु	व		कर्क	02:39:32	00:00:07	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	राहु	शत्रु राशि
केतु	व		मक	02:39:32	00:00:07	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	गुरु	शत्रु राशि
हर्ष			मेष	04:31:16	00:00:30	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	चंद्र	---
नेप			कुंभ	20:20:04	00:01:39	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	---
प्लूटो			धनु	26:59:42	00:02:01	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	सूर्य	---
दशम भाव			मीन	07:31:53	--	उ०भाद्रपद	--	26	गुरु	शनि	केतु	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:07:08

लग्न-चलित

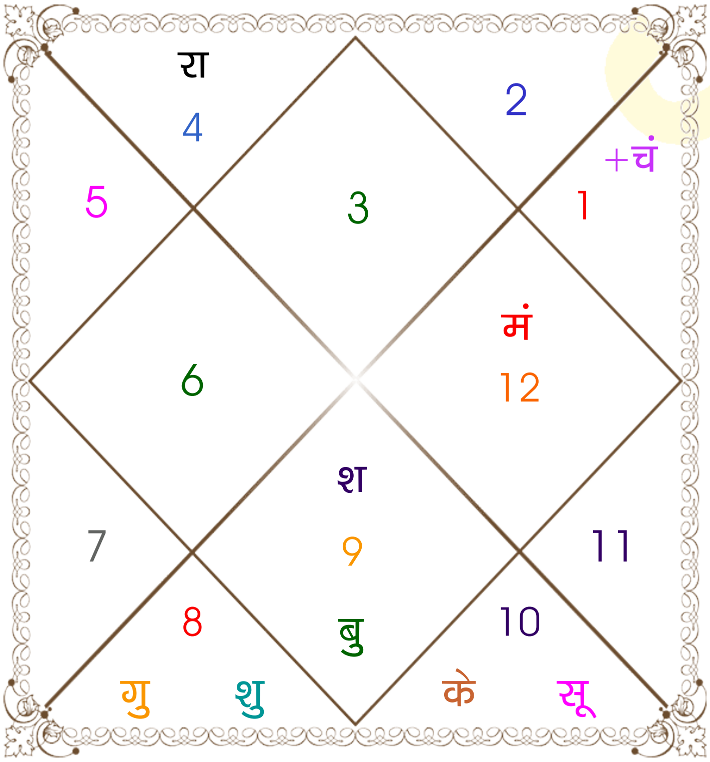

चन्द्र कुंडली

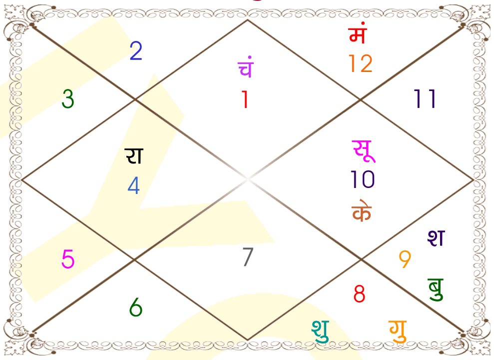

नवमांश कुंडली

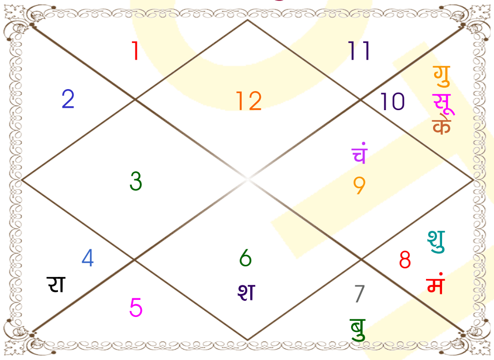

RATNA JYOTI®
Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मिथुन	00:30:53	मिथुन	17:06:41
2	कर्क	00:30:53	कर्क	13:55:05
3	कर्क	27:19:17	सिंह	10:43:29
4	सिंह	24:07:41	कन्या	07:31:53
5	कन्या	24:07:41	तुला	10:43:29
6	तुला	27:19:17	वृश्चिक	13:55:05
7	धनु	00:30:53	धनु	17:06:41
8	मकर	00:30:53	मकर	13:55:05
9	मकर	27:19:17	कुम्भ	10:43:29
10	कुम्भ	24:07:41	मीन	07:31:53
11	मीन	24:07:41	मेष	10:43:29
12	मेष	27:19:17	वृष	13:55:05

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मिथुन	17:06:41
2	कर्क	10:50:17
3	सिंह	06:59:50
4	कन्या	07:31:53
5	तुला	11:42:36
6	वृश्चिक	15:48:47
7	धनु	17:06:41
8	मकर	10:50:17
9	कुम्भ	06:59:50
10	मीन	07:31:53
11	मेष	11:42:36
12	वृष	15:48:47

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी

चलित कुंडली

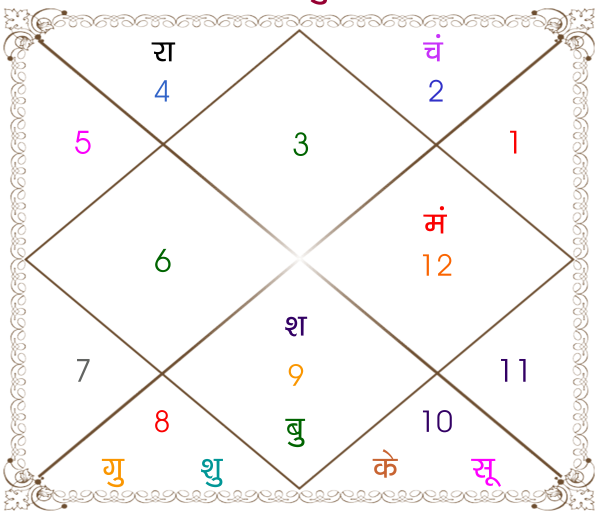

भाव कुंडली

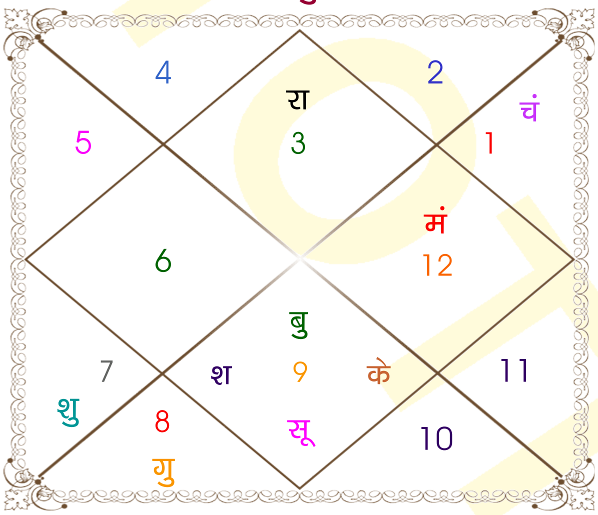

RATNA JYOTI®
Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------		-------- अवस्था --------				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	कलत्र	पितृ	मृत	खल	नेत्रपाणि	4.55	56 %
चंद्र	आत्मा	मातृ	मृत	निपीदित	निद्रा	10.48	60 %
मंगल	पुत्र	भ्रातृ	युवा	मुदित	निद्रा	3.66	45 %
बुध	अमात्य	ज्ञाति	वृद्ध	विकल	उपवेशन	0.00	60 %
गुरु	भ्रातृ	धन	कुमार	मुदित	निद्रा	1.72	41 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	युवा	शक्त	निद्रा	1.07	56 %
शनि	मातृ	आयु	वृद्ध	विकल	आगमन	4.03	75 %
राहु	---	ज्ञान	मृत	खल	उपवेशन	0.00	84 %
केतु	---	मोक्ष	मृत	खल	नेत्रपाणि	0.00	84 %
कुल						25.52	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी

चलित कुंडली

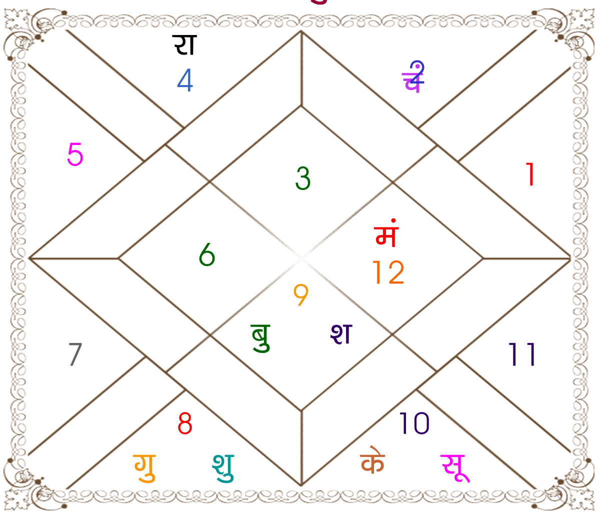

लग्न-चलित

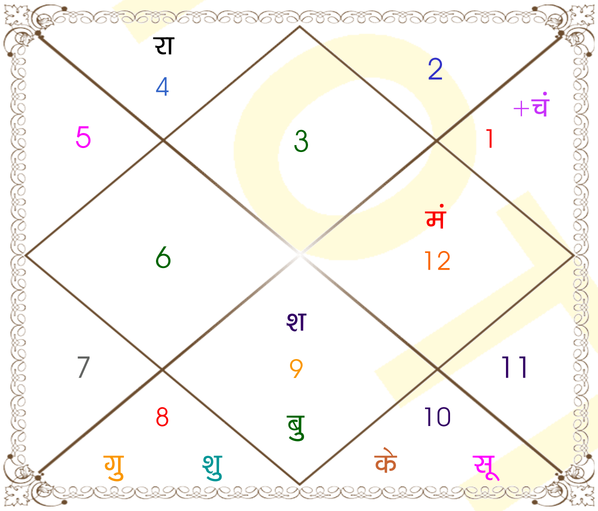

सुदर्शन चक्र

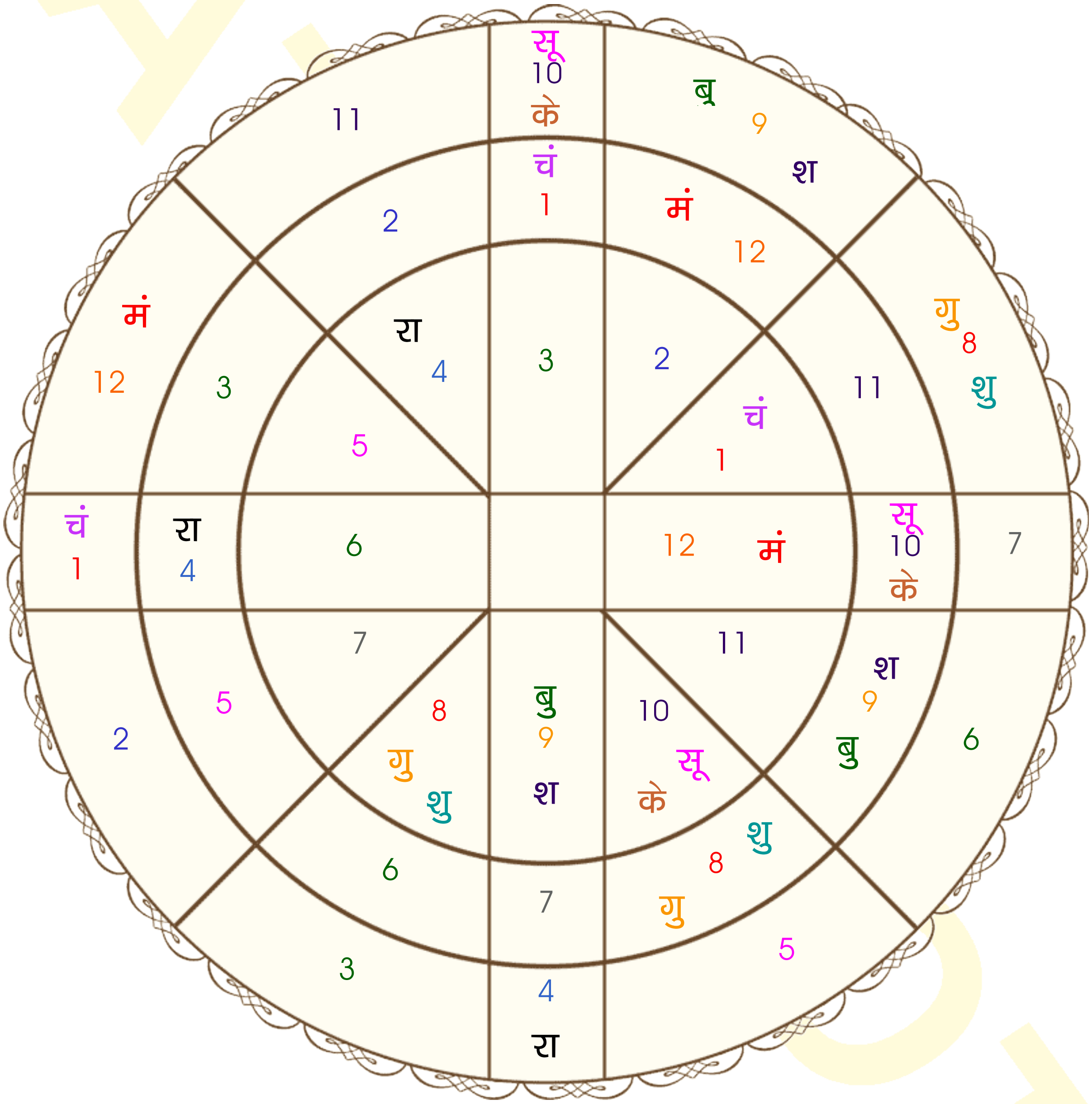

नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

RATNA JYOTI®
Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : सूर्य 5 वर्ष 6 मास 9 दिन

ग्रह								निरयण भाव						
ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.	भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मक	01:52:37	शनि	सूर्य	गुरु	बुध	1	मिथु	17:06:41	बुध	राहु	शुक्र	बुध
चंद्र		मेष	27:43:21	मंगल	सूर्य	चंद्र	गुरु	2	कर्क	10:50:10	चंद्र	शनि	सूर्य	बुध
मंगल		मीन	16:14:15	गुरु	शनि	गुरु	चंद्र	3	सिंह	06:59:06	सूर्य	केतु	राहु	शुक्र
बुध		धनु	23:15:39	गुरु	शुक्र	शनि	चंद्र	4	कन्या	07:30:30	बुध	सूर्य	केतु	गुरु
गुरु		वृश्चि	20:46:58	मंगल	बुध	शुक्र	शनि	5	तुला	11:41:13	शुक्र	राहु	शनि	चंद्र
शुक्र		वृश्चि	15:19:30	मंगल	शनि	गुरु	शनि	6	वृश्चि	15:48:07	मंगल	शनि	गुरु	शुक्र
शनि		धनु	19:04:27	गुरु	शुक्र	राहु	बुध	7	धनु	17:06:41	गुरु	शुक्र	चंद्र	शुक्र
राहु	व	कर्क	02:39:32	चंद्र	गुरु	राहु	शुक्र	8	मक	10:50:10	शनि	चंद्र	चंद्र	केतु
केतु	व	मक	02:39:32	शनि	सूर्य	गुरु	मंगल	9	कुंभ	06:59:06	शनि	राहु	राहु	गुरु
हर्ष		मेष	04:31:16	मंगल	केतु	चंद्र	केतु	10	मीन	07:30:30	गुरु	शनि	केतु	शुक्र
नेप		कुंभ	20:20:04	शनि	गुरु	गुरु	शनि	11	मेष	11:41:13	मंगल	केतु	बुध	बुध
प्लूटो		धनु	26:59:42	गुरु	सूर्य	सूर्य	शनि	12	वृष	15:48:07	शुक्र	चंद्र	शनि	शनि

के.पी. अयनांश : 24:01:02

फॉरच्युना : तुला 12:57:24

लग्न कुंडली

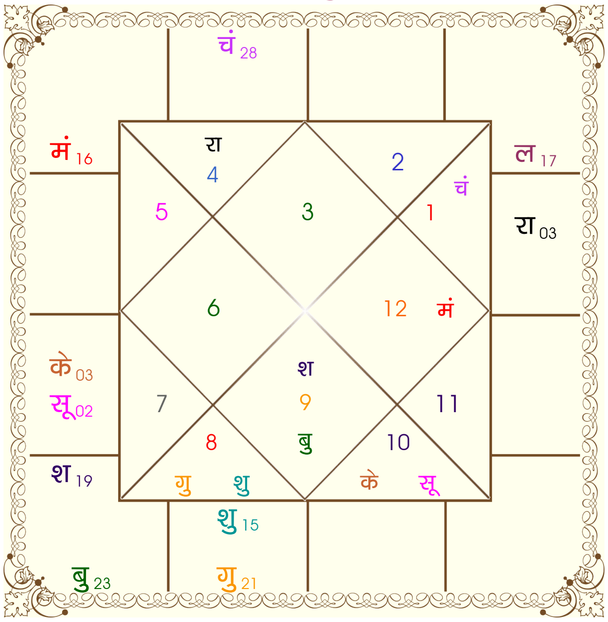

भाव कुंडली

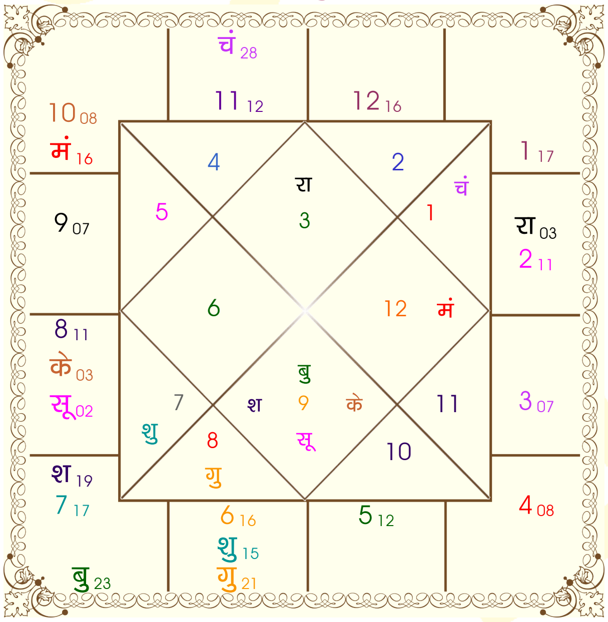

RATNA JYOTI®
Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	बुध- गुरु- राहु,
2	चंद्र-
3	सूर्य, चंद्र- केतु-
4	बुध- गुरु-
5	बुध+ शुक्र, शनि+
6	मंगल- गुरु, राहु,
7	सूर्य+ चंद्र, मंगल, बुध, गुरु+ शुक्र, शनि, राहु- केतु+
8	मंगल- शुक्र- शनि-
9	मंगल- शुक्र- शनि-
10	मंगल, गुरु- राहु-
11	चंद्र, मंगल-
12	बुध- शुक्र- शनि-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	3, 7+
चंद्र	2- 3- 7, 11,
मंगल	6- 7, 8- 9- 10, 11-
बुध	1- 4- 5+ 7, 12-
गुरु	1- 4- 6, 7+ 10-
शुक्र	5, 7, 8- 9- 12-
शनि	5+ 7, 8- 9- 12-
राहु	1, 6, 7- 10-
केतु	3- 7+

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	राहु
लग्न राशि स्वामी	बुध
राशि नक्षत्र स्वामी	सूर्य
राशि स्वामी	मंगल
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	शुक्र
राशि अन्तर स्वामी	चन्द्र

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

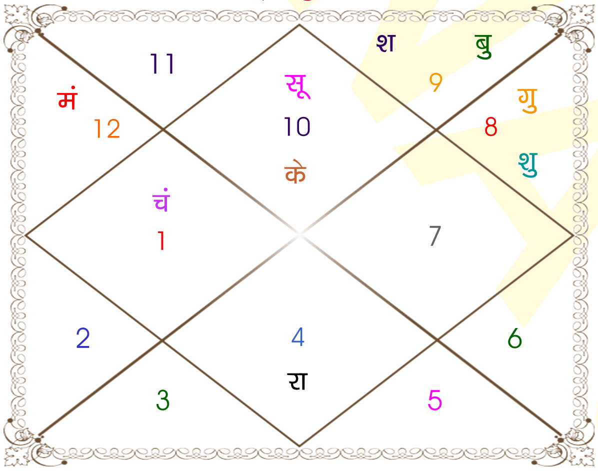

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

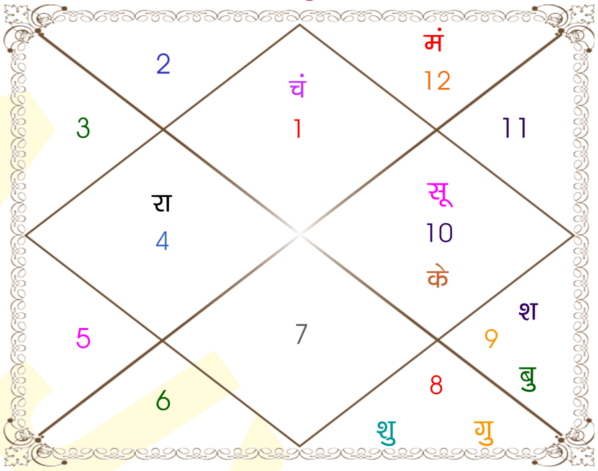

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

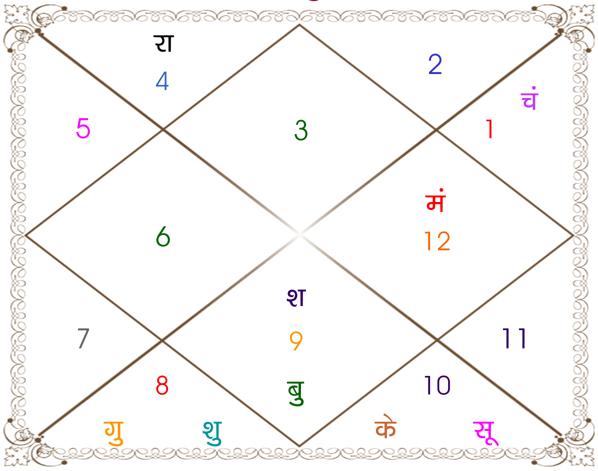

देह विचारः

होरा कुंडली

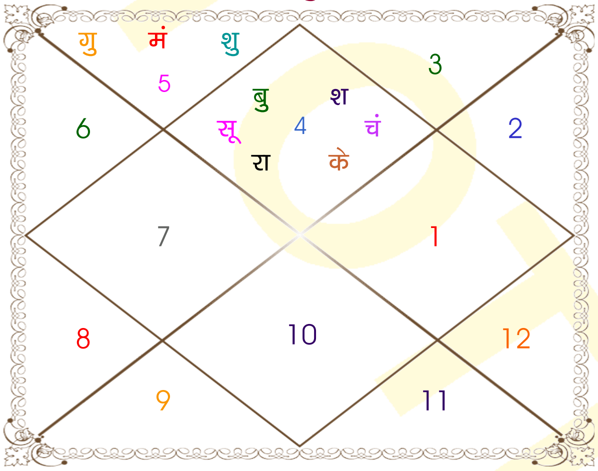

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

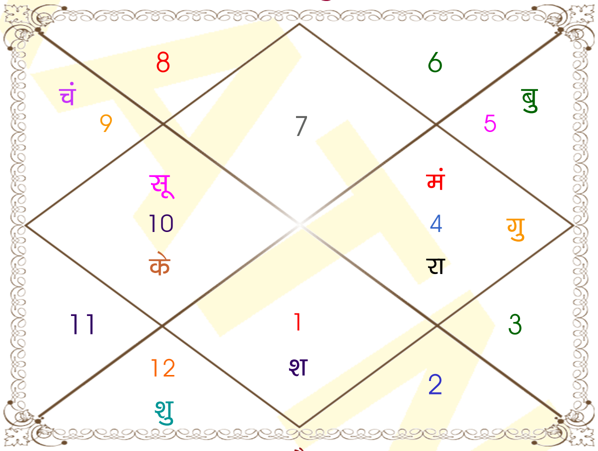

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

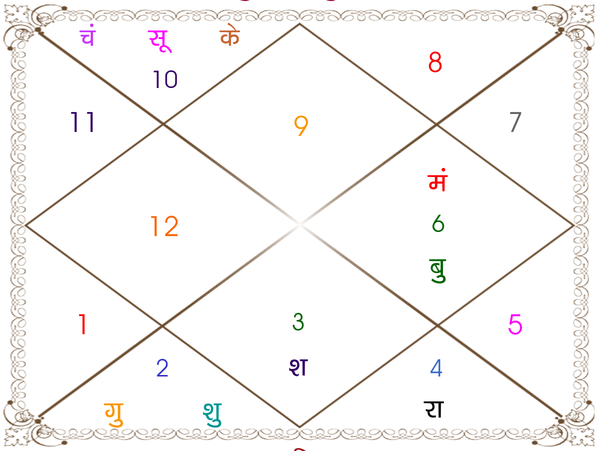

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

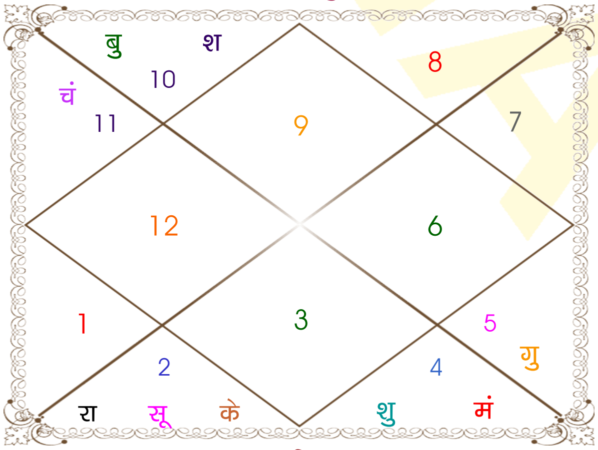

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

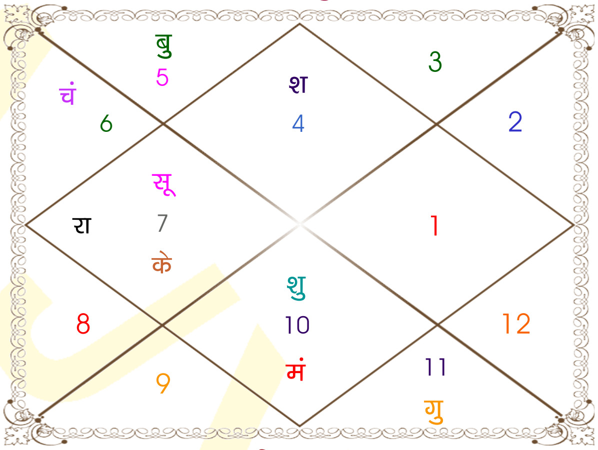

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

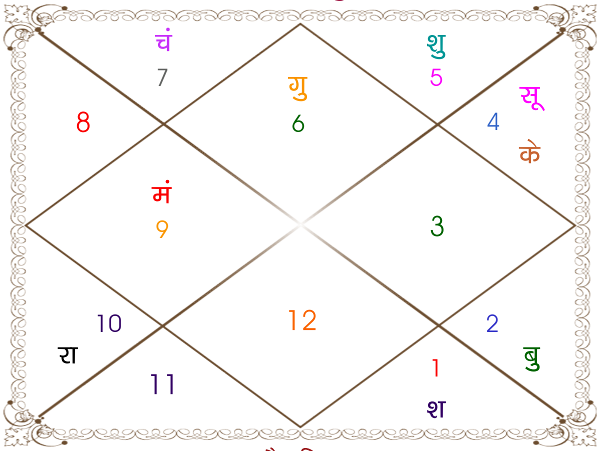

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

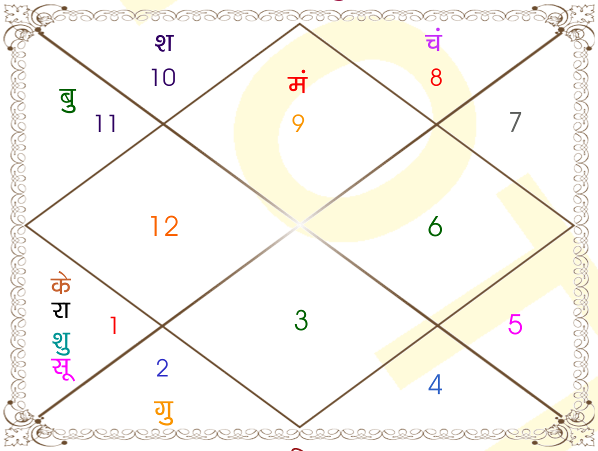

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

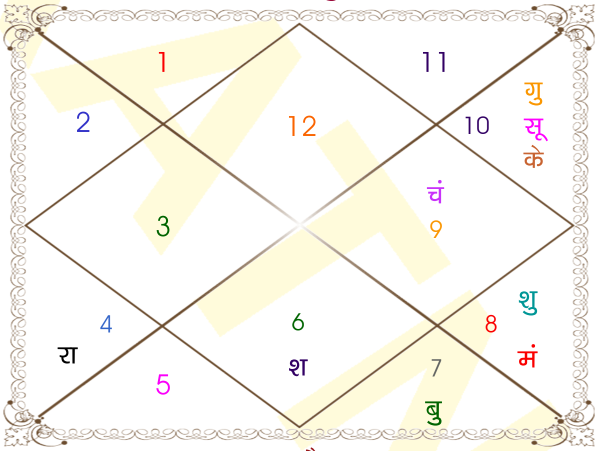

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

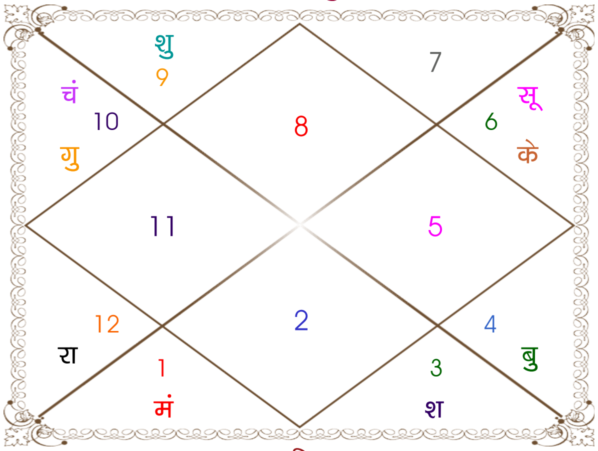

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

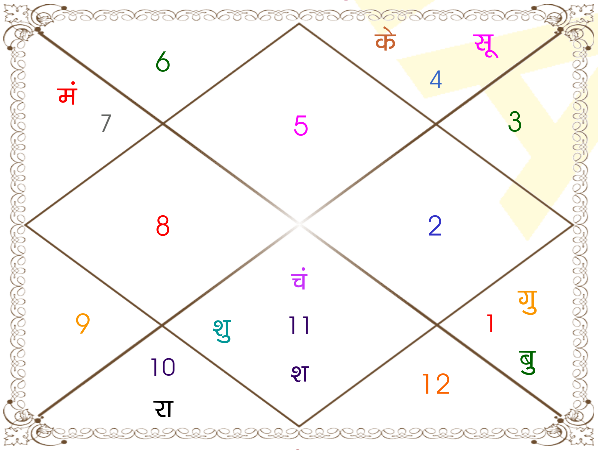

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

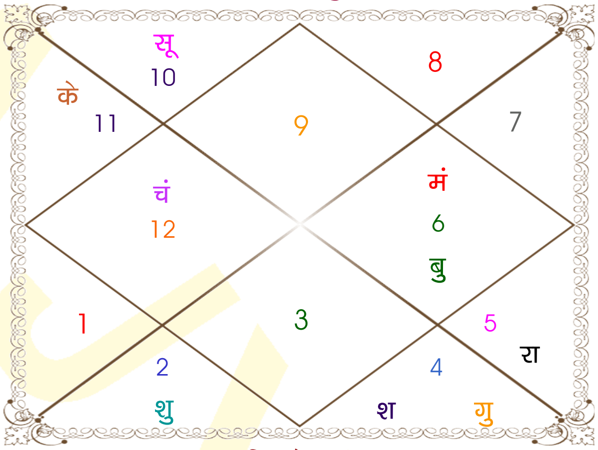

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

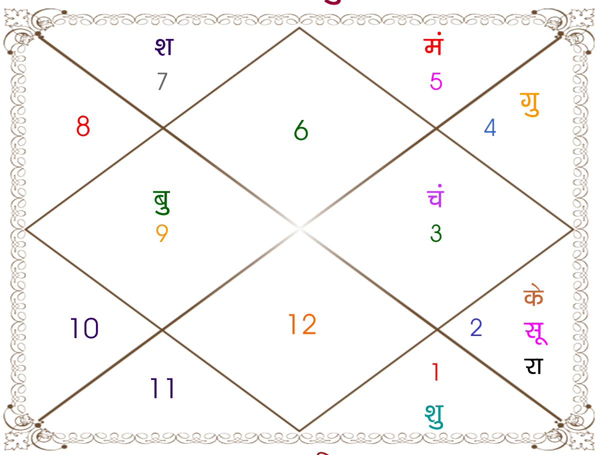

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

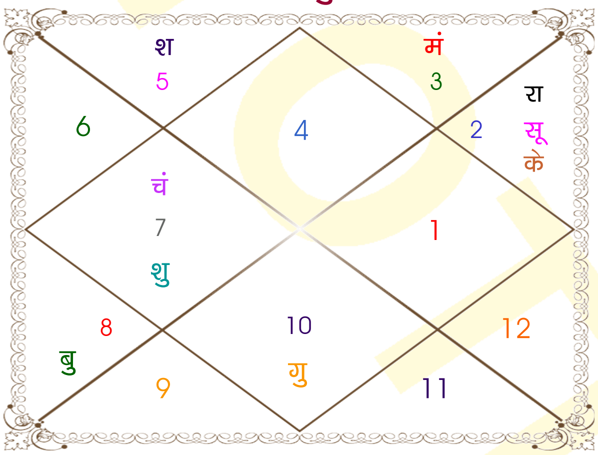

उपासनाज्ञानम्

RATNA JYOTI®
Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

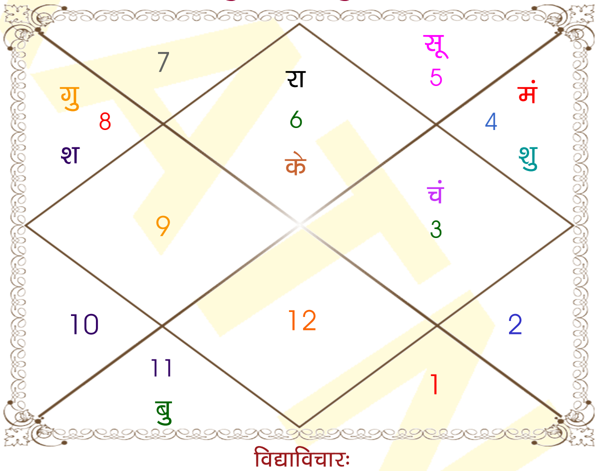

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

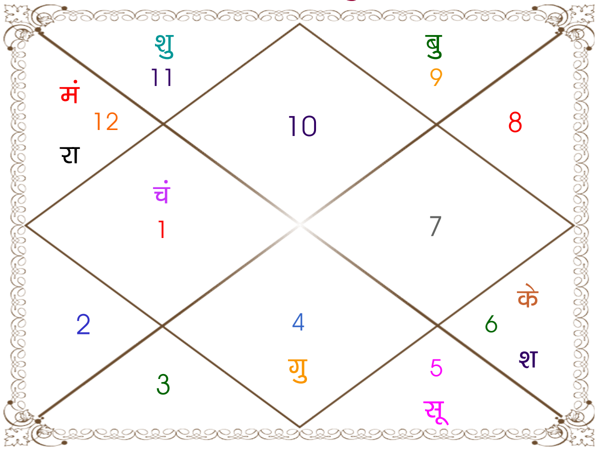

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

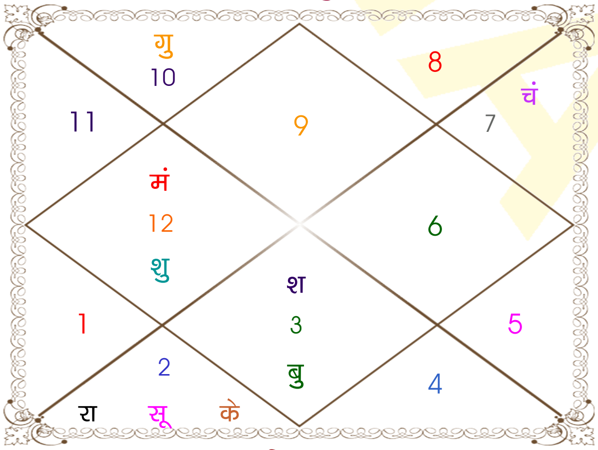

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

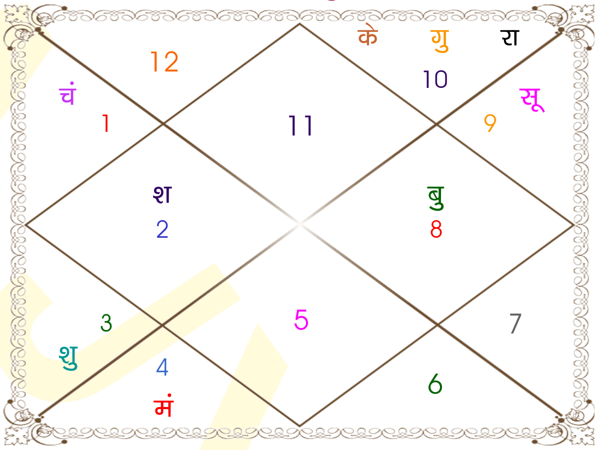

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

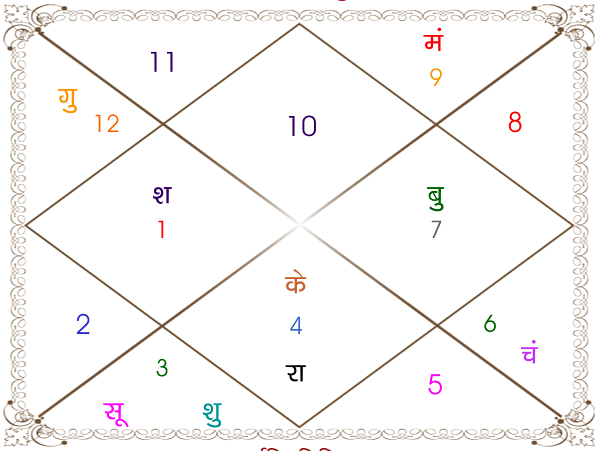

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

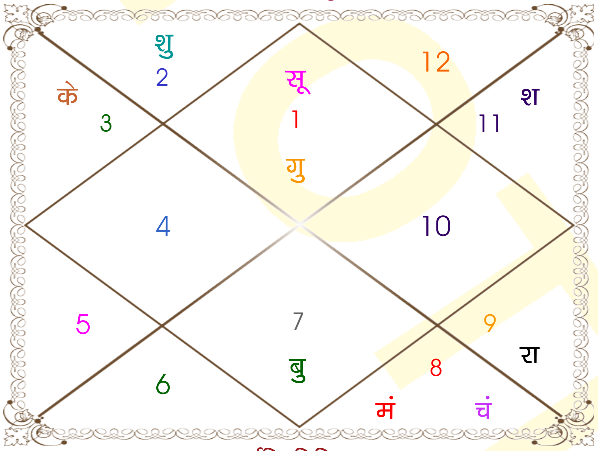

सर्वास्थितिविचारः

RATNA JYOTI

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	मिथु	मक	मेष	मीन	धनु	वृश्चि	वृश्चि	धनु	कर्क	मक
होरा	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	तुला	मक	धनु	कर्क	सिंह	कर्क	मीन	मेष	कर्क	मक
चतुर्थांश	धनु	मक	मक	कन्या	कन्या	वृष	वृष	मिथु	कर्क	मक
सप्तमांश	कन्या	कर्क	तुला	धनु	वृष	कन्या	सिंह	मेष	मक	कर्क
नवमांश	मीन	मक	धनु	वृश्चि	तुला	मक	वृश्चि	कन्या	कर्क	मक
दशमांश	वृश्चि	कन्या	मक	मेष	कर्क	मक	धनु	मिथु	मीन	कन्या
द्वादशांश	धनु	मक	मीन	कन्या	कन्या	कर्क	वृष	कर्क	सिंह	कुंभ
षोडशांश	कन्या	वृष	मिथु	सिंह	धनु	कर्क	मेष	तुला	वृष	वृष
विंशांश	कर्क	वृष	तुला	मिथु	वृश्चि	मक	तुला	सिंह	वृष	वृष
चतुर्विंशांश	कन्या	सिंह	मिथु	कर्क	कुंभ	वृश्चि	कर्क	वृश्चि	कन्या	कन्या
सप्तविंशांश	मक	सिंह	मेष	मीन	धनु	कर्क	कुंभ	कन्या	मीन	कन्या
त्रिंशांश	धनु	वृष	तुला	मीन	मिथु	मक	मीन	मिथु	वृष	वृष
खवेदांश	कुंभ	धनु	मेष	कर्क	वृश्चि	मक	मिथु	वृष	मक	मक
अक्षवेदांश	मक	मिथु	कन्या	धनु	तुला	मीन	मिथु	मेष	कर्क	कर्क
षष्ट्यंश	मेष	मेष	वृश्चि	वृश्चि	तुला	मेष	वृष	कुंभ	धनु	मिथु

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	0 ---	0 ---	1 ---	3 कुसुम
चन्द्र	1 ---	1 ---	1 ---	1 ---
मंगल	1 ---	1 ---	3 उत्तम	3 कुसुम
बुध	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम
गुरु	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	5 कन्दुक
शुक्र	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	6 केरल
शनि	0 ---	0 ---	2 पारिजात	2 भेदक
राहु	0 ---	0 ---	0 ---	1 ---
केतु	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	10.80	10.70	14.90	16.10	12.30	8.60	10.50	9.50	10.40
सप्तवर्ग	11.80	10.30	14.25	16.25	12.18	8.98	10.25	9.50	10.40
दशवर्ग	13.58	11.40	15.80	15.68	11.73	11.68	13.10	8.65	12.83
षोडशवर्ग	13.15	11.50	15.75	15.90	11.90	11.58	13.50	9.05	12.78

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र
मंगल	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र
शनि	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र
राहु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	सम	शत्रु	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	अतिमित्र	सम	सम	सम	---	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	अधिशत्रु	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	---	अतिमित्र	सम	अतिमित्र
शनि	सम	अधिशत्रु	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	---	सम	सम
राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	27	58	44	27	15	16	40
सप्तवर्गज बल	83	64	105	144	83	60	49
ओजयुग्मक बल	0	0	0	30	0	30	15
केन्द्र बल	30	30	60	60	15	15	60
द्रेष्काण बल	15	15	0	0	0	0	15
कुल स्थान बल	155	167	209	262	112	121	179
कुल दिग्बल	38	17	57	2	9	37	59
नतोन्नत बल	39	21	21	60	39	39	21
पक्ष बल	21	77	21	21	39	39	21
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	0	60
अब्द बल	0	0	0	0	15	0	0
मास बल	0	0	30	0	0	0	0
वार बल	0	0	0	45	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	0	0	60
अयन बल	6	6	35	59	1	2	59
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	66	105	108	185	153	79	222
कुल चेष्टाबल	0	0	31	1	14	35	5
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	9	-12	-23	6	5	1	6
कुल षट्बल	328	328	398	482	328	317	479
रुप षट्बल	5.5	5.5	6.6	8.0	5.5	5.3	8.0
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.1	0.9	1.3	1.1	0.8	1.0	1.6
संबंधित पद	4	6	2	3	7	5	1

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	15.38	47.42	36.61	5.21	14.26	23.80	13.80
कष्ट फल	40.98	6.13	21.77	43.96	45.73	33.02	32.99

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	482	328	328	482	317	398	328	479	479	328	398	317
भावदिग्बल	60	40	10	30	20	50	30	40	20	0	50	40
भावदृष्टि बल	71	62	80	13	-14	1	5	20	52	50	59	61
कुल भाव बल	613	430	418	525	323	450	363	539	551	377	507	418
रुप भाव बल	10.2	7.2	7.0	8.7	5.4	7.5	6.1	9.0	9.2	6.3	8.5	7.0
संबंधित पद	1	7	8	4	12	6	11	3	2	10	5	9

RATNAJYOTI

RATNA JYOTI®
Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	मिथु	17:06:41	--	--	आर्द्रा	4	6
गुलिक	गु	मेष	12:25:37	--	--	अश्विनी	4	1
काल	का	वृष	05:30:10	--	--	कृतिका	3	3
मृत्यु	मृ	मिथु	15:04:26	--	--	आर्द्रा	3	6
यमघंटक	यम	कुंभ	18:37:54	--	--	शतभिषा	4	24
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मक	23:04:27	--	--	श्रवण	4	22
धूम	धू	वृष	15:12:37	--	--	रोहिणी	2	4
व्यतिपात	व्य	कुंभ	14:47:23	--	--	शतभिषा	3	24
परिवेश	परि	सिंह	14:47:23	--	--	पू०फाल्गुनी	1	11
इन्द्रचाप	इ	वृश्चि	15:12:37	--	--	अनुराधा	4	17
उपकेतु	उप	धनु	01:52:37	--	--	मूल	1	19

प्राणपद	:	मक	17:44:37	कारकाँश लग्न	:	धनु	09:30:06
भाव लग्न	:	वृष	26:40:13	होरा लग्न	:	तुला	21:27:49
घटी लग्न	:	मक	05:50:37	वर्णद लग्न	:	मिथु	21:25:31

उपग्रह कुंडली

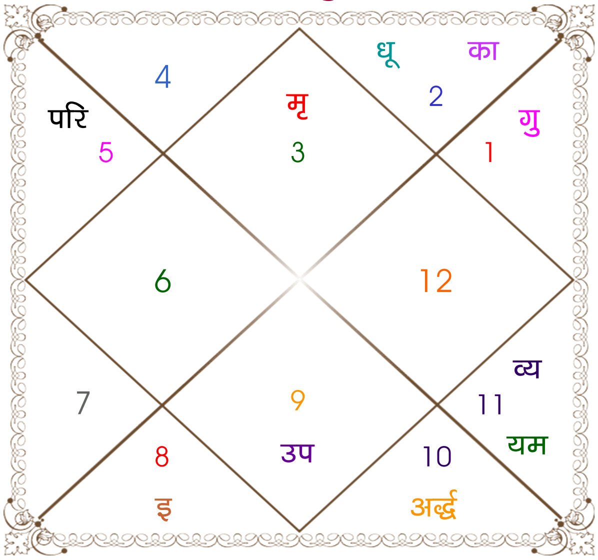

आरूढ़ कुंडली

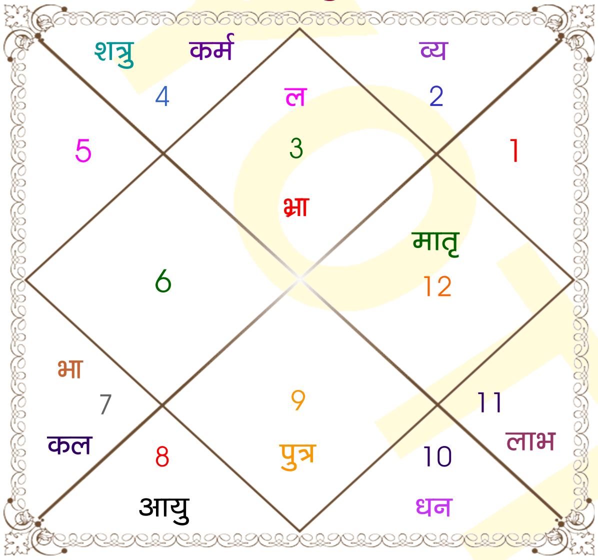

RATNA JYOTI

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
गुरु	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	4
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	3
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
चंद्र	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	4
लग्न	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
कुल	4	3	4	6	3	3	3	4	7	5	4	2	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	0	7
मंगल	1	1	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	7
सूर्य	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	6
शुक्र	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	7
बुध	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	0	6
लग्न	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
कुल	5	4	4	4	5	4	5	4	2	3	5	4	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	7
गुरु	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	5
शुक्र	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	4
बुध	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	5
कुल	4	5	2	6	1	3	5	6	2	2	1	2	39

बुध का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
गुरु	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
सूर्य	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	7
कुल	5	5	3	4	4	3	6	4	2	8	4	6	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	7
सूर्य	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	9
शुक्र	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	6
बुध	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	5
लग्न	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	9
कुल	4	6	4	5	5	6	4	3	3	5	6	5	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	7
गुरु	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	5
मंगल	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	6
सूर्य	1	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5
चंद्र	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	9
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	8
कुल	4	3	3	6	4	4	3	4	6	8	4	3	52

शनि का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	6
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
शुक्र	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	3
बुध	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	6
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	3
लग्न	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	6
कुल	1	2	4	2	5	3	2	3	4	5	5	3	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	6
गुरु	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
मंगल	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	5
सूर्य	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	6
शुक्र	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	8
बुध	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	7
चंद्र	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	4
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	3	3	3	5	3	4	6	4	4	7	3	4	49

RATNA JYOTI®
Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	5	3	2	3	4	5	5	3	1	2	4	2	39
गुरु	6	4	3	3	5	6	5	4	6	4	5	5	56
मंगल	5	2	6	1	3	5	6	2	2	1	2	4	39
सूर्य	6	3	3	3	4	7	5	4	2	4	3	4	48
शुक्र	4	3	4	6	8	4	3	4	3	3	6	4	52
बुध	4	3	6	4	2	8	4	6	5	5	3	4	54
चंद्र	5	4	4	4	5	4	5	4	2	3	5	4	49
लग्न	3	4	3	3	3	5	3	4	6	4	4	7	49
बिन्दु	38	26	31	27	34	44	36	31	27	26	32	34	386
रेखा	26	38	33	37	30	20	28	33	37	38	32	30	382

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	1	0	1	3	3	3	1	0	0	2	0	18
गुरु	1	0	0	0	0	2	2	1	1	0	2	2	11
मंगल	3	1	4	0	1	4	4	1	0	0	0	3	21
सूर्य	4	0	0	0	2	4	2	1	0	1	0	1	15
शुक्र	1	0	1	2	5	1	0	0	0	0	3	0	13
बुध	2	0	3	0	0	5	1	2	3	2	0	0	18
चंद्र	3	1	0	0	3	1	1	0	0	0	1	0	10
लग्न	0	0	0	0	0	1	0	1	3	0	1	4	10
रेखा	18	3	8	3	14	21	13	7	7	3	9	10	116

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	1	0	1	3	3	1	1	0	0	2	0	16
गुरु	1	0	0	0	0	2	2	1	1	0	2	2	11
मंगल	3	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	3	10
सूर्य	4	0	0	0	2	4	2	1	0	1	0	1	15
शुक्र	1	0	0	2	5	0	0	0	0	0	3	0	11
बुध	2	0	3	0	0	3	1	2	3	2	0	0	16
चंद्र	3	0	0	0	3	1	0	0	0	0	1	0	8
लग्न	0	0	0	0	0	1	0	1	3	0	1	4	10
रेखा	18	2	3	3	14	14	7	7	7	3	9	10	97

शोध्य पिंड

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	99	107	67	92	113	94	98	124
ग्रह पिंड	79	50	15	56	84	48	5	37
शोध्य पिंड	178	157	82	148	197	142	103	161

RATNAJYOTI

RATNA JYOTI®
Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

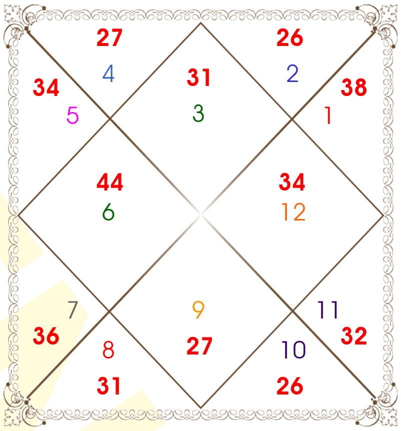

सूर्य का अष्टकवर्ग

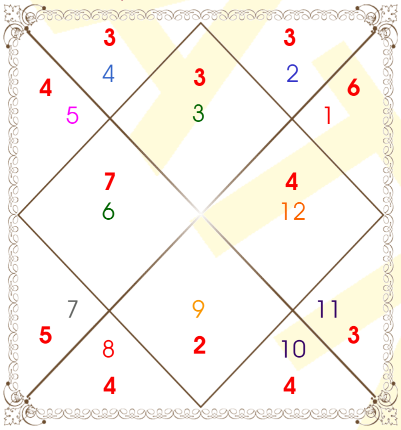

चंद्र का अष्टकवर्ग

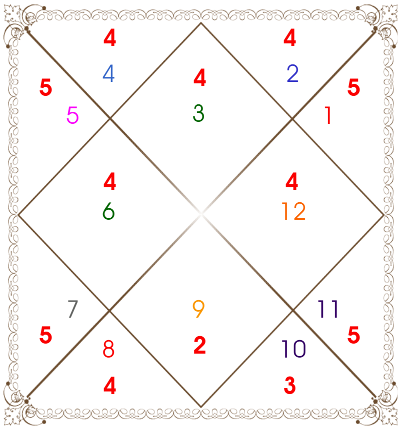

मंगल का अष्टकवर्ग

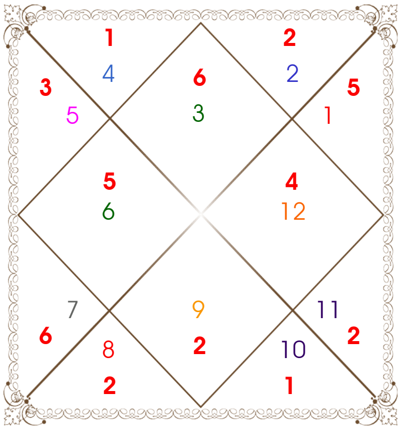

बुध का अष्टकवर्ग

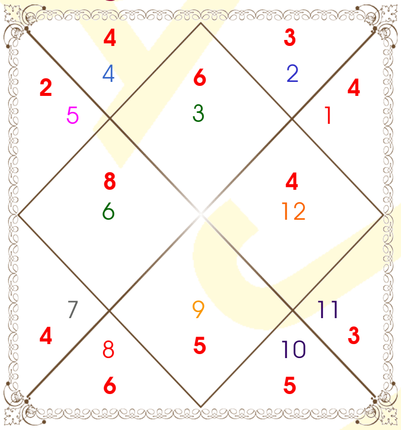

गुरु का अष्टकवर्ग

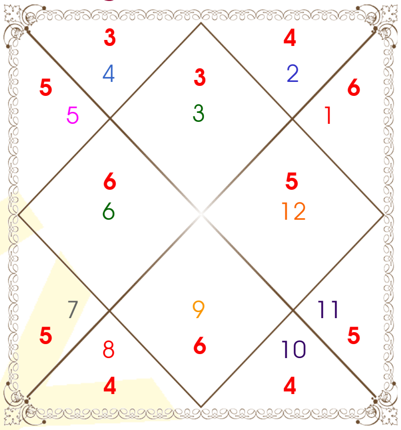

शुक्र का अष्टकवर्ग

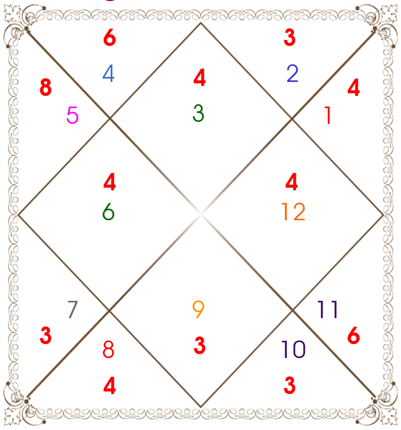

शनि का अष्टकवर्ग

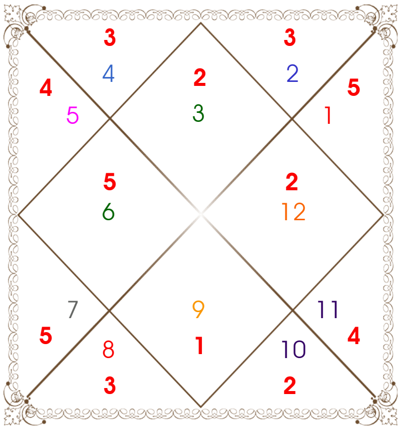

लग्न का अष्टकवर्ग

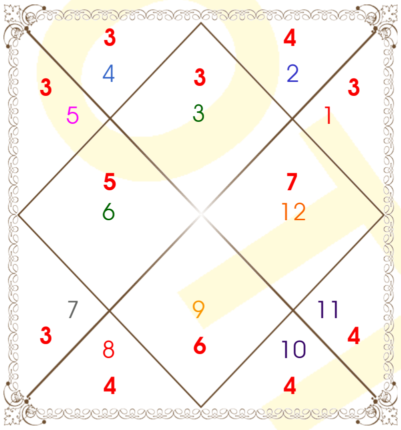

RATNA JYOTI®
Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

RATNA JYOTI

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 5 वर्ष 6 मास 9 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
16/01/2019		26/07/2024		27/07/2034		26/07/2041		27/07/2059	
26/07/2024		27/07/2034		26/07/2041		27/07/2059		27/07/2075	
	16/01/2019	चंद्र	27/05/2025	मंगल	23/12/2034	राहु	08/04/2044	गुरु	13/09/2061
चंद्र	15/05/2019	मंगल	26/12/2025	राहु	10/01/2036	गुरु	01/09/2046	शनि	26/03/2064
मंगल	20/09/2019	राहु	26/06/2027	गुरु	16/12/2036	शनि	08/07/2049	बुध	02/07/2066
राहु	13/08/2020	गुरु	25/10/2028	शनि	25/01/2038	बुध	26/01/2052	केतु	08/06/2067
गुरु	02/06/2021	शनि	27/05/2030	बुध	22/01/2039	केतु	12/02/2053	शुक्र	06/02/2070
शनि	15/05/2022	बुध	26/10/2031	केतु	20/06/2039	शुक्र	13/02/2056	सूर्य	25/11/2070
बुध	21/03/2023	केतु	26/05/2032	शुक्र	19/08/2040	सूर्य	07/01/2057	चंद्र	26/03/2072
केतु	27/07/2023	शुक्र	25/01/2034	सूर्य	25/12/2040	चंद्र	08/07/2058	मंगल	02/03/2073
शुक्र	26/07/2024	सूर्य	27/07/2034	चंद्र	26/07/2041	मंगल	27/07/2059	राहु	27/07/2075

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
27/07/2075		27/07/2094		28/07/2111		28/07/2118		28/07/2138	
27/07/2094		28/07/2111		28/07/2118		28/07/2138		00/00/0000	
शनि	30/07/2078	बुध	22/12/2096	केतु	24/12/2111	शुक्र	26/11/2121	सूर्य	14/11/2138
बुध	08/04/2081	केतु	19/12/2097	शुक्र	22/02/2113	सूर्य	26/11/2122	चंद्र	17/01/2139
केतु	18/05/2082	शुक्र	20/10/2100	सूर्य	30/06/2113	चंद्र	27/07/2124		00/00/0000
शुक्र	17/07/2085	सूर्य	27/08/2101	चंद्र	29/01/2114	मंगल	26/09/2125		00/00/0000
सूर्य	29/06/2086	चंद्र	26/01/2103	मंगल	27/06/2114	राहु	26/09/2128		00/00/0000
चंद्र	29/01/2088	मंगल	23/01/2104	राहु	16/07/2115	गुरु	28/05/2131		00/00/0000
मंगल	08/03/2089	राहु	12/08/2106	गुरु	21/06/2116	शनि	28/07/2134		00/00/0000
राहु	13/01/2092	गुरु	17/11/2108	शनि	30/07/2117	बुध	28/05/2137		00/00/0000
गुरु	27/07/2094	शनि	28/07/2111	बुध	28/07/2118	केतु	28/07/2138		00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 5 वर्ष 6 मा 6 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - चंद्र
16/01/2019
15/05/2019

	00/00/0000
	00/00/0000
	16/01/2019
गुरु	30/01/2019
शनि	28/02/2019
बुध	26/03/2019
केतु	05/04/2019
शुक्र	06/05/2019
सूर्य	15/05/2019

सूर्य - मंगल
15/05/2019
20/09/2019

मंगल	22/05/2019
राहु	10/06/2019
गुरु	28/06/2019
शनि	18/07/2019
बुध	05/08/2019
केतु	12/08/2019
शुक्र	03/09/2019
सूर्य	09/09/2019
चंद्र	20/09/2019

सूर्य - राहु
20/09/2019
13/08/2020

राहु	08/11/2019
गुरु	22/12/2019
शनि	12/02/2020
बुध	29/03/2020
केतु	18/04/2020
शुक्र	11/06/2020
सूर्य	28/06/2020
चंद्र	25/07/2020
मंगल	13/08/2020

सूर्य - गुरु
13/08/2020
02/06/2021

गुरु	21/09/2020
शनि	07/11/2020
बुध	18/12/2020
केतु	04/01/2021
शुक्र	22/02/2021
सूर्य	08/03/2021
चंद्र	02/04/2021
मंगल	19/04/2021
राहु	02/06/2021

सूर्य - शनि
02/06/2021
15/05/2022

शनि	27/07/2021
बुध	14/09/2021
केतु	04/10/2021
शुक्र	01/12/2021
सूर्य	18/12/2021
चंद्र	16/01/2022
मंगल	05/02/2022
राहु	29/03/2022
गुरु	15/05/2022

सूर्य - बुध
15/05/2022
21/03/2023

बुध	28/06/2022
केतु	16/07/2022
शुक्र	05/09/2022
सूर्य	21/09/2022
चंद्र	17/10/2022
मंगल	04/11/2022
राहु	21/12/2022
गुरु	31/01/2023
शनि	21/03/2023

सूर्य - केतु
21/03/2023
27/07/2023

केतु	29/03/2023
शुक्र	19/04/2023
सूर्य	25/04/2023
चंद्र	06/05/2023
मंगल	13/05/2023
राहु	02/06/2023
गुरु	19/06/2023
शनि	09/07/2023
बुध	27/07/2023

सूर्य - शुक्र
27/07/2023
26/07/2024

शुक्र	26/09/2023
सूर्य	14/10/2023
चंद्र	13/11/2023
मंगल	05/12/2023
राहु	29/01/2024
गुरु	17/03/2024
शनि	14/05/2024
बुध	05/07/2024
केतु	26/07/2024

चंद्र - चंद्र
26/07/2024
27/05/2025

चंद्र	21/08/2024
मंगल	07/09/2024
राहु	23/10/2024
गुरु	03/12/2024
शनि	20/01/2025
बुध	04/03/2025
केतु	22/03/2025
शुक्र	11/05/2025
सूर्य	27/05/2025

चंद्र - मंगल
27/05/2025
26/12/2025

मंगल	08/06/2025
राहु	10/07/2025
गुरु	07/08/2025
शनि	10/09/2025
बुध	10/10/2025
केतु	23/10/2025
शुक्र	27/11/2025
सूर्य	08/12/2025
चंद्र	26/12/2025

चंद्र - राहु
26/12/2025
26/06/2027

राहु	18/03/2026
गुरु	30/05/2026
शनि	25/08/2026
बुध	10/11/2026
केतु	12/12/2026
शुक्र	13/03/2027
सूर्य	10/04/2027
चंद्र	25/05/2027
मंगल	26/06/2027

चंद्र - गुरु
26/06/2027
25/10/2028

गुरु	30/08/2027
शनि	16/11/2027
बुध	23/01/2028
केतु	21/02/2028
शुक्र	12/05/2028
सूर्य	05/06/2028
चंद्र	16/07/2028
मंगल	13/08/2028
राहु	25/10/2028

चंद्र - शनि
25/10/2028
27/05/2030

शनि	25/01/2029
बुध	17/04/2029
केतु	21/05/2029
शुक्र	25/08/2029
सूर्य	23/09/2029
चंद्र	10/11/2029
मंगल	14/12/2029
राहु	11/03/2030
गुरु	27/05/2030

चंद्र - बुध
27/05/2030
26/10/2031

बुध	08/08/2030
केतु	07/09/2030
शुक्र	02/12/2030
सूर्य	28/12/2030
चंद्र	09/02/2031
मंगल	12/03/2031
राहु	28/05/2031
गुरु	05/08/2031
शनि	26/10/2031

चंद्र - केतु
26/10/2031
26/05/2032

केतु	08/11/2031
शुक्र	13/12/2031
सूर्य	24/12/2031
चंद्र	11/01/2032
मंगल	23/01/2032
राहु	24/02/2032
गुरु	23/03/2032
शनि	26/04/2032
बुध	26/05/2032

RATNA JYOTI®
Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
26/05/2032		25/01/2034		27/07/2034		23/12/2034		10/01/2036	
25/01/2034		27/07/2034		23/12/2034		10/01/2036		16/12/2036	
शुक्र	05/09/2032	सूर्य	03/02/2034	मंगल	04/08/2034	राहु	18/02/2035	गुरु	25/02/2036
सूर्य	05/10/2032	चंद्र	18/02/2034	राहु	27/08/2034	गुरु	10/04/2035	शनि	19/04/2036
चंद्र	25/11/2032	मंगल	01/03/2034	गुरु	16/09/2034	शनि	10/06/2035	बुध	06/06/2036
मंगल	30/12/2032	राहु	28/03/2034	शनि	09/10/2034	बुध	04/08/2035	केतु	26/06/2036
राहु	01/04/2033	गुरु	22/04/2034	बुध	30/10/2034	केतु	26/08/2035	शुक्र	22/08/2036
गुरु	21/06/2033	शनि	21/05/2034	केतु	08/11/2034	शुक्र	29/10/2035	सूर्य	08/09/2036
शनि	25/09/2033	बुध	16/06/2034	शुक्र	03/12/2034	सूर्य	17/11/2035	चंद्र	06/10/2036
बुध	21/12/2033	केतु	26/06/2034	सूर्य	10/12/2034	चंद्र	19/12/2035	मंगल	26/10/2036
केतु	25/01/2034	शुक्र	27/07/2034	चंद्र	23/12/2034	मंगल	10/01/2036	राहु	16/12/2036

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
16/12/2036		25/01/2038		22/01/2039		20/06/2039		19/08/2040	
25/01/2038		22/01/2039		20/06/2039		19/08/2040		25/12/2040	
शनि	18/02/2037	बुध	17/03/2038	केतु	31/01/2039	शुक्र	30/08/2039	सूर्य	26/08/2040
बुध	17/04/2037	केतु	07/04/2038	शुक्र	25/02/2039	सूर्य	21/09/2039	चंद्र	06/09/2040
केतु	10/05/2037	शुक्र	07/06/2038	सूर्य	04/03/2039	चंद्र	26/10/2039	मंगल	13/09/2040
शुक्र	17/07/2037	सूर्य	25/06/2038	चंद्र	17/03/2039	मंगल	20/11/2039	राहु	02/10/2040
सूर्य	06/08/2037	चंद्र	25/07/2038	मंगल	25/03/2039	राहु	23/01/2040	गुरु	19/10/2040
चंद्र	09/09/2037	मंगल	15/08/2038	राहु	17/04/2039	गुरु	20/03/2040	शनि	08/11/2040
मंगल	02/10/2037	राहु	09/10/2038	गुरु	07/05/2039	शनि	26/05/2040	बुध	27/11/2040
राहु	02/12/2037	गुरु	26/11/2038	शनि	30/05/2039	बुध	26/07/2040	केतु	04/12/2040
गुरु	25/01/2038	शनि	22/01/2039	बुध	20/06/2039	केतु	19/08/2040	शुक्र	25/12/2040

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
25/12/2040		26/07/2041		08/04/2044		01/09/2046		08/07/2049	
26/07/2041		08/04/2044		01/09/2046		08/07/2049		26/01/2052	
चंद्र	12/01/2041	राहु	21/12/2041	गुरु	02/08/2044	शनि	13/02/2047	बुध	17/11/2049
मंगल	25/01/2041	गुरु	02/05/2042	शनि	19/12/2044	बुध	10/07/2047	केतु	10/01/2050
राहु	25/02/2041	शनि	05/10/2042	बुध	22/04/2045	केतु	09/09/2047	शुक्र	15/06/2050
गुरु	26/03/2041	बुध	22/02/2043	केतु	13/06/2045	शुक्र	01/03/2048	सूर्य	31/07/2050
शनि	29/04/2041	केतु	20/04/2043	शुक्र	06/11/2045	सूर्य	22/04/2048	चंद्र	17/10/2050
बुध	29/05/2041	शुक्र	02/10/2043	सूर्य	19/12/2045	चंद्र	17/07/2048	मंगल	10/12/2050
केतु	10/06/2041	सूर्य	20/11/2043	चंद्र	03/03/2046	मंगल	16/09/2048	राहु	29/04/2051
शुक्र	16/07/2041	चंद्र	10/02/2044	मंगल	23/04/2046	राहु	19/02/2049	गुरु	31/08/2051
सूर्य	26/07/2041	मंगल	08/04/2044	राहु	01/09/2046	गुरु	08/07/2049	शनि	26/01/2052

RATNA JYOTI

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
26/01/2052		12/02/2053		13/02/2056		07/01/2057		08/07/2058	
12/02/2053		13/02/2056		07/01/2057		08/07/2058		27/07/2059	
केतु	17/02/2052	शुक्र	14/08/2053	सूर्य	29/02/2056	चंद्र	21/02/2057	मंगल	31/07/2058
शुक्र	21/04/2052	सूर्य	07/10/2053	चंद्र	28/03/2056	मंगल	25/03/2057	राहु	26/09/2058
सूर्य	10/05/2052	चंद्र	07/01/2054	मंगल	16/04/2056	राहु	15/06/2057	गुरु	16/11/2058
चंद्र	11/06/2052	मंगल	12/03/2054	राहु	04/06/2056	गुरु	27/08/2057	शनि	16/01/2059
मंगल	03/07/2052	राहु	23/08/2054	गुरु	18/07/2056	शनि	22/11/2057	बुध	11/03/2059
राहु	30/08/2052	गुरु	16/01/2055	शनि	08/09/2056	बुध	08/02/2058	केतु	03/04/2059
गुरु	20/10/2052	शनि	09/07/2055	बुध	25/10/2056	केतु	12/03/2058	शुक्र	06/06/2059
शनि	20/12/2052	बुध	11/12/2055	केतु	13/11/2056	शुक्र	11/06/2058	सूर्य	25/06/2059
बुध	12/02/2053	केतु	13/02/2056	शुक्र	07/01/2057	सूर्य	08/07/2058	चंद्र	27/07/2059

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
27/07/2059		13/09/2061		26/03/2064		02/07/2066		08/06/2067	
13/09/2061		26/03/2064		02/07/2066		08/06/2067		06/02/2070	
गुरु	08/11/2059	शनि	07/02/2062	बुध	22/07/2064	केतु	22/07/2066	शुक्र	18/11/2067
शनि	10/03/2060	बुध	18/06/2062	केतु	08/09/2064	शुक्र	17/09/2066	सूर्य	05/01/2068
बुध	29/06/2060	केतु	11/08/2062	शुक्र	24/01/2065	सूर्य	04/10/2066	चंद्र	26/03/2068
केतु	13/08/2060	शुक्र	12/01/2063	सूर्य	06/03/2065	चंद्र	01/11/2066	मंगल	22/05/2068
शुक्र	21/12/2060	सूर्य	27/02/2063	चंद्र	14/05/2065	मंगल	21/11/2066	राहु	15/10/2068
सूर्य	29/01/2061	चंद्र	15/05/2063	मंगल	02/07/2065	राहु	11/01/2067	गुरु	22/02/2069
चंद्र	04/04/2061	मंगल	08/07/2063	राहु	03/11/2065	गुरु	26/02/2067	शनि	26/07/2069
मंगल	19/05/2061	राहु	24/11/2063	गुरु	21/02/2066	शनि	21/04/2067	बुध	11/12/2069
राहु	13/09/2061	गुरु	26/03/2064	शनि	02/07/2066	बुध	08/06/2067	केतु	06/02/2070

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
06/02/2070		25/11/2070		26/03/2072		02/03/2073		27/07/2075	
25/11/2070		26/03/2072		02/03/2073		27/07/2075		30/07/2078	
सूर्य	21/02/2070	चंद्र	05/01/2071	मंगल	15/04/2072	राहु	12/07/2073	शनि	17/01/2076
चंद्र	17/03/2070	मंगल	02/02/2071	राहु	05/06/2072	गुरु	06/11/2073	बुध	21/06/2076
मंगल	03/04/2070	राहु	16/04/2071	गुरु	21/07/2072	शनि	24/03/2074	केतु	24/08/2076
राहु	17/05/2070	गुरु	20/06/2071	शनि	13/09/2072	बुध	27/07/2074	शुक्र	23/02/2077
गुरु	25/06/2070	शनि	05/09/2071	बुध	31/10/2072	केतु	16/09/2074	सूर्य	19/04/2077
शनि	10/08/2070	बुध	13/11/2071	केतु	20/11/2072	शुक्र	09/02/2075	चंद्र	19/07/2077
बुध	21/09/2070	केतु	12/12/2071	शुक्र	16/01/2073	सूर्य	25/03/2075	मंगल	21/09/2077
केतु	08/10/2070	शुक्र	02/03/2072	सूर्य	02/02/2073	चंद्र	06/06/2075	राहु	05/03/2078
शुक्र	25/11/2070	सूर्य	26/03/2072	चंद्र	02/03/2073	मंगल	27/07/2075	गुरु	30/07/2078

RATNA JYOTI

RATNA JYOTI®
Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - बुध	शनि - केतु	शनि - शुक्र	शनि - सूर्य	शनि - चंद्र
30/07/2078	08/04/2081	18/05/2082	17/07/2085	29/06/2086
08/04/2081	18/05/2082	17/07/2085	29/06/2086	29/01/2088
बुध 16/12/2078	केतु 01/05/2081	शुक्र 26/11/2082	सूर्य 04/08/2085	चंद्र 16/08/2086
केतु 11/02/2079	शुक्र 08/07/2081	सूर्य 23/01/2083	चंद्र 02/09/2085	मंगल 19/09/2086
शुक्र 25/07/2079	सूर्य 28/07/2081	चंद्र 30/04/2083	मंगल 22/09/2085	राहु 15/12/2086
सूर्य 12/09/2079	चंद्र 31/08/2081	मंगल 06/07/2083	राहु 13/11/2085	गुरु 02/03/2087
चंद्र 03/12/2079	मंगल 23/09/2081	राहु 27/12/2083	गुरु 29/12/2085	शनि 02/06/2087
मंगल 30/01/2080	राहु 23/11/2081	गुरु 29/05/2084	शनि 22/02/2086	बुध 23/08/2087
राहु 25/06/2080	गुरु 16/01/2082	शनि 28/11/2084	बुध 12/04/2086	केतु 25/09/2087
गुरु 03/11/2080	शनि 21/03/2082	बुध 11/05/2085	केतु 02/05/2086	शुक्र 31/12/2087
शनि 08/04/2081	बुध 18/05/2082	केतु 17/07/2085	शुक्र 29/06/2086	सूर्य 29/01/2088

शनि - मंगल	शनि - राहु	शनि - गुरु	बुध - बुध	बुध - केतु
29/01/2088	08/03/2089	13/01/2092	27/07/2094	22/12/2096
08/03/2089	13/01/2092	27/07/2094	22/12/2096	19/12/2097
मंगल 21/02/2088	राहु 12/08/2089	गुरु 16/05/2092	बुध 28/11/2094	केतु 12/01/2097
राहु 22/04/2088	गुरु 28/12/2089	शनि 09/10/2092	केतु 19/01/2095	शुक्र 14/03/2097
गुरु 15/06/2088	शनि 11/06/2090	बुध 17/02/2093	शुक्र 14/06/2095	सूर्य 01/04/2097
शनि 18/08/2088	बुध 06/11/2090	केतु 12/04/2093	सूर्य 28/07/2095	चंद्र 01/05/2097
बुध 14/10/2088	केतु 05/01/2091	शुक्र 14/09/2093	चंद्र 09/10/2095	मंगल 22/05/2097
केतु 07/11/2088	शुक्र 28/06/2091	सूर्य 30/10/2093	मंगल 30/11/2095	राहु 16/07/2097
शुक्र 13/01/2089	सूर्य 19/08/2091	चंद्र 15/01/2094	राहु 10/04/2096	गुरु 02/09/2097
सूर्य 03/02/2089	चंद्र 14/11/2091	मंगल 10/03/2094	गुरु 05/08/2096	शनि 29/10/2097
चंद्र 08/03/2089	मंगल 13/01/2092	राहु 27/07/2094	शनि 22/12/2096	बुध 19/12/2097

बुध - शुक्र	बुध - सूर्य	बुध - चंद्र	बुध - मंगल	बुध - राहु
19/12/2097	20/10/2100	27/08/2101	26/01/2103	23/01/2104
20/10/2100	27/08/2101	26/01/2103	23/01/2104	12/08/2106
शुक्र 10/06/2098	सूर्य 05/11/2100	चंद्र 09/10/2101	मंगल 16/02/2103	राहु 11/06/2104
सूर्य 01/08/2098	चंद्र 01/12/2100	मंगल 08/11/2101	राहु 12/04/2103	गुरु 13/10/2104
चंद्र 26/10/2098	मंगल 19/12/2100	राहु 25/01/2102	गुरु 30/05/2103	शनि 10/03/2105
मंगल 25/12/2098	राहु 03/02/2101	गुरु 04/04/2102	शनि 26/07/2103	बुध 20/07/2105
राहु 30/05/2099	गुरु 17/03/2101	शनि 25/06/2102	बुध 16/09/2103	केतु 12/09/2105
गुरु 15/10/2099	शनि 05/05/2101	बुध 06/09/2102	केतु 07/10/2103	शुक्र 14/02/2106
शनि 27/03/2100	बुध 18/06/2101	केतु 06/10/2102	शुक्र 06/12/2103	सूर्य 02/04/2106
बुध 21/08/2100	केतु 06/07/2101	शुक्र 31/12/2102	सूर्य 24/12/2103	चंद्र 19/06/2106
केतु 20/10/2100	शुक्र 27/08/2101	सूर्य 26/01/2103	चंद्र 23/01/2104	मंगल 12/08/2106

RATNA JYOTI

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
12/08/2106	17/11/2108	17/11/2108	28/07/2111	28/07/2111	24/12/2111	24/12/2111	22/02/2113	22/02/2113	30/06/2113
गुरु	30/11/2106	शनि	21/04/2109	केतु	06/08/2111	शुक्र	04/03/2112	सूर्य	01/03/2113
शनि	10/04/2107	बुध	08/09/2109	शुक्र	30/08/2111	सूर्य	25/03/2112	चंद्र	11/03/2113
बुध	06/08/2107	केतु	04/11/2109	सूर्य	07/09/2111	चंद्र	30/04/2112	मंगल	19/03/2113
केतु	23/09/2107	शुक्र	17/04/2110	चंद्र	19/09/2111	मंगल	25/05/2112	राहु	07/04/2113
शुक्र	08/02/2108	सूर्य	05/06/2110	मंगल	28/09/2111	राहु	28/07/2112	गुरु	24/04/2113
सूर्य	20/03/2108	चंद्र	26/08/2110	राहु	20/10/2111	गुरु	22/09/2112	शनि	14/05/2113
चंद्र	28/05/2108	मंगल	22/10/2110	गुरु	09/11/2111	शनि	29/11/2112	बुध	01/06/2113
मंगल	16/07/2108	राहु	19/03/2111	शनि	03/12/2111	बुध	28/01/2113	केतु	09/06/2113
राहु	17/11/2108	गुरु	28/07/2111	बुध	24/12/2111	केतु	22/02/2113	शुक्र	30/06/2113

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि	
30/06/2113	29/01/2114	29/01/2114	27/06/2114	27/06/2114	16/07/2115	16/07/2115	21/06/2116	21/06/2116	30/07/2117
चंद्र	18/07/2113	मंगल	07/02/2114	राहु	24/08/2114	गुरु	30/08/2115	शनि	24/08/2116
मंगल	30/07/2113	राहु	01/03/2114	गुरु	14/10/2114	शनि	23/10/2115	बुध	20/10/2116
राहु	31/08/2113	गुरु	21/03/2114	शनि	14/12/2114	बुध	10/12/2115	केतु	13/11/2116
गुरु	29/09/2113	शनि	14/04/2114	बुध	06/02/2115	केतु	30/12/2115	शुक्र	19/01/2117
शनि	01/11/2113	बुध	05/05/2114	केतु	28/02/2115	शुक्र	25/02/2116	सूर्य	08/02/2117
बुध	01/12/2113	केतु	13/05/2114	शुक्र	03/05/2115	सूर्य	13/03/2116	चंद्र	14/03/2117
केतु	14/12/2113	शुक्र	07/06/2114	सूर्य	22/05/2115	चंद्र	11/04/2116	मंगल	07/04/2117
शुक्र	18/01/2114	सूर्य	15/06/2114	चंद्र	23/06/2115	मंगल	30/04/2116	राहु	06/06/2117
सूर्य	29/01/2114	चंद्र	27/06/2114	मंगल	16/07/2115	राहु	21/06/2116	गुरु	30/07/2117

केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
30/07/2117	28/07/2118	28/07/2118	26/11/2121	26/11/2121	26/11/2122	26/11/2122	27/07/2124	27/07/2124	26/09/2125
बुध	20/09/2117	शुक्र	16/02/2119	सूर्य	14/12/2121	चंद्र	16/01/2123	मंगल	21/08/2124
केतु	11/10/2117	सूर्य	17/04/2119	चंद्र	14/01/2122	मंगल	21/02/2123	राहु	24/10/2124
शुक्र	10/12/2117	चंद्र	28/07/2119	मंगल	04/02/2122	राहु	23/05/2123	गुरु	20/12/2124
सूर्य	28/12/2117	मंगल	07/10/2119	राहु	31/03/2122	गुरु	12/08/2123	शनि	25/02/2125
चंद्र	28/01/2118	राहु	07/04/2120	गुरु	19/05/2122	शनि	17/11/2123	बुध	27/04/2125
मंगल	18/02/2118	गुरु	16/09/2120	शनि	15/07/2122	बुध	11/02/2124	केतु	21/05/2125
राहु	13/04/2118	शनि	28/03/2121	बुध	05/09/2122	केतु	17/03/2124	शुक्र	31/07/2125
गुरु	31/05/2118	बुध	16/09/2121	केतु	27/09/2122	शुक्र	27/06/2124	सूर्य	22/08/2125
शनि	28/07/2118	केतु	26/11/2121	शुक्र	26/11/2122	सूर्य	27/07/2124	चंद्र	26/09/2125

RATNA JYOTI®
Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

सूर्य - चंद्र - बुध	
28/02/2019 06:04	
26/03/2019 02:59	
बुध	03/03/2019 22:02
केतु	05/03/2019 10:15
शुक्र	09/03/2019 17:44
सूर्य	11/03/2019 00:47
चंद्र	13/03/2019 04:31
मंगल	14/03/2019 16:45
राहु	18/03/2019 13:53
गुरु	22/03/2019 00:40
शनि	26/03/2019 02:59

सूर्य - चंद्र - केतु	
26/03/2019 02:59	
05/04/2019 18:40	
केतु	26/03/2019 17:54
शुक्र	28/03/2019 12:31
सूर्य	29/03/2019 01:18
चंद्र	29/03/2019 22:36
मंगल	30/03/2019 13:31
राहु	01/04/2019 03:52
गुरु	02/04/2019 13:58
शनि	04/04/2019 06:26
बुध	05/04/2019 18:40

सूर्य - चंद्र - शुक्र	
05/04/2019 18:40	
06/05/2019 05:10	
शुक्र	10/04/2019 20:25
सूर्य	12/04/2019 08:56
चंद्र	14/04/2019 21:49
मंगल	16/04/2019 16:25
राहु	21/04/2019 06:00
गुरु	25/04/2019 07:24
शनि	30/04/2019 03:04
बुध	04/05/2019 10:33
केतु	06/05/2019 05:10

सूर्य - चंद्र - सूर्य	
06/05/2019 05:10	
15/05/2019 08:19	
सूर्य	06/05/2019 16:07
चंद्र	07/05/2019 10:23
मंगल	07/05/2019 23:10
राहु	09/05/2019 08:02
गुरु	10/05/2019 13:16
शनि	11/05/2019 23:57
बुध	13/05/2019 07:00
केतु	13/05/2019 19:47
शुक्र	15/05/2019 08:19

सूर्य - मंगल - मंगल	
15/05/2019 08:19	
22/05/2019 19:17	
मंगल	15/05/2019 18:45
राहु	16/05/2019 21:36
गुरु	17/05/2019 21:28
शनि	19/05/2019 01:48
बुध	20/05/2019 03:09
केतु	20/05/2019 13:36
शुक्र	21/05/2019 19:25
सूर्य	22/05/2019 04:22
चंद्र	22/05/2019 19:17

सूर्य - मंगल - राहु	
22/05/2019 19:17	
10/06/2019 23:30	
राहु	25/05/2019 16:19
गुरु	28/05/2019 05:41
शनि	31/05/2019 06:33
बुध	02/06/2019 23:45
केतु	04/06/2019 02:35
शुक्र	07/06/2019 07:18
सूर्य	08/06/2019 06:18
चंद्र	09/06/2019 20:39
मंगल	10/06/2019 23:30

सूर्य - मंगल - गुरु	
10/06/2019 23:30	
28/06/2019 00:35	
गुरु	13/06/2019 06:03
शनि	15/06/2019 22:49
बुध	18/06/2019 08:46
केतु	19/06/2019 08:38
शुक्र	22/06/2019 04:49
सूर्य	23/06/2019 01:16
चंद्र	24/06/2019 11:21
मंगल	25/06/2019 11:13
राहु	28/06/2019 00:35

सूर्य - मंगल - शनि	
28/06/2019 00:35	
18/07/2019 06:22	
शनि	01/07/2019 05:30
बुध	04/07/2019 02:19
केतु	05/07/2019 06:39
शुक्र	08/07/2019 15:37
सूर्य	09/07/2019 15:54
चंद्र	11/07/2019 08:23
मंगल	12/07/2019 12:43
राहु	15/07/2019 13:35
गुरु	18/07/2019 06:22

सूर्य - मंगल - बुध	
18/07/2019 06:22	
05/08/2019 09:01	
बुध	20/07/2019 19:56
केतु	21/07/2019 21:17
शुक्र	24/07/2019 21:44
सूर्य	25/07/2019 19:28
चंद्र	27/07/2019 07:41
मंगल	28/07/2019 09:02
राहु	31/07/2019 02:14
गुरु	02/08/2019 12:11
शनि	05/08/2019 09:01

सूर्य - मंगल - केतु	
05/08/2019 09:01	
12/08/2019 19:59	
केतु	05/08/2019 19:27
शुक्र	07/08/2019 01:17
सूर्य	07/08/2019 10:14
चंद्र	08/08/2019 01:08
मंगल	08/08/2019 11:35
राहु	09/08/2019 14:26
गुरु	10/08/2019 14:17
शनि	11/08/2019 18:38
बुध	12/08/2019 19:59

सूर्य - मंगल - शुक्र	
12/08/2019 19:59	
03/09/2019 03:20	
शुक्र	16/08/2019 09:12
सूर्य	17/08/2019 10:46
चंद्र	19/08/2019 05:23
मंगल	20/08/2019 11:13
राहु	23/08/2019 15:55
गुरु	26/08/2019 12:06
शनि	29/08/2019 21:04
बुध	01/09/2019 21:30
केतु	03/09/2019 03:20

सूर्य - मंगल - सूर्य	
03/09/2019 03:20	
09/09/2019 12:44	
सूर्य	03/09/2019 11:00
चंद्र	03/09/2019 23:47
मंगल	04/09/2019 08:44
राहु	05/09/2019 07:45
गुरु	06/09/2019 04:12
शनि	07/09/2019 04:29
बुध	08/09/2019 02:13
केतु	08/09/2019 11:10
शुक्र	09/09/2019 12:44

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

सूर्य - मंगल - चंद्र
09/09/2019 12:44
20/09/2019 04:25

चंद्र	10/09/2019 10:03
मंगल	11/09/2019 00:57
राहु	12/09/2019 15:19
गुरु	14/09/2019 01:24
शनि	15/09/2019 17:53
बुध	17/09/2019 06:06
केतु	17/09/2019 21:01
शुक्र	19/09/2019 15:38
सूर्य	20/09/2019 04:25

सूर्य - राहु - राहु
20/09/2019 04:25
08/11/2019 11:49

राहु	27/09/2019 13:55
गुरु	04/10/2019 03:43
शनि	11/10/2019 23:05
बुध	18/10/2019 22:44
केतु	21/10/2019 19:46
शुक्र	30/10/2019 01:00
सूर्य	01/11/2019 12:10
चंद्र	05/11/2019 14:47
मंगल	08/11/2019 11:49

सूर्य - राहु - गुरु
08/11/2019 11:49
22/12/2019 07:45

गुरु	14/11/2019 08:05
शनि	21/11/2019 06:38
बुध	27/11/2019 11:39
केतु	30/11/2019 01:01
शुक्र	07/12/2019 08:20
सूर्य	09/12/2019 12:56
चंद्र	13/12/2019 04:36
मंगल	15/12/2019 17:57
राहु	22/12/2019 07:45

सूर्य - राहु - शनि
22/12/2019 07:45
12/02/2020 08:54

शनि	30/12/2019 13:32
बुध	06/01/2020 22:29
केतु	09/01/2020 23:21
शुक्र	18/01/2020 15:33
सूर्य	21/01/2020 06:00
चंद्र	25/01/2020 14:06
मंगल	28/01/2020 14:58
राहु	05/02/2020 10:21
गुरु	12/02/2020 08:54

सूर्य - राहु - बुध
12/02/2020 08:54
29/03/2020 22:34

बुध	18/02/2020 23:14
केतु	21/02/2020 16:26
शुक्र	29/02/2020 10:42
सूर्य	02/03/2020 18:35
चंद्र	06/03/2020 15:44
मंगल	09/03/2020 08:56
राहु	16/03/2020 08:35
गुरु	22/03/2020 13:36
शनि	29/03/2020 22:34

सूर्य - राहु - केतु
29/03/2020 22:34
18/04/2020 02:47

केतु	31/03/2020 01:24
शुक्र	03/04/2020 06:07
सूर्य	04/04/2020 05:07
चंद्र	05/04/2020 19:28
मंगल	06/04/2020 22:19
राहु	09/04/2020 19:21
गुरु	12/04/2020 08:43
शनि	15/04/2020 09:35
बुध	18/04/2020 02:47

सूर्य - राहु - शुक्र
18/04/2020 02:47
11/06/2020 21:41

शुक्र	27/04/2020 05:56
सूर्य	29/04/2020 23:40
चंद्र	04/05/2020 13:15
मंगल	07/05/2020 17:57
राहु	15/05/2020 23:11
गुरु	23/05/2020 06:30
शनि	31/05/2020 22:42
बुध	08/06/2020 16:58
केतु	11/06/2020 21:41

सूर्य - राहु - सूर्य
11/06/2020 21:41
28/06/2020 08:09

सूर्य	12/06/2020 17:24
चंद्र	14/06/2020 02:16
मंगल	15/06/2020 01:17
राहु	17/06/2020 12:27
गुरु	19/06/2020 17:03
शनि	22/06/2020 07:30
बुध	24/06/2020 15:23
केतु	25/06/2020 14:24
शुक्र	28/06/2020 08:09

सूर्य - राहु - चंद्र
28/06/2020 08:09
25/07/2020 17:36

चंद्र	30/06/2020 14:56
मंगल	02/07/2020 05:17
राहु	06/07/2020 07:54
गुरु	09/07/2020 23:34
शनि	14/07/2020 07:40
बुध	18/07/2020 04:48
केतु	19/07/2020 19:09
शुक्र	24/07/2020 08:43
सूर्य	25/07/2020 17:36

सूर्य - राहु - मंगल
25/07/2020 17:36
13/08/2020 21:49

मंगल	26/07/2020 20:27
राहु	29/07/2020 17:29
गुरु	01/08/2020 06:50
शनि	04/08/2020 07:42
बुध	07/08/2020 00:54
केतु	08/08/2020 03:45
शुक्र	11/08/2020 08:27
सूर्य	12/08/2020 07:28
चंद्र	13/08/2020 21:49

सूर्य - गुरु - गुरु
13/08/2020 21:49
21/09/2020 20:51

गुरु	19/08/2020 02:29
शनि	25/08/2020 06:32
बुध	30/08/2020 19:00
केतु	02/09/2020 01:32
शुक्र	08/09/2020 13:23
सूर्य	10/09/2020 12:08
चंद्र	13/09/2020 18:03
मंगल	16/09/2020 00:36
राहु	21/09/2020 20:51

सूर्य - गुरु - शनि
21/09/2020 20:51
07/11/2020 03:13

शनि	29/09/2020 04:40
बुध	05/10/2020 17:58
केतु	08/10/2020 10:44
शुक्र	16/10/2020 03:47
सूर्य	18/10/2020 11:19
चंद्र	22/10/2020 07:50
मंगल	25/10/2020 00:37
राहु	31/10/2020 23:10
गुरु	07/11/2020 03:13

RATNA JYOTI®
Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : उल्का 5 वर्ष 6 मास 9 दिन

उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष
16/01/2019	**26/07/2024**	**27/07/2031**	**27/07/2039**	**26/07/2040**
26/07/2024	**27/07/2031**	**27/07/2039**	**26/07/2040**	**27/07/2042**
उल्क 27/07/2019	सिद्ध 05/12/2025	संक 06/05/2033	मंग 06/08/2039	पिंग 05/09/2040
सिद्ध 25/09/2020	संक 26/06/2027	मंग 26/07/2033	पिंग 26/08/2039	धांय 05/11/2040
संक 25/01/2022	मंग 05/09/2027	पिंग 05/01/2034	धांय 26/09/2039	भ्राम 25/01/2041
मंग 27/03/2022	पिंग 26/01/2028	धांय 05/09/2034	भ्राम 05/11/2039	भद्रि 06/05/2041
पिंग 27/07/2022	धांय 26/08/2028	भ्राम 27/07/2035	भद्रि 26/12/2039	उल्क 05/09/2041
धांय 25/01/2023	भ्राम 06/06/2029	भद्रि 05/09/2036	उल्क 25/02/2040	सिद्ध 25/01/2042
भ्राम 26/09/2023	भद्रि 27/05/2030	उल्क 05/01/2038	सिद्ध 06/05/2040	संक 06/07/2042
भद्रि 26/07/2024	उल्क 27/07/2031	सिद्ध 27/07/2039	संक 26/07/2040	मंग 27/07/2042

धान्या 3 वर्ष	भ्रामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष
27/07/2042	**26/07/2045**	**26/07/2049**	**27/07/2054**	**26/07/2060**
26/07/2045	**26/07/2049**	**27/07/2054**	**26/07/2060**	**27/07/2067**
धांय 26/10/2042	भ्राम 05/01/2046	भद्रि 06/04/2050	उल्क 27/07/2055	सिद्ध 05/12/2061
भ्राम 25/02/2043	भद्रि 27/07/2046	उल्क 04/02/2051	सिद्ध 25/09/2056	संक 26/06/2063
भद्रि 27/07/2043	उल्क 27/03/2047	सिद्ध 26/01/2052	संक 25/01/2058	मंग 05/09/2063
उल्क 26/01/2044	सिद्ध 05/01/2048	संक 06/03/2053	मंग 27/03/2058	पिंग 26/01/2064
सिद्ध 26/08/2044	संक 25/11/2048	मंग 26/04/2053	पिंग 27/07/2058	धांय 26/08/2064
संक 26/04/2045	मंग 04/01/2049	पिंग 06/08/2053	धांय 25/01/2059	भ्राम 06/06/2065
मंग 27/05/2045	पिंग 27/03/2049	धांय 05/01/2054	भ्राम 26/09/2059	भद्रि 27/05/2066
पिंग 26/07/2045	धांय 26/07/2049	भ्राम 27/07/2054	भद्रि 26/07/2060	उल्क 27/07/2067

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

RATNA JYOTI

योगिनी दशा

संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भ्रामरी 4 वर्ष
27/07/2067	**27/07/2075**	**26/07/2076**	**27/07/2078**	**26/07/2081**
27/07/2075	**26/07/2076**	**27/07/2078**	**26/07/2081**	**26/07/2085**
संक 06/05/2069	मंग 06/08/2075	पिंग 05/09/2076	धांय 26/10/2078	भ्राम 05/01/2082
मंग 26/07/2069	पिंग 26/08/2075	धांय 05/11/2076	भ्राम 25/02/2079	भद्रि 27/07/2082
पिंग 05/01/2070	धांय 26/09/2075	भ्राम 25/01/2077	भद्रि 27/07/2079	उल्क 27/03/2083
धांय 05/09/2070	भ्राम 05/11/2075	भद्रि 06/05/2077	उल्क 26/01/2080	सिद्ध 05/01/2084
भ्राम 27/07/2071	भद्रि 26/12/2075	उल्क 05/09/2077	सिद्ध 26/08/2080	संक 25/11/2084
भद्रि 05/09/2072	उल्क 25/02/2076	सिद्ध 25/01/2078	संक 26/04/2081	मंग 04/01/2085
उल्क 05/01/2074	सिद्ध 06/05/2076	संक 06/07/2078	मंग 27/05/2081	पिंग 27/03/2085
सिद्ध 27/07/2075	संक 26/07/2076	मंग 27/07/2078	पिंग 26/07/2081	धांय 26/07/2085

भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष
26/07/2085	**27/07/2090**	**26/07/2096**	**28/07/2103**	**28/07/2111**
27/07/2090	**26/07/2096**	**28/07/2103**	**28/07/2111**	**27/07/2112**
भद्रि 06/04/2086	उल्क 27/07/2091	सिद्ध 05/12/2097	संक 07/05/2105	मंग 07/08/2111
उल्क 04/02/2087	सिद्ध 25/09/2092	संक 26/06/2099	मंग 27/07/2105	पिंग 27/08/2111
सिद्ध 26/01/2088	संक 25/01/2094	मंग 05/09/2099	पिंग 06/01/2106	धांय 27/09/2111
संक 06/03/2089	मंग 27/03/2094	पिंग 26/01/2100	धांय 06/09/2106	भ्राम 06/11/2111
मंग 26/04/2089	पिंग 27/07/2094	धांय 27/08/2100	भ्राम 28/07/2107	भद्रि 27/12/2111
पिंग 06/08/2089	धांय 25/01/2095	भ्राम 07/06/2101	भद्रि 06/09/2108	उल्क 26/02/2112
धांय 05/01/2090	भ्राम 26/09/2095	भद्रि 28/05/2102	उल्क 06/01/2110	सिद्ध 07/05/2112
भ्राम 27/07/2090	भद्रि 26/07/2096	उल्क 28/07/2103	सिद्ध 28/07/2111	संक 27/07/2112

पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भ्रामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष
27/07/2112	**28/07/2114**	**27/07/2117**	**27/07/2121**	**28/07/2126**
28/07/2114	**27/07/2117**	**27/07/2121**	**28/07/2126**	**00/00/0000**
पिंग 06/09/2112	धांय 27/10/2114	भ्राम 06/01/2118	भद्रि 07/04/2122	उल्क 17/01/2127
धांय 06/11/2112	भ्राम 26/02/2115	भद्रि 28/07/2118	उल्क 05/02/2123	00/00/0000
भ्राम 26/01/2113	भद्रि 28/07/2115	उल्क 28/03/2119	सिद्ध 27/01/2124	00/00/0000
भद्रि 07/05/2113	उल्क 27/01/2116	सिद्ध 06/01/2120	संक 07/03/2125	00/00/0000
उल्क 06/09/2113	सिद्ध 27/08/2116	संक 26/11/2120	मंग 27/04/2125	00/00/0000
सिद्ध 26/01/2114	संक 27/04/2117	मंग 05/01/2121	पिंग 07/08/2125	00/00/0000
संक 07/07/2114	मंग 28/05/2117	पिंग 28/03/2121	धांय 06/01/2126	00/00/0000
मंग 28/07/2114	पिंग 27/07/2117	धांय 27/07/2121	भ्राम 28/07/2126	00/00/0000

RATNA JYOTI®
Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	7
भाग्यांक	2
मित्र अंक	2, 3, 6, 7
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	98%	दम्पति, स्वास्थ्य, सुख
मोती	चंद्र	62%	धनार्जन, धन
नीलम	शनि	61%	दम्पति, दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय
गोमेद	राहु	61%	धन, धनार्जन
हीरा	शुक्र	50%	शत्रु व रोग मुक्ति, कम खर्च, सन्तति सुख
मूंगा	मंगल	34%	व्यावसायिक हानि, हानि, शत्रु व रोग
पुखराज	गुरु	25%	शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट, व्यावसायिक हानि
लहसुनिया	केतु	9%	दुर्घटना, दाम्पत्य कष्ट
माणिक्य	सूर्य	0%	दुर्घटना, पराक्रम हानि

रत्न की शुभता

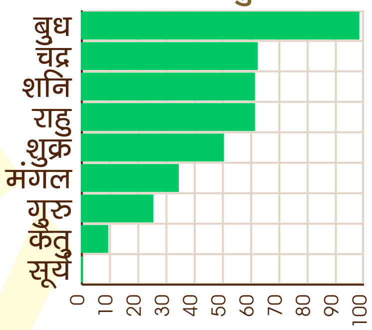

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	26/07/2024	22%	69%	47%	98%	38%	25%	47%	47%	0%
चंद्र	27/07/2034	9%	75%	34%	100%	25%	50%	61%	47%	0%
मंगल	26/07/2041	9%	69%	55%	86%	38%	50%	61%	47%	22%
राहु	27/07/2059	0%	50%	9%	98%	25%	56%	67%	73%	0%
गुरु	27/07/2075	9%	69%	47%	86%	50%	25%	61%	61%	9%
शनि	27/07/2094	0%	50%	9%	100%	25%	56%	73%	67%	0%
बुध	28/07/2111	9%	50%	34%	100%	25%	56%	61%	61%	9%
केतु	28/07/2118	0%	50%	47%	98%	25%	56%	47%	47%	34%
शुक्र	28/07/2138	0%	50%	34%	100%	25%	62%	67%	67%	22%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पन्ना रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है।

पन्ना आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

इसे धारण करने से आपके जीवन में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होगा। आपकी प्रतिभा बढ़ेगी। इस रत्न को धारण करने से आपके रुके हुए कार्य बन सकते हैं। स्वास्थ्य व सुख सम्पत्ति का लाभ मिल सकता है। आपको कार्य करने पर जो श्रेय नहीं मिल पाता है वह प्राप्त होने लगेगा। इस रत्न को धारण करने से आपको कुछ ही समय में सुख की अनुभूति होगी। अतः यह रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के जीवन पर्यन्त धारण करें तो लाभ होगा।

आपके लिए मोती, नीलम, गोमेद एवं हीरा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मूंगा व पुखराज रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

लहसुनिया व माणिक्य रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध सप्तम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको धनवान बनाएगा। रत्न शुभता से आपका विवाह कुलीन परिवार में होगा। यह रत्न आपको उदार और धार्मिक प्रवृति का रखेगा। आपके लिये यह शुभ रत्न होने के कारण इसे धारण कर आप विद्वान, लेखक या सम्पादक हो सकते है। पन्ना आपको शिल्पकला में निपुण, चतुर और विनोदी बनाएगा। रत्न शुभता से आप एक कुशल व्यवसायी बनेंगे। क्रय-विक्रय विषयों से आपको लाभ प्राप्त होगा। व्यावसायिक साझेदारी से आपके अनुकूल फल प्राप्त होंगे।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में बुध लग्नेश एवं चतुर्थेश होते है। लग्नेश बुध का रत्न पन्ना आपके लिए जीवन रत्न के समान कार्य करेगा। पन्ना रत्न आपको उत्तम स्वास्थ्य, बौद्धिक योग्यता दे सकता है। पन्ना रत्न शुभता से आपके स्वास्थ्य सुख में वृद्धि होगी। बुध आपके लिए चतुर्थेश है इसलिए पन्ना रत्न धारण करने से मातृ पक्ष एवं भू-संपति पक्ष बलवान हो सकता है। यह रत्न आपको विनोदी, बुद्धिमान एवं गणितीय कौशल को भी बढ़ायेगा। पन्ना रत्न की शुभता से आप दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता दे सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र एकादश भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न की शुभता से आपको विदेश जाना पसंद होगा। आपको महंगे वाहनों का सुख प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन-संपत्ति होगी। रत्न शुभता से समाज में आपकी मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। मोती रत्न के प्रभाव से आपको सरकारी मामलों की विधिवत जानकारी होगी। मोती रत्न आपको सरकार की ओर से सम्मान और पद प्रतिष्ठा दे सकता है। रत्न शुभता से आप मिलनसार बनेंगे। व्यापार के माध्यम से आपको मनोकूल लाभ होगा।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में चंद्र दूसरे भाव के स्वामी है। चंद्र लग्नेश बुध का मित्र भी है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण कर आप चंद्र शुभता प्राप्त कर सकते है। मोती रत्न

आपको शारीरिक बल तथा मानसिक शक्तियों द्वारा धन व कुटुम्ब से सुखी रख सकता है। मोती रत्न की शुभता से आप धनी, सुखी एवं सम्मानित व्यक्ति बन सकते है। मोती चंद्र द्वितीयेश का रत्न होने के कारण आपको सुन्दर व सुशील जीवन साथी, दांपत्य जीवन में मधुरता देगा। इसके साथ ही इस रत्न को आप दैनिक व्यवसाय में सफलता के लिए भी धारण कर सकते है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि सप्तम भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपके ग्रहस्थ जीवन को सुखमय बनाये रखने का प्रयास करेगा। विवाह के बाद भाग्योदय करेगा। रत्न शुभता आपके दांपत्य जीवन को सौहार्दपूर्ण बनाये रखने में सहयोग करेगी। आपको ठेकेदारी, कोयला, लोहा, खदानों आदि से जुडे कामों से लाभ मिलेगा। रत्न की शुभता से आपको किसी विदेशी काम या विदेशी माल में एजेन्ट का काम करने से भी लाभ प्राप्त हो सकता है। यह रत्न आपके लिए शुभदायक रहेगा।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में शनि नवमेश एवं अष्टमेश है। नवमेश शनि का रत्न नीलम धारण कर आप अपने भाग्य में वृद्धि कर सकते है। नीलम रत्न आपको माता-पिता का सुख प्रदान करेगा। रत्न शुभता से आपको भूमि व संपति से लाभ दे सकता है। शनि रत्न नीलम अष्टमेश का रत्न है इसलिए इस रत्न को धारण कर आप अप्रत्याशित लाभ प्राप्त कर सकते है। नीलम रत्न आपको शत्रुओं पर हावी रख सकता है। यह रत्न आपको भाग्यवान बना सकता है। यह रत्न आपको शारीरिक कष्टों से बचा सकता है। साथ ही यह रत्न आपके शारीरिक बल में भी वृद्धि कर सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंड़ली में राहु दूसरे भाव में स्थित है। राहु रत्न गोमेद धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। यह रत्न धारण कर आप धन संचय के प्रति सचेत रहेंगे। धन के प्रति आपका मोह बढ़ेगा। सत्य बोलने की ओर आप अग्रसर होंगे। गोमेद रत्न की शुभता चातुर्य एवं नीति निर्माण से धन संचय करने में आपको सफलता देगी। गोमेद आपके स्वभाव को सौम्य बनाए रखेगा। गोमेद रत्न धारण कर आप पारिवारिक संस्कारों का नियम से पालन करेंगे। यह रत्न आपको विचार अभिव्यक्ति का कौशल देगा।

राहु कर्क राशि में स्थित है व इसका स्वामी चन्द्र एकादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न आपको अनेक क्षेत्रों से आय प्राप्ति के स्रोत देगा। यह रत्न आपको विवाद विजयी, विनोदी और स्वाभिमानी बनाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आप वाहन आदि से सुखी होंगे। परदेश में यह आपका भाग्योदय करेगा। रत्न प्रभाव से आप अत्यधिक महत्वकांक्षी हो सकते है। यह रत्न आपको व्यवसायी, सरकार से प्रतिष्ठा एवं व्यावसायिक लाभ प्राप्त करेंगे। रत्न शुभता आपको अन्न, वस्त्र, अलंकार, धन, पशु, वाहन आदि से सुखी करेगी। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आप धन-धान्य से युक्त होंगे। यह रत्न आपके अंहकार भाव को भी नियंत्रित रखेगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको सुशिक्षित और विवेकवान बनायेगा। नौकरी क्षेत्र में आपको स्त्रियों से सहयोग की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपके साहस को नियंत्रित करेगा। आपकी संतान अच्छी होगी और आप पुत्र-पौत्रों से युक्त हो सकते है। यह रत्न धारण कर आप आवश्यक विषयों पर व्यय करने का प्रयास करेंगे। आपको भाई-बहनों और मामा से सुख प्राप्त होगा। स्वतंत्र

व्यवसाय से उत्तम लाभ प्राप्त करने के लिए भी आप यह पुखराज रत्न धारण कर सकते है।

आपकी मिथुन लग्न की कुंड़ली में शुक्र पंचमेश एवं द्वादशेश है। शुक्र लग्नेश बुध के मित्र भी है। त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण शुभ ग्रह है। शुक्र ग्रह की शुभता को बढ़ाने के लिए आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न आपको संतान से सुखी, विद्वान बना सकता है। हीरा रत्न प्रभाव से आप को विदेश जाने के अवसर, व्ययों पर नियंत्रण लगायें रखने में सफल हो सकते है। शुक्र रत्न हीरे से आप भोगविलास के आदी नहीं होंगे। यह रत्न आपके दांपत्य जीवन को सुखमय बनाए रखने में सहयोगी हो सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल दशम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर मैकेनिकल इंजीनियर, इलेक्ट्रानिक इंजीनियर, सैनिक, हथियार से जुड़े काम या विभागों से जुड़े कामों में कार्यरत होना आपको कष्ट दे सकता है। यह रत्न आपके सुख एवं यश को बाधित कर सकता है। आपमें नेतृत्व शक्ति की कमी आपकी सफलता को प्रभावित कर सकती है। मूंगा रत्न आपमें अत्यधिक जोश, साहस, ऊर्जा और उत्तेजना भाव को बढ़ाकर आपके द्वारा वाद-विवाद उत्पन्न करा सकता है। मूंगा रत्न से कार्यक्षेत्र में आपको लड़ाई झगड़ों की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। साहस की अधिकता व्यवसायिक क्षेत्र में आपको जोखिम पूर्ण क्षेत्रों में धन विनियोजन करा हानि दे सकती है।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में मंगल षष्ठ भाव एवं आय भाव के स्वामी है। छठे भाव का स्वामित्व होने के कारण मंगल रत्न मूंगा धारण करना आपके लिए कुछ कष्टप्रद हो सकता है। मूंगा रत्न पहनना आपको नेत्रों से संबंधित रोग शीघ्र दे सकता है। आप कम मिलनसार हो सकते है। लड़ाई-झगड़ों से बचने का प्रयास करेंगे। आपत्ति आने पर आप अत्यधिक साहस भाव से काम लेंगे। जिसके कारण चोट आदि की स्थिति बन सकती है। यह रत्न आपको क्रोधी, सख्त बोलने वाले, रक्त विकारी एवं हठी बना सकता हैं. मूंगा रत्न आपको शत्रुओं द्वारा हानि दे सकता है। अप्रयाशित घटनाओं के कारण आर्थिक स्थिति में अस्थिरता बन

सकती है। आय क्षेत्रों में चोरी आदि का भय हो सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आप के रोगों, ऋण और शत्रुओं में वृद्धि हो सकती है। पुखराज रत्न आपकी शारीरिक प्रकृति को पीड़ित कर सकता है। विवेक, पराक्रम और उदारता भाव के लिए भी रत्न का सहयोग आपको प्राप्त नहीं हो पाएगा। पुखराज रत्न धारण करना आपके मामा और भाईयों के सुखों में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपके काम समय पर पूरे नहीं हो पायेंगे। सेवकों के कारण कार्य विलंबित हो सकते है। न्याय प्रणाली पर आपकी आस्था कमजोर हो सकती है। आजीविका क्षेत्र में वरिष्ठजन आपको परेशानियां दे सकते हैं।

आपकी मिथुन लग्न की कुंड़ली में गुरु सप्तमेश एवं दशमेश है। सप्तमेश गुरु का रत्न होने के कारण पुखराज रत्न धारण से आपको सभी शुभ फल नहीं मिल पाएंगे। पुखराज रत्न आपको जांघों से संबंधित रोग दे सकता है। यह रत्न धारण करने पर आपकी पदोन्नति विलम्बित हो सकते है। कार्यक्षेत्र में आपके उत्तरदायित्व बढ़ सकते है। व्यवसायिक क्षेत्र में अस्थिरता की स्थिति बन सकती है। विदेशी संपर्को से आपको यथायोग्य लाभ प्राप्त नहीं हो पाएगा। यह रत्न आपके वैवाहिक जीवन में वैमनस्य का भाव ला सकता है। जीवनसाथी, साझेदारी और व्यापार क्षेत्र की शुभता बाधित हो सकती है। पुखराज रत्न प्रभाव से आपको मूत्राशय रोग एवं गुप्त रोगों के संपर्क में आना पड सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने आप कुछ विषयों में आप लोभी और चालाक हो सकते है। आपके द्वारा दूसरों को शारीरिक और मानसिक कष्ट हो सकते है। अनजाने में आपसे पाप हो सकते है। आपके द्वारा किये गये कार्यो से विवेकहीनता परिलक्षित हो सकती है। रत्न प्रतिकूलता से आपको मुखरोग या दंत रोग हो सकता है। केतु रत्न आपको अकस्मात हानि करा सकता है। यह रत्न आपका ऑपरेशन करा सकता है। आपको विरासत मिलने में तकलीफ हो सकती है। सरकार के द्वारा आपकी धन हानि हो सकती है।

केतु मकर राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि सातवें भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न आपके वैवाहिक जीवन को कष्टमय बनाएगा। यह रत्न आपकी छवि व चरित्र को विवादास्पद बना सकता है। इस रत्न प्रतिकूलता से आपकी निष्ठा दांपत्य जीवन के प्रति कुछ कम होगी। रत्न प्रभाव से आपको उदर संबंधित रोग विशेषकर आंतों से जुड़े रोग हो सकते हैं। यह रत्न धारण करने पर आपके विवाह तय होने में भी विलम्ब की स्थितियां बन सकती है। यह रत्न आपको स्वतन्त्र व्यापार में हानि दिला सकता है तथा आपके लिए इस रत्न की शुभता के कारण प्रशासनिक एवं राजनैतिक जीवन में उतार-चढ़ाव के योग बन सकते है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य पहनने पर आपको समय समय पर सरकारी क्षेत्रों में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। पिता के स्वास्थ्य में कमी हो सकती है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो सकती है। इस रत्न को पहनने पर आपको पित्त संबंधी रोग हो सकते है। हृदय रोग भी यह रत्न आपक दे सकता है। यह रत्न आपकी धैर्य शक्ति में कमी कर क्रोध भाव में वृद्धि कर सकता है। रत्न प्रभाव से आप पर कार्य भार बढ़ सकता है। आपको आंखों से संबंधित रोग परेशान कर सकते है। पिता से संबंध मधुर बनाए रखने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते है।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में सूर्य तृतीय भाव का स्वामी है। तृतीयेश सूर्य का माणिक्य रत्न आपको अपने सभी शुभ फल देने में समर्थ नहीं है। माणिक्य रत्न धारण करने पर आप दुःसाहसी होकर अपनी शारीरिक हानि करा सकते है। इस रत्न प्रभाव से आपकी परिश्रम क्षमता का ह्रास हो सकता है। आपकी ओजस्विता में कमी हो सकती है। माणिक्य रत्न आपको क्रोधी और कठोर बना सकता है। आपका स्वभाव ही मित्रवर्ग से आपके संबंधों में कड़वाहट का कारण बन सकता है। भाई-बहनों का सुख-सहयोग कम ही मिल पाएगा। सूर्य रत्न माणिक्य आपको प्रचार-प्रसार क्षेत्रों में बाधाएं दे सकता है। आपको यात्राओं में सुख-सुविधा की कमी का अनुभव हो सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

सूर्य
(16/01/2019 - 26/07/2024)

सूर्य की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा, नीलम, गोमेद, पुखराज व हीरा रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(26/07/2024 - 27/07/2034)

चन्द्र की दशा में आपका पन्ना व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों

में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद, मूंगा व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(27/07/2034 - 26/07/2041)

मंगल की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, नीलम, मूंगा व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(26/07/2041 - 27/07/2059)

राहु की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, नीलम, हीरा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मूंगा, माणिक्य व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(27/07/2059 - 27/07/2075)

गुरु की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, नीलम, गोमेद व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा व हीरा रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या

वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(27/07/2075 - 27/07/2094)

शनि की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, गोमेद, हीरा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मूंगा, माणिक्य व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(27/07/2094 - 28/07/2111)

बुध की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, गोमेद, हीरा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(28/07/2111 - 28/07/2118)

केतु की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा, नीलम, गोमेद, लहसुनिया व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(28/07/2118 - 28/07/2138)

शुक्र की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, गोमेद, हीरा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - पन्ना

आपका जन्म मिथुन राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी बुध होता है। बुध सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह सूर्य के सबसे अधिक नजदीक है और सूर्य ग्रहों का राजा होता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः मिथुन राशि के लग्न वाले जातकों को मिथुन राशि के स्वामी ग्रह बुध को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। बुध ग्रह के लिये पन्ना रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी बुध राजकुमार व व्यापार का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज सम्मान की प्राप्ति तथा व्यापार में आशातीत लाभ व विद्यार्थियों को बुद्धिबल प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को बड़ी बहन, बुआ और मौसी का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। बुध ग्रह वाणी एवं बुद्धि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको वाणी दोष या आत्मविश्वास से संबंधित परेशानी हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा बुद्धि बल की प्राप्ति होती है जिससे विद्यार्थीगण अपनी परीक्षाओं में अच्छे अंकों से सफलता प्राप्त करते हैं।

पन्ना रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि कनिष्ठिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में बुध की अंगुली मानी जाती है । पन्ना रत्न बुध का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात बुधवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल बुध की होरा में श्रेष्ठ होता है। बुधवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय बुध की होरा का होता है। पन्ना को यदि बुधवार के साथ-साथ बुध के नक्षत्र अर्थात् आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

पन्ना को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर हरे रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, बुध के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

बुध का मंत्र - ऊँ बुं बुधाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि बुध से संबंधित पदार्थ जैसे मूंग दाल, पीतल,

सवा मीटर हरे कपड़े का दान करें तो पन्ना रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन बुध का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और हिजड़ों को यथोचित समय-समय पर वस्त्र या पैसे आदि का दान करें तो यह पन्ना रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक बुधवार को गणेश जी की उपासना करें तथा गणेश जी को मोदक का भोग लगायें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

मिथुन लग्न वाले जातक यदि पन्ना रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रूद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

RATNA JYOTI®
Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली मिथुन लग्न की हैं। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं आपका मस्तिष्क सदैव विचारमान व गतिमान रहता है इसलिए हर समय कुछ न कुछ आपके मस्तिष्क में चलता रहता है। लग्न स्वामी बुध होने की वजह से कठिन से कठिन काम को भी आप अपनी बुद्धि कौशल से आसान बना लेते हैं। द्विस्वभाव लग्न होने से आपके स्वभाव में भी दोहरापन (वास्तव में लचीलापन) होता है। समय के अनुसार अपने व्यवहार को बदल लेना अथवा हर परिस्थिति में स्वयं को ढाल लेना, वातावरण को अपने अनुसार ढाल लेना या स्वयं वातावरण के अनुसार ढल जाना आपके स्वभाव की विशेषता होती है। आपका व्यवहारिक ज्ञान अच्छा होता है। हर चीज को सीखने एवं पाने की ललक आप मे रहती है। आप खाली नहीं बैठ सकते हैं। हर

समय व्यस्त रहना कुछ नया करने की इच्छा आपमें रहती है। आपका हँसमुख स्वभाव आपको हर जगह लोकप्रिय बनाता है।

6, 8, व 12 भाव त्रिक भाव के नाम से जाने जाते हैं। त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

मिथुन लग्न में छठे भाव व एकादश भाव के स्वामी मंगल हैं। आप अपने साहस का उपयोग अनैतिक कार्यो के लिए कर सकते हैं, मिथ्या वचन बोलने से भी आप बचे, तथा युद्ध अथवा लड़ाई हेतु सदैव तत्पर हो सकते हैं। शत्रुओन पर विजय प्राप्ति सहज हो जाती हैं। अपने बड़े भाई-बहनों से वैर-भाव रखने वाले हो सकते हैं। विष, अग्नि, शास्त्र सेपीड़ित हो सकते हैं।

अष्टम व नवम भाव के स्वामी शनि हैं। अष्टम भाव के स्वामी शनि के प्रभाव से आपके पिता के स्वास्थ्य में कमी, भाग्यवृद्धि में बाधक, अधिनस्थों की ओर से सहयोग मेंकमी, लम्बी अवधि के रोग, ऋण आपके कार्यो में व्यर्थ का विलम्ब कर सकते हैं। इस योग की अशुभता से रोजगार प्राप्ति में व्यवधान, धन संग्रह में बाधा का सामना करना पड़ सकता है।

पंचम भाव और द्वादश भाव के स्वामी शुक्र हैं। शुक्र पंचमेश व द्वादशेश होकर आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता हैं। इसके अतिरिक्त शुक्र व्यय, हानि, दंड व अलगाव दे सकता हैं।

गुरु आपके छठे भाव में है, गुरु की यह स्थिति आपको शत्रुओं की अधिकता, शत्रुविजयी, धन संचयी, पदवृद्धि, बुद्धिमान, विचारवान, भाग्यवान और आध्यात्मिक भाव प्रदान कर रहा हैं।

शुक्र की स्थति छठे भाव में आपको शत्रु विजयी बना रहा है, मामा का सुख, द्विभार्या योग, दाम्पत्य जीवन कष्टप्रद, अंतरजातीय विवाह की संभावनाएं देता हैं।

सूर्य का अष्टम भाव में होना, सन्तान और शिक्षा क्षेत्र को बाधायुक्त बना रहा हैं। जीवन में अप्रत्याशित घटनाएं, सरकारी कार्यों में बाधाएं, सरकारी क्षेत्रों से पूर्ण सहयोग प्राप्त न होना, हृदय सम्बन्धी लम्बी अवधि के रोग, पुलिस और ससुराल पक्ष से संबंधों में मधुरता में कमी हो सकती हैं। सूर्य आपकी विद्वता में कमी कर रहा है, वाणी में कटुता का भाव कुछ अंश तक आ सकता है, धन-संचय में कमी, कुटुंब से मतभेद, अल्पकाल के लिए मिथ्याभाषी हो सकते है।

अष्टम भाव में केतु अशुभ फलदायक होते है। आपको अपनी बुद्धि को गलत कार्यो में लगाने से बचना चाहिए। आपका उद्यम बाधित हो सकता है। साथ ही यह योग आपको परिश्रम का उचित प्रतिफल नहीं देता। जीवन साथी से शत्रुता भाव उत्पन्न हो सकता है। स्वजनों से संबंधों को मधुर बनाए रखने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 3, 5, 6, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्‌भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड्ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड्ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027	03/06/2027-23/02/2028	------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-03/06/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	------------------------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	------------------------	------------------------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	------------------------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	------------------------	------------------------
साढेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	------------------------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
साढेसाती तृतीय ढैया	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/07/2093-18/08/2095	------------------------	------------------------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/12/2102-29/11/2105	------------------------	------------------------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	व्यावसाय
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	अल्प बचत
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	कम खर्च
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	धन
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	शत्रु से कष्ट

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ॐ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्मकाल में मंगल की स्थिति चन्द्रकुंडली में द्वादश भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि चन्द्र से मांगलिक होने का दोष अधिक प्रबल नहीं होता। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृति किंचित व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आप समय समय पर व्यय करते रहेंगे। जिससे आपको अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन इसका प्रभाव अल्प रहेगा। तथा सामान्य रूप से धनार्जन होता रहेगा। शारीरिक स्वास्थ्य आपका मध्यम रहेगा। मानसिक परेशानी की अनुभूति आपको समय समय पर होती रहेगी। साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी उत्पन्न होंगे लेकिन उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब हो सकता है परन्तु इस कार्य में सफलता आपको अवश्य प्राप्त होगा। साथ ही विवाह पूर्व किसी वार्ता में गतिरोध भी उत्पन्न हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। विवाह के पश्चात आपका दाम्पत्य जीवन परस्पर सामंजस्य के कारण अनुकूल रहेगा तथा इसका उचित उपभोग करने में आप समर्थ रहेंगे।

चन्द्रकुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील होगी परन्तु प्रचुर मात्रा में धनार्जन होने के कारण इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों तथा समस्याओं का सामना तथा समाधान करने में भी आप सफल होंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से भाई बहनों का सुख मध्यम रहेगा। पराक्रम तथा आत्मबल में वृद्धि होगी जिससे आपके लाभ एवं उन्नति के मार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे। षष्ठ

भावस्थ मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग पर विजय प्राप्त करने में आपको सफलता मिलेगी। यदा कदा पित या गर्मी द्वारा उत्पन्न रोगों से आपको परेशानी का सामना करना पड़ेगा। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी लेकिन परस्पर सामंजस्य के कारण आप सुखी दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे परस्पर मांगलिक दोष का प्रभाव समाप्त हो जाएगा। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु सदृश पाप ग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आनन्द पूर्वक आप अपने दाम्पत्य जीवन का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग भी प्रदान करेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को

प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 16 है। एक एवं छः के योग से आपका मूलांक 7 होता है । मूलांक सात का स्वामी भारतीय मत से केतु एवं पाश्चात्य मत से नेपच्यून होता है। अंक एक का सूर्य तथा 6 का शक्रु है । इन तीनों ग्रह सूर्य, शुक्र, केतु या नेपच्यून का प्रभाव आपके जीवन में निरन्तर चलता रहेगा। मूलांक 7 के प्रभाव से आपकी अभिरुचि ललित कलाओं में रहेगी। आपको गीत-संगीत, लेखन, काव्य, चलचित्र, दूरदर्शन इत्यादि में लगाव होगा। कल्पनाशक्ति आपकी काफी अच्छी रहेगी। धन संग्रह में आपको कठिनाईयां आयेंगी इससे अर्थ के क्षेत्र में आप कमी महसूस करेंगे। घूमने-फिरने के शौकीन होने के कारण आप लम्बी यात्रायें करेंगे जिनसे आपके ज्ञान की वृद्धि होगी। अतीन्द्रिय ज्ञान आपके अन्दर काफी अच्छा रहेगा, जिससे दूसरों के विचार या बात को आप आसानी से समझ जायेंगे।

अंक एक एवं छः के स्वामी सूर्य, शुक्र ग्रह के प्रभाव से आप महत्वाकांक्षी, दृढ़प्रतिज्ञ, अडिग एवं सौन्दर्यबोध को समझने वाले होंगे। आप अपने जीवन में काफी संघर्ष करेंगे, लेकिन अन्त में संघर्षो पर विजय प्राप्त करेंगे एवं सफलता अर्जित करेंगे। आपको स्वच्छता अधिक पसन्द आयेगी एवं सभी वस्तुऐं करीने से सजी हों तथा घर ऑफिस में सुन्दर बैठक हो ऐसी आपकी मनोवृत्ति रहेगी।

दूरस्थ देशों से आपको लाभ प्राप्त होगा। आप रोजगार-व्यापार में ऐसी लाईन का चुनाव करेंगे, जिसमें दूरस्थ देशों से निरन्तर सम्पर्क बना रहे तथा उनसे लाभ मिले। नेपच्यून, शुक्र एवं सूर्य के संयुक्त प्रभाववश आपको प्रारम्भ में संघर्ष करना पड़ेगा। पश्चात् मध्य अवस्था से अन्तिम अवस्था तक उन्नति की सीढ़ियां चढ़ते चले जायेंगे।

भाग्यांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आपकी कल्पनाशक्ति उन्नत किश्म की होगी। बौद्धिक स्तर आपका उच्च कोटि का रहेगा एवं बुद्धि जन्य कार्यो में आपकी विशेष अभिरुचि रहेगी। शारीरिक श्रम साध्य कार्यों में आपकी दिलचस्पी कम रहेगी। चन्द्रमा जिस तरह घटता-बढ़ता रहता है, उसी प्रकार आपके भाग्य का सितारा भी कभी तो एकदम ऊँचाईयों को प्राप्त करेगा और कभी आप एकदम घोर अंधकार में अपने आप को पायेंगे। ऐसे समय में धैर्य रखना आपके लिए अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि आपके भाग्य का सितारा भी पुनः पूर्णिमा की तरह प्रकाशित होगा। धैर्य न रखना आपकी कमजोरियों में रहेगा।

भाग्य आपका बदलता रहेगा। एक स्थिर मुकाम पर कभी भी नहीं पहुँचेगा। आपको सम्पूर्ण जीवन में भाग्योदय की कुछ कमी खटकती रहेगी। आपको अधिकारियों से लाभ रहेगा तथा धन-धान्य से आप सुखी रहेंगे। आपको अपनी चलायमान प्रकृति पर नियंत्रण रखना होगा अन्यथा एक के बाद एक कार्यो को बीच में छोड़कर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति वश आपके कार्य देर से सफल होंगे और कभी असफल भी होंगे।

आपका मूलांक 7 है तथा आपका भाग्यांक 2 है। मूलांक 7 का स्वामी नेपच्यून है तथा भाग्यांक 2 का स्वामी चंद्र है। मूलांक 7 और भाग्यांक 9 के बीच मित्र संबंध है। इसके प्रभाववश आपको मूलांक एवं भाग्यांक दोनों के अच्छे प्रभाव प्राप्त होंगे। आपके अंदर अच्छी

कल्पना शक्ति का विकास होगा एवं आप अपने रोजगार-व्यापार में अपनी कल्पना शक्ति का भरपूर उपयोग करेंगे। आपकी विचारधारा परिवर्तनशील होने के कारण आप पुरानी प्रथाओं में समयानुकूल परिवर्तन के हिमायती रहेंगे। आपके रोजगार-व्यापार में ललित कलाओं का समावेश रहेगा एवं आप ऐसा ही रोजगार पसंद करेंगे, जिसमें चौंसठ कलाओं में से किसी एकाधिक कला का पूर्ण समावेश होगा। आपके रोजगार-व्यापार में समय-समय पर यात्राएं होती रहेंगी एवं यात्राओं से आपको विभिन्न प्रकार के लाभों की प्राप्ति होगी। आपका रुझान धन संग्रह की अपेक्षा भौतिक सुख- संपदाओं में व्यय करने की ओर अधिक रहेगा। आपकी सामाजिक स्थिति मध्यम श्रेणी में उच्चता लिए रहेगी। आपका भाग्योदय जीवन के द्वितीय भाग से प्रारंभ होगा एवं अंतिम अवस्था में आपके पास अच्छी संपत्ति तथा उच्च कोटि का सामाजिक स्तर प्राप्त होगा।

आपका भाग्योदय 29 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा तथा 38 वर्ष की अवस्था से आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी एवं 47 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 7 की 2 एवं 6 से मित्रता है तथा भाग्यांक 2 की 7 एवं 9 से मित्रता है। अतः आपके जीवन में 2, 7, 6, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे तथा इनसे आपके जीवन की कुछ घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक की आपके भाग्यांक से मित्रता होने से मूलांक-भाग्यांक के फल आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षो में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास, या उपर्युक्त वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभवार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए फरवरी, जुलाई, जून, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक के अंक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 9 एवं भाग्यांक 2 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 2, 7, 6, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 2, 7, 6, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 47

7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

ग्रह फल

सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरू, यात्रा करने का शौकीन ,आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में है। अतः माता के आप सदैव प्रिय रहेंगे एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेंगे। जीवन में आपकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए सदैव आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उन्हीं के सहयोग से आप अपने आय साधनों की वृद्धि करने में सफल हो सकेंगे। इस प्रकार जीवन के समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आपको नित्य धन लाभ होता रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करना एवं उनकी सेवा करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहपूर्ण रहेंगे एवं उनमें मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। इस प्रकार आप परस्पर एक

दूसरे के लिए शुभ रहेंगे।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यो में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यो में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

बुध

सातवेंभाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्त्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

वृश्चिक राशि में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, राजमन्त्री, कार्यकुशल, सुगठित शरीर, अपनी उच्चता का दिखावा करने वाला, स्वार्थी, निर्बलस्वास्थ्य, दुःखी एवं कामुक होता है।

शुक्र

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन, बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुखी एवं गुप्तरोगी होता है।

वृश्चिक राशि में शुक्र हो तो जातक-नास्तिक, कुकर्मी, स्त्रीद्वेषी दरिद्री, गुह्य रोगी, ऋणी, क्रोधी, स्वतन्त्र एवं अन्यायी होता है।

शनि

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराक्रमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- सूर्य
(16/01/2019 - 26/07/2024)

सूर्य की महादशा 16/01/2019 को आरम्भ होगी और 6 वर्ष की होकर 26/07/2024 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य अष्टम भाव में अवस्थित है। सूर्य स्वास्थ्य, पिता, राजकीय कृपा, साहस तथा क्रोध का प्रतिनिधित्व करता है जबकि अष्टम भाव अप्रत्याशित लाभ, छुपी प्रतिभा, आध्यात्मिक लक्ष्य तथा लाभ का सूचक है। अतः इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, साझेदारों से लाभ तथा पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति हागी।

स्वास्थ्य :

आपकी जीवन शक्ति में वृद्धि होगी तथा स्वास्थ्य उत्तम होगा। आपको आपके मार्ग में आनेवाली सभी समस्याओं का सामना करने की शक्ति तथा उत्साह प्राप्त होगा। आप में प्रतिरोध की क्षमता प्रबल है। कभी-कभी आप सरदर्द, लू, प्रदाह आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इन सभी समस्याओं से बचाव के लिये आपको सन्तुलित आहार लेना चाहिए। सभी अतिशयताओं का परित्याग करें।

अर्थ :

आप भाग्यशाली हैं ओर आपके साधन पर्याप्त हैं। फिजूल खर्ची से बचें अन्यथा आपका बैंक बैलेंस प्रभावित हो सकता है। आपको पैतृक अथवा अप्रत्याशित धन की प्राप्ति हो सकती है। सट्टेबाजी और निवेश का परित्याग करें। आपको सेवा-अवकाश से लाभ, बोनस तथा ग्रेच्यूइटी की प्राप्ति हो सकती है। कुल मिलाकर आपकी आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक रहेगी।

व्यवसाय :

आपको सफलता, यश ख्याति, शक्ति तथा अधिकार की प्राप्ति होगी। सूर्य की अष्टम भाव में स्थिति के कारण कुछ अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकते हैं, किन्तु वे लाभदायक सिद्ध होंगे। आप किसी उच्च सरकारी पद पर आसीन होंगे क्योंकि आपमें प्रशासकीय क्षमता विद्यमान है। आप संस्थाओं, निगमों और अन्य संगठनों के प्रबन्धक पद के लिये अति उपयुक्त हैं। आप सैन्य अथवा राजनीतिक सेवा, प्रशासकीय कार्य, तकनीकी-वैज्ञानिक सेवाओं का चयन अपनी जीवन वृत्ति के लिये कर सकते हैं। पेशेवर खेल भी लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं। सेवारत व्यक्तियों को सफलता, आमदनी, यश तथा ख्याति की प्राप्ति होगी। व्यवसायियों को सभी कार्यों में सफलता तथा लाभ की प्राप्ति होगी जबकि व्यापारियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

परिवार :

बच्चों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। आपको अपने विकल्पों के प्रति हठधर्मी नहीं होना चाहिए और अपने विचार दूसरों पर आरोपित नहीं करने चाहिएं। अन्यथा आपके वैवाहिक जीवन में कलह उत्पन्न हो सकता है। आपके जीवन साथी को आर्थिक लाभ मिलेगें और उनके साथ आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आप कैसा व्यवहार करें यह आप पर निर्भर करता है। आपकी माता को सट्टे तथा निवेश से लाभ होगा और बच्चों से सुख मिलेगा। आपके पिता

की आध्यात्मिक कार्यों में रुचि हो सकती है। आपके छोटे भाई-बहनों को उनके प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय मिलेगी, और मातृ-पक्ष से लाभ मिलेगा जबकि बड़े भाई-बहनों को जीवन-वृत्ति में सफलता मिलेगी। आप स्वभाव से उदार तथा स्वामिभक्त हैं अतः आपके मित्रों की संख्या बड़ी होगी।

शिक्षा :

आप धर्म ग्रन्थों का अध्ययन कर सकते हैं। अध्यात्म में आपकी रुचि हो सकती है।

RATNA JYOTI

अंतर्दशा :- सूर्य - सूर्य
(16/01/2019 - 16/01/2019)

आपके लिए सूर्य की महादशा 16/01/2019 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 16/01/2019 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आपका स्वास्थ्य और ऊर्जा उत्तम रहेंगे। अगर किसी बीमारी से ग्रस्त हैं तो लाभ प्राप्त करेंगे। अचानक धन मिल सकता है। बीमे की रकम, सेवानिवृत्ति निधि, विरासत आदि से धन मिल सकता है। अध्यात्म, तंत्र-मंत्र आदि में रुचि बढ़ सकती है।

संतान अपने कार्य, विशेषकर शोध में प्रगति करेगी। जीवनसाथी को लाभ मिल सकता है। आपको भागीदारी, संघ या अनुबंध आदि से लाभ हो सकता है। पिता के लिए समय प्रतिकूल हो सकता है। माता के धन में वृद्धि होगी। छोटे भाई-बहनों का भाग्य मध्यम हो सकता है परंतु बड़े भाई-बहन सफलता प्राप्त करेंगे।

स्वास्थ्य के लिए सामान्य सावधानियों का पालन करें। आंखों के रोग, ज्वर आदि कष्ट दे सकते हैं। अशुभ से बचने के लिए गायत्री मंत्र का जाप करें और रविवार के दिन व्रत करें।

अंतर्दशा :- सूर्य - चन्द्र
(16/01/2019 - 15/05/2019)

आपकी सूर्य की महादशा 16/01/2019 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 15/05/2019 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अंतर्दशा में आप धन और सुख-सुविधाओं से युत रहेंगे। आपका मान-सम्मान और ओहदा ऊंचा होगा। महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति होगी। वरिष्ठ लोगों से आपके संबंध बनेंगे जो लाभदायक होंगे। आपके कार्यों की प्रशंसा होगी। स्त्रियों से संबंधित व्यवसाय में लाभ होगा। व्यवसाय या सरकार के माध्यम से आय होगी। कला और साहित्य में रुचि बढ़ेगी।

आपके सबसे बड़े पुत्र/पुत्री का भाग्य उत्तम रहेगा। किसी संतान का विवाह हो सकता है। छोटे भाई-बहन भाग्यशाली होंगे।

माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। पिता की छोटी यात्राएं हो सकती हैं, मातहत सहयोग करेंगे, महिलाओं से प्रतिस्पर्धा हो सकती है। आपके मामापक्ष के लोगों को सबका सहयोग मिलेगा। उन्हें ऋण भी प्राप्त हो सकेगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छोटी मोटी शिकायतें हो सकती हैं। शुभत्व में वृद्धि

के लिए श्वेत वस्तुओं का दान करें।

अंतर्दशा :- सूर्य - मंगल
(15/05/2019 - 20/09/2019)

आपकी सूर्य की महादशा 16/01/2019 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 20/09/2019 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। आप स्फूर्ति और उत्साह से परिपूर्ण रहेंगे और प्रत्येक कार्य को ठीक प्रकार से पूरा करेंगे। मकान का निर्माण कर सकते हैं। आपके जीवनसाथी या साझेदार को पक्की नौकरी मिल सकती है या वे कोई वाहन खरीद सकते हैं। व्यापारीगण और परामर्शदाताओं के लिए समय बहुत व्यस्त और शुभ रहेगा। सेवारत जातक भाग्यशाली रहेंगे। विरोधी आपको नुकसान नहीं पहुंचा सकेंगे।

आपके पुत्र-पुत्रियों को स्पर्धा परीक्षा में सफलता मिलेगी। उनको स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देना होगा। आपके पिता को उच्चपद प्राप्त होगा। माता को विरोधी परेशान कर सकते हैं। उन्हें उष्मा से संबंधित व्याधियों से सावधान रहना चाहिए। छोटे भाई-बहनों को जायदाद प्राप्त हो सकती है। बड़े भाई-बहनों का खर्च बढ़ेगा। व्यर्थ की कष्टप्रद यात्राएं हो सकती हैं। मामापक्ष के लोग सट्टेबाजी और मनोरंजन में समय व्यतीत कर सकते हैं।

आपको मामूली स्वास्थ्य समस्याएं जैसे गठिया, ज्वर और रक्त की खराबी आदि कष्ट दे सकती हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ लाभकारी रहेगा।

अंतर्दशा :- सूर्य - राहु
(20/09/2019 - 13/08/2020)

आपके लिए सूर्य की महादशा 16/01/2019 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 20/09/2019 को प्रारंभ होकर 13/08/2020 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। अचल संपत्ति के स्वामी होंगे। विरासत, उपहार आदि से लाभ होगा। जीवनसाथी या व्यापार के साझेदार से धन मिलेगा। सरकार से भी फायदा होगा।

परिवार में और जीवनसाथी से मधुर संबंध बनाये रखने के लिए प्रयास करना होगा। कटु वचनों से बचें। आपके पिता को सम्मान और धन प्राप्त होंगे। उन्हें अपने शत्रुओं पर विजय मिलेगी। माता को धनलाभ के अनेक अवसर मिलेंगे। भाई-बहनों के खर्चे बढ़ेंगे; वे वाहन या अचल संपत्ति खरीद सकते हैं। संतान की शिक्षा उत्तम होगी; वे नाम कमाएंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो वेतन में वृद्धि होगी। परामर्शदाताओं की आर्थिक स्थिति बेहतर होगी। व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है।

दांत और मुख की समस्याओं से सावधान रहें। अरिष्ट से बचने के लिए नीले वस्त्र और सतनजा दान करें।

अंतर्दशा :- सूर्य - गुरु
(13/08/2020 - 02/06/2021)

आपके लिए सूर्य की महादशा 16/01/2019 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 13/08/2020 को प्रारंभ होकर 02/06/2021 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शत्रुओं पर विजय होगी। सब सुख उपलब्ध रहेंगे। मामापक्ष से लाभ होगा। आप सबकी सहायता करेंगे। मित्रों का सहयोग मिलेगा। कर्ज़ से मुक्ति मिलेगी। ऋण प्राप्त हो सकता है। आप धनी, जायदाद से युक्त होंगे ; उच्च पद प्राप्त होगा।

जीवनसाथी की यात्राएं होंगी, खर्चे बढ़ेंगे, अचल संपत्ति होगी, जीवन सुखमय होगा। आपके पिता को उच्चपद मिलेगा। माता की यात्राएं होंगी, पत्र व्यवहार आदि बढ़ेंगे। भाई-बहनों की अचल संपत्ति में बढ़ोत्तरी, लाभकारी परिवर्तन, प्रसिद्धि की संभावना है। आपकी संतान की कार्यप्रणाली उत्तम रहेगी, लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो मातहतों का समर्थन मिलेगा। नयी नौकरी या अधिक वेतन की संभावना है। परामर्शदाताओं का समय सौभाग्यशाली रहेगा। व्यापारीगण प्रगति करेंगे और धनवान बनेंगे।

जिगर, तिल्ली, श्वासतंत्र के रोगों और मोटापे से बचाव करें। बुरे वक्त से बचने के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें और पीली वस्तुओं का दान करें।

ऊँ बृं वृहस्पतये नमः

अंतर्दशा :- सूर्य - शनि
(02/06/2021 - 15/05/2022)

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 02/06/2021 को प्रारंभ होगी और 15/05/2022 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपको साझेदारी और अन्य व्यक्तियों से घनिष्ठ संबंधों से लाभ होगा। विवाह, अनुबंध एवं व्यापार से लाभ होगा। विदेश की यात्रा हो सकती है। मान-सम्मान बढ़ेगा। माता से प्रसन्नता मिलेगी। अचल संपत्ति और वाहन का योग है। पिता से संबंधों में सावधानी बरतें।

आपके जीवनसाथी को उत्तम धन, उच्च पद, स्वास्थ्य और घरेलू सुख प्राप्त होंगे। माता भी भाग्यशाली रहेंगी। भाई-बहन प्रगति करेंगे। आपकी संतान परिश्रम करेगी, आप से

उनके संबंध मधुर होंगे, उनका जीवन भाग्यशाली और धन से परिपूर्ण रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो लाभ होगा; वेतन में वृद्धि होगी। परामर्शदाता व्यस्त रहेंगे। व्यापारियों को बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।

पेट के रोग, उदरशूल, थकान से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए भैरव के रूप में शिवजी की आराधना करें।

अंतर्दशा :- सूर्य – बुध
(15/05/2022 - 21/03/2023)

आपकी सूर्य की महादशा 16/01/2019 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 15/05/2022 को प्रारंभ होकर 21/03/2023 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको व्यापार और सट्टेबाजी में लाभ होगा। साझेदारों से लाभ मिलेगा। मुकदमे में विजय होगी। आपका विवाह हो सकता है। जनमानस से व्यापार, व्यवहार द्वारा लाभ हो सकता है। आपको तरक्की, सम्मान, प्रसिद्धि, धन और सुख की प्राप्ति होगी। स्वास्थ्य, पद और अधिकार उत्तम होंगे। आपके बहुत से मित्र होंगे जिनसे लाभ मिलेगा। अध्यात्म में रुचि बढ़ेगी।

आपके जीवनसाथी विदेशियों से व्यवहार और अनुबंधों में सफल रहेंगे। आपके पिता को धन मिलेगा, आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। माता को अचल संपत्ति से लाभ होगा। भाई-बहनों को सट्टेबाजी या निवेश से लाभ होगा, उनकी कोई लंबी मात्रा हो सकती है या उच्चशिक्षा में सफल रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो समय लाभकारी रहेगा। परामर्शदाताओं को सम्मान प्राप्त होगा। व्यापारियों को कार्य में सफलता मिलेगी। आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी, वाक्शक्ति सुदृढ़ रहेगी। उनकी छोटी यात्राएं हो सकती हैं, परिश्रम से सफलता मिल सकती है।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। आपको स्नायविक विकार, पेट के दर्द आदि से सावधान रहना चाहिए। कष्टों से छुटकारे के लिए समाजसेवी संस्थाओं, आश्रम आदि को दान दें।

अंतर्दशा :- सूर्य – केतु
(21/03/2023 - 27/07/2023)

आपके लिए सूर्य की महादशा 16/01/2019 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 21/03/2023 को आरंभ होकर 27/07/2023 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों का कारक है।

इस अवधि में आपको जीवनसाथी या व्यापार के साझेदार के माध्यम से धनलाभ

होगा। आध्यात्मिक प्रगति का संकेत है। अप्रत्याशित धन मिल सकता है। खेलकूद में सफलता मिल सकती है। धन का संचय होगा और परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। कटु बचनों से बचें। उत्तेजित न हों।

आपके जीवनसाथी को धनलाभ और सुविधाएं प्राप्त होंगे। पिता के खर्चे बढ़ेंगे, अध्यात्म में सफलता मिलेगी, यात्राएं होंगी। माता की मंत्र सिद्धि में रुचि होगी, निवेश से लाभ होगा। आपकी संतान की शिक्षा में बाधा आ सकती है, मानसिक कष्ट संभव है। उनकी अंचल संपत्ति में वृद्धि होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो परिश्रम अधिक करेंगे; सहयोगियों से सहायता मिलेगी। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों के कर्ज़ अदा होंगे।

बवासीर, जख्म और चोट से बचें। बीमारी को गंभीर न होने दें। अरिष्ट से बचाव के लिए गणेशीजी की उपासना करें, मंगलवार और शनिवार का उपवास रखें।

अंतर्दशा :- सूर्य - शुक्र
(27/07/2023 - 26/07/2024)

सूर्य महादशा में शुक्र अंतर्दशा होगी।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शत्रुओं पर विजय होगी। मामा और चचेरे-ममेरे भाई-बहनों से लाभ और खुशी प्राप्त होंगे। मुकदमें और अन्य विवाद में सफलता मिलेगी। आय से व्यय अधिक रहेगा। जीवन आनंदमय, चिंतारहित होगा। धन का संचय हो सकता है।

जीवनसाथी या व्यापार में भागीदार के खर्चे अधिक हो सकते हैं। पिता आराम से रहेंगे, साहित्य में रुचि होगी। माता की वाक्शक्ति उत्तम होगी। भाई-बहन अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं; उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन हो सकता है। आपकी संतान भाषण कला में प्रवीण होगी; उन्हें विभिन्न साधनों से धन मिल सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो समय भाग्यशाली रहेगा, आय में वृद्धि होगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को उच्चपद और प्रसिद्धि का योग है। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

उत्सर्जन तंत्र, गुर्दो और जिगर के रोगों से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए कन्याओं को खीर खिलाएं।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। सामान्यतया मिथुन लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ विन्रम शांत एवं हास्य प्रवृति से युक्त होते है। वे बुद्धिमान होते है तथा उनके मुख पर बुद्धिमता की झलक स्पष्ट परिलक्षित होती है परन्तु यदा कदा चंचलता का भाव भी इनमें पाया जाता है ये स्वाभिमानी व्यक्ति होते हैं तथा स्वपरिश्रम योग्यता एवं पराक्रम से जीवन में वांछित सफलताएं अर्जित करते हैं तथा सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों को प्राप्त करके सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं। संगीत एवं कला के प्रति इनकी अभिरूचि रहती है तथा नए सिद्धांतों एवं मूल्यों का प्रतिपादन करने में भी समर्थ रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा अपने समस्त सांसारिक महत्व के कार्यों को बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे। इससे समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आप में सहिष्णुता तथा उदारता का भाव भी विद्यमान रहेगा। अतः अवसरानुकूल सुख दुःख में अन्य लोगों को अपना सहयोग प्रदान करने में तत्पर रहेंगे।

मित्रों के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा सरकारी या उच्चाधिकारी वर्ग से आपके नित्य सम्पर्क रहेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा अन्य लोग आपसे आकर्षित एवं प्रभावित रहेंगे। लेखन गणित तथा व्यापारिक कार्यों में आपकी विशेष रूचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से इन क्षेत्रों में इच्छित उन्नति प्राप्त करके अपना जीवन यापन करेंगे।

लग्न में लग्नेश बुध की राशि के प्रभाव से आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे। आपकी वाणी भी मधुर रहेगी तथा अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का उपयोग करेंगे एवं अपने वाक्चातुर्य से अपने कार्यों को सिद्ध करने में समर्थ होंगे। आपका स्वभाव परिश्रमी होगा तथा परिश्रमपूर्वक आप अपने उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगे जिससे समाज या कार्यक्षेत्र में आप एक सम्मानित पुरूष समझे जाएंगे।

जीवन में इच्छित धनैश्वर्य एवं वैभव को अर्जित करने में आप समर्थ होंगे तथा आयस्रोत भी आपके एक से अधिक होंगे फलतः आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी संगीत कला साहित्य एवं अन्य शास्त्रों पर आपका अधिकार रहेगा तथा अपनी उत्साही एवं पराक्रमी प्रवृति से आप इनमें इच्छित यश तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होने की संभावना रहेगी। साथ ही कृषि या जमीन जायदाद संबंधी लाभ भी आप जीवन में अर्जित कर सकते हैं।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा निष्ठापूर्वक समय समय पर धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। आप एक सदाचारी पुरुष होंगे तथा नैतिकता का अनुपालन करने में सदैव तत्पर रहेंगे। अतः अन्य जन आपको हार्दिक आदर प्रदान करेंगे तथा एक सम्मानित व्यक्ति के रूप में आपका अपने क्षेत्र में प्रभाव रहेगा।

इस प्रकार आप परिश्रमी, उत्साही, साहसी एवं पराक्रम के भाव से युक्त होकर सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में कर्क राशि स्थित है जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप भावुक प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा यदाकदा अधिक बोलने वाली प्रवृति भी रहेगी। समाज में आप एक सम्माननीय व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथायोग्य सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी वाणी भी मधुर होगी तथा अपने विचारों को आप स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने में समर्थ रहेंगे। फलतः सभी लोग आपकी वाणी से प्रभावित होंगे।

पारिवार में सुख शान्ति तथा समृद्धि उत्तम रहेगी तथा परिवार की शान्ति तथा खुशहाली के लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगे। साथ ही संतति से भी आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपको सुन्दर तथा स्वादिष्ट भोजन करना रूचिकर लगेगा। विशेष रूप से मिष्ठान के आप प्रिय रहेंगे तथा रूचिपूर्वक इनका भक्षण करेंगे लेकिन इससे यदा कदा आपको स्वास्थ्य संबंधी परेशानी भी हो सकती है अतः इनकी अधिकता की उपेक्षा करनी चाहिए। साथ ही धार्मिक उत्सवों को भी आप समय समय पर परिवार में आयोजन करते रहेंगे। आप अपने विचारों की पुष्टि में हमेशा ठोस तर्को को प्रस्तुत करेंगे जिसे सभी लोग स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त लकड़ी के व्यापार से आप लाभ अर्जित कर सकते है। इसके अतिरिक्त पुत्रों का आपके प्रति विशेष स्नेह रहेगा तथा आपकी सेवा में वे सर्वदा तत्पर रहेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। इसके प्रभाव से आप एक आदर्श विशाल हृदय तथा साहसी व्यक्ति होंगे तथा अपने संबंधियों, भाई.बहिनों तथा चचेरे भाईयों के प्रति पूर्ण विश्वास रहेगा। आप किसी भी कार्य में उनसे सहयोग या सलाह लेना उचित समझेंगे तथा तभी किसी महत्वपूर्ण कार्य को सम्पन्न करेंगे। साथ ही उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझेंगे। आप हमेशा उनकी गलतियों को भूल जाने की सीमा तक क्षमा करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही इस राशि के प्रभाव से आप उच्चाधिकार तथा प्रशासनिक सेवा को प्राप्त करने में भी सफल हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त भाई बहिनों से सदा आज्ञापालन तथा कर्तव्य परायणता की अपेक्षा करेंगे। यदि वे ऐसा नहीं करते तो आप अत्यन्त ही क्रोधित तथा नाराज होंगे।

आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा आपकी नजर तथा स्मरण शक्ति प्रबल रहेगी तथा काफी समय तक आप किसी भी बात को याद करने में समर्थ रहेंगे। आप उच्च शिक्षा, दर्शन शास्त्र तथा लेखन कार्य संबंधी सफलताएं भी अर्जित करने के लिए यत्नशील रहेंगे। संचार साधनों से भी आप युक्त रहेंगे तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। साथ ही वाहन आदि का सुख भी आपको प्राप्त होगा। आप नीति के भी ज्ञाता होंगे तथा पत्राचार, समाचार.पत्र या लेखन संबंधी कार्यो में रूचिशील रहेंगे। आप प्रायः यात्राशील रहेंगे तथा दूर समीप की यात्राओं से आपको लाभ तथा ख्याति अर्जित होगी । संगीत के प्रति भी सामान्यतया आपकी रूचि रहेगी। प्रकाशन के क्षेत्र में भी आप इच्छुक रहेंगे क्योंकि आपके अन्दर लेखन क्षमता विद्यमान है अतः आप उच्च कोटि के संपादक भी हो सकते है। इसके अतिरिक्त एक योग्य सूचना अधिकारी या संवाद दाता के रूप में भी सफल हो सकते हैं। साथ ही आप शूरवीर, मित्र प्रेमी यदा कदा कटुवक्ता परन्तु अभिमान हीन रहेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त भौतिक सुखसंसाधनों एवं उपकरणों से युक्त रहेंगे तथा आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। बुध के प्रभाव से आप में बुद्धिमता एवं व्यावहारिकता के भाव की प्रधानता होगी फलतः अपने इन्हीं गुणों से जीवन में ऐश्वर्य एवं वैभव की प्राप्ति करेंगे तथा समाज में आपका सम्माननीय स्तर रहेगा।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल संपत्ति को अवश्य प्राप्त करेंगे। संबंधीवर्ग से भी आपको न्यूनाधिक मात्रा में चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आप स्वयं एक बुद्धिमान एवं योग्य व्यक्ति होंगे तथा अपने इन ही गुणों से भी वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति अर्जित करके अपने ऐश्वर्य एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगे।

जीवन में आपको उत्तम गृह की प्राप्ति होगी तथा आपका घर समस्त आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित होगा। घर की सफाई के प्रति आप पूर्ण रूपेण तत्पर होंगे तथा अन्य पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा उनसे संबंधो में पर्याप्त मधुरता होगी। इसके अतिरिक्त युवावस्था में ही आपको उत्तम वाहन की प्राप्ति होगी तथा जीवन में विभिन्न प्रकार से आप वाहन सुख अर्जित करने में समर्थ होंगे।

आपकी माता बुद्धिमान शिक्षित एवं आदर्शवादी महिला होंगी तथा अपनी बुद्धिमता एवं व्यावहारिकता से सभी पारिवारिक जनों को अपनी ओर से सन्तुष्ट रखेंगी। सभी लोग उनका सम्मान एवं आज्ञा का पालन करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट स्नेह एवं वात्सल्य की भावना होगी तथा अवसरानुकूल आपको आर्थिक एवं नैतिक सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आपका भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होग एवं सुख-दुख में उन्हें पूर्ण रूप से सहयोग प्रदान करेंगे जिससे आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी।

आप प्रारंभ से ही बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अध्ययन के प्रति आपकी पूर्ण रूचि होगी एवं प्रारंभिक कक्षाओं से ही अच्छे अंक अर्जित करेंगे। अतः स्नातक परीक्षा आप अच्छे अंकों से उतीर्ण करेंगे तथा अपने उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेंगे। इससे आपके आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा अन्य संबंधियों एवं मित्रों से उचित सम्मान एवं प्रोत्साहन मिलेगा जिससे कार्य क्षेत्र में आप आशातीत उन्नति प्राप्त करेंगे।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में तुला राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से सम्पन्न करेंगें। इससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे साथ ही कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान आप अपनी बुद्धि से करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र में भी आपकी रुचि होगी तथा इन ग्रंथों का अध्ययन करके वांछित मात्रा में ज्ञान अर्जित करेंगे। बुध के प्रभाव से साहित्य या कविता लेखन, गणित एवं ज्यौतिष शास्त्र का ज्ञान भी आपको होगा तथा इस क्षेत्र में कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि भी अर्जित कर सकते है जिससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा एक विद्वान के रूप में आपकी प्रतिष्ठा होगी ।

शुक्र की राशि की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी परंतु आपका प्रेम आदर्शवाद एवं मर्यादा की सीमा में होगा तथा इसको आप केवल मनोरंजन या समय व्यतीत करने का समाधान नहीं मानेगे। अतः आपका प्रेम प्रसंग विवाह के रूप में भी परिवर्तित हो सकता है जिससे आपका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा संतति में कन्याओं की संख्या पुत्र से अधिक होगी लेकिन सभी बच्चे बुद्धिमान एवं गुणवान होंगे तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से जीवन में उन्नति एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर होंगे। माता पिता के वे आज्ञाकारी होंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को माता पिता की सलाह से ही सम्पन्न करेंगे जिससे परस्पर सद्भाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति उनमें विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्या का समाधान माता से ही करवाना अधिक पसंद करेंगे लेकिन मान सम्मान एवं श्रद्धा का भाव माता पिता के प्रति समान रूप से रहेगा।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके बच्चे आशातीत उन्नति करेंगे तथा अच्छे अंको से अपनी परिक्षाओं को उत्तीर्ण करके उज्जवल भविष्य का निर्माण करेंगे। वे उच्च पदों पर भी नियुक्त हो सकते है। इसके वे स्वभाव से विनम्र एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अन्य सामाजिक जन भी उनसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे जिससे आपके सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। अपने बच्चों पर आपको गौरव होगा तथा वे भी वृद्धावस्था में आपकी श्द्धा पूर्वक सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप अपने स्वास्थ्य को अनावश्यक चिन्ताओं एवं उत्तेजनाओं से खराब करेंगे। साथ ही आपको अपने स्वास्थ्य की स्वस्थता के लिए हमेशा सीमित कार्य करना चाहिए क्योंकि अधिक कार्य करना आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं रहेगा। सामान्यतया आप सर्दगर्म से उत्पन्न जुकाम तथा वृद्धावस्था में श्वास संबन्धी रोगों से परेशानी की अनुभूति कर सकते है। इसके साथ ही कन्धों या जोड़ों में भी दर्द की उत्पति हो सकती है। अतः स्वास्थ्य के प्रति आपको पूर्ण सतर्क रहना चाहिए।

मंगल एक तेजस्वी तथा उग्र ग्रह है अतः आपको अनावश्यक रूप से वार्तालाप में कठोर शब्दों की उपेक्षा करनी चाहिए तथा यत्नपूर्वक मधुर वाणी ही बोलनी चाहिए अन्यथा आपको कई प्रकार से अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। आपके उन्नति मार्ग में शत्रु हमेशा व्यवधान उत्पन्न करेंगे अतः आपका जीवन अत्यंत ही परिश्रम पूर्ण रहेगा परन्तु अपनी तेजस्विता एवं चतुरता से शत्रुपक्ष का दमन करने में समर्थ होंगे तथा आपकी कठिनाइयां भी दूर होंगी।

आपके सेवक भी क्रोधी स्वभाव के होंगे तथा आपकी गुप्त बातों को अन्य जनों से कहकर आपके मान सम्मान में न्यूनता करेंगे। अतः आपको नौकरों पर पूर्ण निगरानी रखनी चाहिए तथा उनके सामने कोई भी व्यक्तिगत वार्तालाप नहीं करना चाहिए। आप जीवन की खुशहाली पर निरन्तर व्ययशील रहेंगे अतः कभी कभी व्ययाधिक्य के कारण आर्थिक विषमता उत्तपन्न हो सकती है। साथ ही बीमारी के कारण आपको कर्जा आदि भी लेना पड़ेगा तथा समय पर वापिस न कर पाने के कारण सामाजिक अवमानना होगी। आपको मुकद्दमेबाजी की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। मामा मामियों से आपको इच्छित सुख एवं सहयोग अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा तथापि उनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। आपको सुन्दर स्वादिष्ट भोजन करना अच्छा लगेगा तथा मिष्ठान एवं नमकीन के प्रति विशेष रूचि होगी। परन्तु इनकी अधिक मात्रा तथा नशीली वस्तुओं से हमेशा परहेज रखें अन्यथा शारीरिक परेशानी उत्पन्न होगी तथा वृद्धावस्था में आपको न्यूनाधिक मात्रा में कष्ट भी होगा ।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय सप्तम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा शनि भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया धनु राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी स्वस्थ धनवान एवं सांसारिक कार्यो में कुशल होता है परन्तु शुष्क एवं पापी ग्रह शनि के प्रभाव से स्वभाव में उग्रता गंभीरता एवं मनुष्य भौतिकतावादी होता है एवं भाग्य की अपेक्षा कार्य पर विशेष विश्वास करता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी गंभीर स्वभाव की महिला होंगी तथा बोलने में यदा कदा तेजस्विता का प्रदर्शन करेंगी। वह नित्य परिश्रमशील होगी एवं सांसारिक कार्यो को करने में तत्पर रहेंगी क्योंकि कार्य को वह जीवन में विशेष महत्व प्रदान करने वाली होंगी। लेकिन शुष्क एवं पापी ग्रह शनि के प्रभाव से कर्तव्य परायणता के भाव की उनमे न्यूनता रहेगी तथा स्वार्थ वश अपने कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन नहीं करेंगी।

आपकी पत्नी का वर्ण किंचित श्यामलता लिए आकर्षक होगा तथा उनका कद भी ऊंचा रहेगा लेकिन शरीर में पतलापन होगा परन्तु अंग प्रत्यंग सुडौल एवं दर्शनीय होंगे इससे उनके सौन्दर्य में आकर्षण की वृद्धि होगी। अपने सौन्दर्य की वृद्धि के लिए वह समयानुसार सीमित मात्रा में आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का भी प्रयोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कला के प्रति रूचिशील होंगी एवं कलात्मक वस्तुओं का संग्रह करने में प्रवृत रहेंगी।

सप्तम भाव में शनि के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा तथा इससे पूर्व कोई संबंध भी टूट सकता है। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा परन्तु परिस्थिति वश प्रेम विवाह की भी संभावना हो सकती है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथापि पत्नी के तेजस्वी स्वभाव के कारण अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न हो सकती है तथा वाद विवाद आदि भी होगा इससे यद्यिप आपको काफी परेशानी होगी परन्तु संयम एवं बुद्धिमता से आप स्थिति पर नियंत्रण रखेंगे।

आपकी ससुराल किसी समृद्ध एवं धनवान परिवार से होगा तथा विवाह में आपको दहेज के रूप में वांछित धन सम्पति की प्राप्ति होगी। साथ ही बहुमूल्य वस्तुएं एवं उपकरण भी उपहार स्वरूप मिलेंगे। सास ससुर के साथ आपके संबंध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथापि अपनी ओर से सामान्य संबंध बनाए रखने में यत्नशील होंगे।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की विशेष श्रद्धा नहीं होगी तथा उनकी यथोचित सेवा कम ही करेंगी। देवर एवं ननद भी उसके तेजस्वी व्यवहार से अप्रसन्न रहेंगे तथा इच्छित सहयोग एवं सम्मान प्रदान नहीं करेंगे इससे परिवार में अशांति का भाव विद्यमान रहेगा।

व्यापार या किसी योजना में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल नहीं होगी तथा इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। अतः साझेदारी की जीवन में यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप व्यावहारिक तथा आधुनिक विचार धारा के व्यक्ति होंगे फलतः ज्यौतिष या तंत्र मंत्र के प्रति आपकी कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी। साथ ही जीवन में अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को स्वपराक्रम एवं परिश्रम से सम्पन्न करने में व्यस्त रहेंगे तथा मित्रों के कहने पर भी आप की ज्योतिष आदि पर कोई श्रद्धा नहीं होगी। आपको पैतृक सम्पत्ति प्रचुर मात्रा में प्राप्त होगी तथा परिश्रम पूर्वक धीरे धीरे इसमें उन्नति करेंगे। अपने कौशल से आप एक धनवान पुरूष माने जाएंगे लेकिन जुए या सट्टे आदि की आपको प्रायः उपेक्षा करनी चाहिए।

शादी के समय आपको ससुराल पक्ष से इच्छित दहेज की प्राप्ति होगी तथा वे लोग आपसे अत्यधिक प्रभावित रहेंगे फलतः सामान्य से अधिक धन एवं लाभ आभूषण आदि की आपको प्राप्ति होगी। इससे आप आराम दायक जीवन व्यतीत करने में सफल रहेंगे। बीमे आदि से आपको लाभ होगा अतः मकान गाड़ी या स्वयं का आपको बीमा अवश्य कराना चाहिए। यद्यपि इसमें आपको हानि अधिक नहीं होगी परन्तु बीमे से आपको धन अधिक मात्रा में प्राप्त होगा। जीवन में आपके यहां चोरी आदि की बड़ी घटनाएं नहीं होगी तथापि यदा कदा सामान्य घटनाएं घटित हो सकती है। अतः सुरक्षा की दृष्टि से बहूमूल्य वस्तुओं को संभालकर रखना चाहिए। आप सजग प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे। अतः जीवन में दुर्घटनाएं नहीं होगी। आपकी आयु दीर्घ होगी तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आप जीवन व्यतीत करेंगे। शारीरिक स्वस्थता को बनाए रखने के लिए आपको नित्य प्रति व्यायाम भी करना चाहिए।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा धार्मिक साहित्य का रूचिपूर्वक अध्ययन करेंगे साथ ही उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी रूचिशील रहेंगे। आपका मुख्य उददे्श्य कोई सिद्धि प्राप्त करना रहेगा जिसके द्वारा आप समाज में मान सम्मान धन एवं ख्याति अर्जित कर सकेंगे। ज्योतिष अथवा तंत्र मंत्र शास्त्र में भी आपकी रूचि हो सकती है।

ईश्वर के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा पूर्ण विश्वास भी रहेगा। आपके विचार में कर्म की कोई विशेषमहत्ता नहीं है जब तक कि उसे भाग्य की पूर्ण सहायता न मिलें तभी कर्म करके मनुष्य विशिष्ट सफलताएं प्राप्त कर सकता है। अतः अपने इष्ट देव की नियमित रूप से पूजा करेंगे। आपके विचार में परिवार में समय समय पर धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करने से बच्चों के शुभ संस्कारों के वृद्धि होती है। जीवन में आप कई तीर्थ स्थलों की यात्रा करेंगे। साथ ही विद्वान एवं साधु महात्माओं की संगति से आपको प्रसन्नता तथा सन्तुष्टि प्राप्त होगी।

आपको व्यावसयिक तथा आनन्द प्रदान करने वाली लम्बी दूरी की यात्राओं से काफी ज्ञान प्राप्त होगा। अतिथि को आप भगवान का स्वरूप समझकर उनकी सेवा करेंगे। पौत्रों से आपको इच्छित सुख एवं आनन्द की प्राप्ति होगी। वास्तव में इस जीवन में आप पूर्व जन्म के कर्मो के फल को प्राप्त करते है। आपके स्तर धनऐश्वर्य आराम तथा उपलब्धियों से संकेत मिलता है कि निश्चित ही आपने पूर्व जन्म में कोई शुभ कर्म किए होंगे। वृद्धावस्था में आपके मन में वैराग्य की भावना भी उत्पन्न हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप दैवी कृपा से धनार्जन करने वाले, रास्ता, बगीचा, तालाब तथा मन्दिर आदि परोपकार के लिए बनवाने में भी सफल रहेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। साथ ही मंगल भी दशम भाव में स्थित है। मीन राशि जलतत्व तथा मंगल अग्नितत्व ग्रह होने के कारण आपका कार्य बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा। साथ ही जलतत्व के प्रभाव से इसमें समय समय पर अनुकूल परिवर्तन भी करते रहेंगे जिससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा। कार्य क्षेत्र में उन्नति में गतिशीलता बनी रहेगी जिससे मानसिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए डाक्टर, इंजीनियर, पुलिस, सेना, विद्युत एवं ऊर्जा विभाग विद्युत फैक्टरी, होटल कर्मचारी या अग्नि से संबंधित विभाग तथा अन्य पराक्रमी क्षेत्र शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों या विभागों में कार्यरत होने से आपको यथोचित समय पर वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा उच्चपद पर पहुँचने में आप समर्थ होंगे। साथ ही किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का भी सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको चाहिए कि अपने उज्जवल भविष्य के लिए उपरोक्त क्षेत्रों या विभागों में ही अपने कार्यक्षेत्र का चयन करें।

व्यापार के क्षेत्र में आप शस्त्रों का व्यापार, विद्युत उपकरण, इंजीनियरिंग उपकरण दवाइयों का व्यापार, रासायनिक पदार्थ, होटल एवं जमीन जायदाद संबंधी क्रय विक्रय आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में व्यापार करने से आपको वांछित लाभ की प्राप्त होगी तथा उन्नति के शिखर पर पहुंचने में आप सफल रहेंगे तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

दशमभाव में दिग्वली मंगल की मित्रराशि में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको विशिष्ट मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। साथ ही सौभाग्यवश यश एवं प्रसिद्धि भी समाज में व्याप्त होगी परन्तु नैसर्गिक पापी ग्रह मंगल की स्थिति के प्रभाव से यह किंचित विलम्ब एवं व्यवधानों के उपरांत प्राप्त होगी। अतः इससे आपको विचलित नहीं होना चाहिए तथा परिश्रम तथा बुद्धिमतापर्वक अपने कार्यकलापों को करने में तत्पर रहना चाहिए।

आपके पिता तेजस्वी पराक्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। साथ ही समाज में सभी लोग उनके उत्तम कार्य कलापों से प्रभावित होंगे तथा उन्हें वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा वात्सल्य की भावना रहेगी तथा आपकी शिक्षा दीक्षा का समुचित प्रबंध करेंगे। साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति तथा स्थायित्व में उनका विशेष योगदान रहेगा एवं पिता के प्रभाव से आपको कार्यक्षेत्र में वांछित सफलता की प्राप्ति होगी। आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा का पालन करने में तत्पर होंगे परंतु यदा कदा वैचारिक तथा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकते है जिससे यदा कदा संबंधों में कटुता का आभास होगा परन्तु यह क्षणिक होगा तथा सामान्यतया संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा आपकी इच्छाएं अधिक रहेंगी। साथ ही इच्छाओं एवं महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करने में भी सामान्यतया सफल ही रहेंगे। आपके अन्दर संगठनात्मक शक्ति विद्यमान रहेगी तथा अन्य लोगों को संगठित एवं नियंत्रित करके उनसे अपना कार्य करवाने में समर्थ रहेंगे। अतः आप प्रबन्धक, पुलिस या मिलिटरी आदि में विशिष्ट सफलता अर्जित कर सकते है। साथ ही होटल आदि के व्यवसाय से भी आपको प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित हो सकता है। बड़े भाईयों से आपको विशेष सहयोग समय समय पर मिलता रहेगा तथा आपात्काल में भी वे आपकी सहायता करेंगे।

आप अच्छी एवं अधिक मित्र मंडली को पसन्द करेंगे। साथ ही उत्साही पराक्रमी निडर तथा शिक्षित व्यक्तियों को अपना मित्र बनाना पसन्द करेंगे। आपकी प्रवृत्ति स्वछन्द रहेगी तथापि अन्य जनों के साथ कार्य करने में आपको आनन्दानुभूति होगी। आपके सामाजिक सम्पर्क विस्तृत रहेंगे तथा सभी सामाजिक जन आपको यथोचित मात्रा में सहयोग तथा सम्मान प्रदान करेंगे तथा एक आदरणीय व्यक्ति के रूप में आपकी ख्याति रहेगी। आपके आय स्रोत भी विस्तृत रहेंगे एवं समाज में विशिष्ट ख्याति एवं सम्मान के भी योग बनेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति प्रायः अच्छी रहेगी तथा अपने कार्यो से प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा परन्तु यदा कदा बाएं कान से आपको किंचित परेशानी हो सकती है परन्तु सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक ही व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है अतः इसके प्रभाव से आपका जीवन परिवर्तशील रहेगा तथा सामान्यतया आप खुशहाल जिंदगी व्यतीत करेंगे। धनार्जन के लिए आप विभिन्न स्रोतों को बनाने में सफल रहेंगे अतः आपकी आय के स्रोत एक से अधिक होंगे परन्तु आप उन्मुक्त रूप से धन का व्यय करेंगे तथा पारिवारिक शान शौकत एवं विलासमय वस्तुओं पर आपका विशेष व्यय होगा। यदा कदा आप पूंजी निवेश भी करेंगे जिससे आपको भविष्य में लाभ होगा।

आधुनिक भौतिक उपकरणों के प्रति आपके मन में तीव्र लालसा रहेगी तथा इन पर धन का अधिकांश व्यय करेंगे इससे आप मानसिक सन्तुष्टि, आनन्द तथा खुशहाली की अनुभूति करेंगे। आप समय समय पर दूर समीप की यात्राओं को सम्पन्न करते रहेंगे। इनमें तीर्थ यात्राओं की भी प्रबल संभावना रहेगी। आपकी यात्राएं सामान्यतया व्यापार या आफिस कार्य से संबंधित रहेंगी तथा एक स्थान से दूसरे स्थान पर यात्रा करना रूचिकर समझेंगे। यात्राओं के मध्य यदि आप शीघ्र ही सक्रिय रहेंगे तो इससे आपको इच्छित लाभ की प्राप्ति भी हो सकती है। यात्रा में आपकी कई पुराने तथा नए लोगों से मुलाकात होगी तथा हर जगह उचित वातावरण बनाने में समर्थ रहेंगे।

जीवन में आपकी विदेश यात्रा भी होगी तथा इससे आपके भाग्य में वृद्धि होगी कुछ समय के पश्चात आप विदेश में भी प्रवास कर सकते हैं जहां आपका जीवन सुखऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त रहेगा। इससे आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा आनंद पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे ।

वार्षिक फलादेश - 2019

इस वर्ष शनि धनु राशि में सप्तम भाव में रहेंगे। 23 मार्च को राहु मिथुन राशि में प्रथम भाव में प्रवेश करेंगे। 29 मार्च को गुरू धनु राशि में सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 23 अप्रैल को वृश्चिक राशि में षष्ठम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 05 नवम्बर को धनु राशि में सप्तम भाव में आजाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। सप्तम स्थान में शनि के प्रभाव से आप धीरे धीरे व्यापार में उन्नति करेंगे। आप किसी नयी योजना की तलाश में होंगे और बहुत जल्दी ही अपनी गुप्त योग्यताओं के चलते किसी बड़ी कम्पनी के साथ मिलकर कार्य प्रारंभ करने में सफल हो सकेंगे।

29 मार्च से 23 अप्रैल तक आप व्यापार में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं। दशमेश गुरू के षष्ठ स्थान में जाने के कारण नौकरी करने वालों के लिए अनुकूल है। आपका स्थानान्तरण आपके अनुकूल स्थान पर हो सकता है।

धन संपत्ति

वर्षारंभ में द्वितीय स्थान पर राहु की स्थिति आर्थिक उतार चढ़ाव का योग बना रही है। अचानक कुछ ऐसे खर्चे आ जाएंगे। जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

23 मार्च के बाद आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरू हो जाएगा और उसके बाद वर्ष भर आपकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारंभ में परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। आपको अपने जीवनसाथी के स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना होगा।

23 मार्च के बाद पारिवारिक स्थिति में उत्तरोत्तर सुधार होता जायेगा। यदि आप विवाह योग्य हैं तो आपका विवाह हो सकता है। संतान के लिए यह वर्ष बहुत अनुकूल नहीं है। मार्च अप्रैल के मध्य अचानक आई व्यावसायिक उन्नति से आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष बहुत अनुकूल नहीं है। षष्ठस्थान में गुरू ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा नहीं होता। इस वर्ष आपको अपनीसंतान को लेकर चिन्ताएं बढ़ सकती हैं। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है।

23 मार्च के बाद पंचम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि होगी। उस समय गर्भपात की व संतान के स्वास्थ्य के प्रभावित होने के योग हैं। उनकी पढ़ाई लिखाईभी प्रभावित हो सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अनुकूल नहीं है। गुरु के छठे स्थान में होने के कारण पेट संबंधित बीमारी हो सकते है। यदि आप खान-पान पर विशेष ध्यान नहीं देंगे तो इसका नकारात्मक प्रभाव स्वास्थ्य पर पड़ेगा।

तनाव कम करने के लिए इस अवधि में आप अपने मन को एकाग्रकर समाधि और योग क्रियाओं को कर सकते हैं। इससे उत्साह का संचार होगा और आप अपने को अच्छा बनाए रखने में कामयाब रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष विद्यार्थियो के लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए अनुकूलपरंतु वर्षारंभ में कुछ कठिनाईयां आ सकती हैं।

23 मार्च के बाद आत्मविश्वास में वृद्धि होगी व उच्च शिक्षा के अभिलाशी जातक अपनी रुचि अनुसार कार्य क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर पायेंगे।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष ठीक ठाक रहेगा। सप्तम स्थान का शनि व्यापारिक व्यक्तियों को व्यवसाय से सम्बन्धित यात्रा कराएंगे। यह यात्रा आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होंगी।

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा कर सकते हैं। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो के लिए समय बहुत अनुकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धर्म कार्य के लिए यह वर्ष सामान्य फल दायक रहेगा। नित्य पूजा पाठ करते रहेंगे। लेकिन नवम स्थान पर शनि राहु के दृष्टि प्रभाव से कोई विशेश पूजा करने में बाधा उत्पन्न हो सकती है।

- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थपीत करें और नित्य उसका पूजन करे।
- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए काफी अशुभ तथा परेशानियां उत्पन्न करने वाला रहेगा। इस समय आप स्त्री तथा बन्धु जनों से कष्ट प्राप्त करेंगे एवं शत्रुओं से भी चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे जिससे मानसिक रूप से आप उद्विग्न रहेंगे। इस मास में आपके उत्साह में भी न्यूनता आएगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आपकी आर्थिक स्थिति भी कमजोर होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा एवं मन में लोलुपता के भाव की प्रधानता रहेगी। अपने बन्धु एवं मित्रों से भी आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा अनावश्यक तनाव तथा वैमनस्य का भाव बना रहेगा। साथ ही इस समय आपके मित्र भी शत्रु के समान व्यवहार करेंगे इसके अतिरिक्त समाजिक जनों से भी विवाद होते रहेंगे जिससे आप काफी दुःखी एवं अशान्त रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप वायु द्वारा उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा जाने अनजाने किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी समाज में अवमानना होगी एवं बाद में पश्चाताप भी करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा भी आपको धन हानि का योग बनता है अतः सोच समझकर अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

फरवरी 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए मध्यम रहेगा तथा शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को आप प्राप्त करेंगे। इस समय शत्रु पक्ष प्रबल होने से आप उनसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे साथ ही घर में चोरी होने की भी संभावना रहेगी। इस मास में धन का व्यय अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक रूप से भी आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा। इस समय आप शारीरिक रूप से भी अस्वस्थ रहेंगे एवं अन्य कई प्रकार से शारीरिक एवं मानसिक कष्टों को प्राप्त करेंगे। अतः शारीरिक बल की भी आप में न्यूनता रहेगी। इस मास में आप दूर या समीप की यात्रा भी कर सकते है। आपके सांसारिक कार्यों में कई प्रकार से विध्न बाधाएं आएंगी अतः इन्हें समय पर पूर्ण करने में आप असमर्थ रहेंगे। साथ ही मुकद्दमें आदि कार्य में भी आपके धन का अपव्यय हो सकता है। अतः सोच समझकर बुद्धिमता से अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फलों को भी प्राप्त करेंगे।अतः आप स्त्री एवं पुत्र से सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा इस समय आप नवीन वस्त्र या अन्य द्रव्यों को भी अर्जित कर सकेंगे जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी।

मार्च 2019 के लिए फलादेश

इस मास में आप अधिकांश शुभ फल अर्जित करेंगे परन्तु अल्प मात्रा में अशुभ

फल भी घटित होते रहेंगे। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेगा। साथ ही इस महीने में आप किसी धार्मिक उत्सव या कार्यक्रम का भी आयोजन कर सकते है। संतति पक्ष से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनकी तरफ से आपको कोई चिन्ता नहीं रहेगी साथ ही धार्मिक क्षेत्र में आपकी श्रद्धा में वृद्धि होगी एवं देवता तथा ब्राहमणों का आप श्रद्धा पूर्वक पूजन तथा सेवा करेंगे। समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में इस समय में पूर्ण वृद्धि होगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य में भी आपको सफलता प्राप्त होगी।

इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव रहेगा तथा लाभ दायक यात्रा का भी योग बनेगा। उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान प्राप्त होगा ।मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको उचित सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा। इस समय आप समाज में सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाएंगे।

परन्तु इस मास में आप गर्मी या पित्तादि से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही रक्त विकार का भय भी रहेगा अतः सावधानी तथा सतर्कता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

अप्रैल 2019 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा समाज में पूर्ण मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से आप सहयोग तथा सम्मान भी प्राप्त करेंगे तथा ये लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आप पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनकी भलाई के कार्यो को करने में भी तत्पर रहेंगे।आपके कई विलम्बित शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास सम्पन्न होंगे जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधि पूर्वक आप इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे। संतति पक्ष से भी आप पूर्ण सुखी रहेंगे तथा मित्रों एवं बन्धुओं के मध्य आप की मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।साथ ही आपकी असफल आशाएं भी इस समय सिद्ध होगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस समय आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग भी प्राप्त करने में सफल रहेंगे।आपकी बुद्धि भी इस समय निर्मल रहेगी एवं प्रचुर मात्रा में संपूर्ण मास धनार्जन होता रहेगा। धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा में वृद्धि होगी तथा समाज में आप पूर्ण यश तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।

मई 2019 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आप स्त्री वर्ग से पूर्ण लाभ एवं सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे ।सरकार या

उच्चाधिकारी वर्ग से लाभार्जन करने में भी इस मास में सफलता प्राप्त करेंगे ।शारीरिक रूप से आप पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा मन भी प्रसन्नता से युक्त रहेगा। अध्ययन या ज्ञानार्जन में भी आपकी तीव्र रूचि रहेगी। मित्रों तथा संबधियों से आपके संबध मधुर एवं घनिष्ठ रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस मास आपको वांछित द्रव्यों की प्राप्ति होगी जिसके उपभोग से आप सुखी तथा निश्चिंत रहेंगे। साथ ही बन्धु वर्ग में प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा असफल आशाओं में भी आप सफलता प्राप्त करेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य महिला सहयोगियों से भी वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे जिससे आपके कई शुभ कार्य सिद्ध होंगे। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा उचित धन लाभ एवं सुख प्राप्त करने में भी आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाज में आप पूर्ण यश अर्जित करने में सफल रहेंगे।

जून 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त मध्यम रहेगा। इस समय आपका व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट मनुष्यों के साथ में रहेंगे अतः आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रहेंगे। साथ ही शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ तथा दुर्बल रहेंगे। इस मास में अत्यधिक परिश्रम के पश्चात भी आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप उचित पूजन तथा सम्मान नहीं करेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी हानि होती रहेगी तथा मित्रों एवं संबधियो से भी मधुर संबध नहीं रहेंगे।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आपको शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः महिला सहयोगियों से आप लाभार्जन करेंगे तथा आपकी बुद्धि में भी निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी फलतः उचित लाभ एवं सुख प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। इसके साथ ही समाज एवं सामाजिक जनों से भी आप यश एवं सम्मान प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

जुलाई 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत सुख एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला होगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मन से भी आप पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रु वर्ग निर्बल एवं आपसे पराजित रहेगा। इस समय आपके लाभ मार्ग भी उन्नति की ओर अग्रसर रहेंगे फलतः आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी एवं धनाभाव नहीं रहेगा। साथ ही व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करने में सफल रहेंगे इस मास में आपकी भाग्योन्नति भी होगी तथा तथा कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी सम्पन्न होंगे तथा काफी समय से रूके हुए कार्य भी सम्पन्न हो जाएंगे। बन्धु एवं मित्रों से आपके घनिष्ठ संबध रहेंगे एवं सम्सत सांसारिक कार्यो को आप अपने बुद्धिचातुर्य से सफल बनाएंगे। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न एवं

सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आप उचित सहयोग तथा लाभ भी अर्जित करेंगे।

साथ ही इस मास में आप श्रेष्ठ जनों एवं उच्चाधिकार प्राप्त लोगों से सम्मान अर्जित करेंगे। इस समय आपके आजिविका संबधी कार्य में भी उन्नति एवं दृढ़ता का आभास होगा तथा दूर समीप की कोई लाभदायक यात्रा भी कर सकते है। साथ ही नवीन वस्त्रों या द्रव्यों की भी आप प्राप्ति करने में सफल रहेंगे। अतः आपके लिए यह मास शुभ रहेगा।

अगस्त 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभ एवं शान्ति प्रदान करने वाला सिद्ध होगा। इस समय आप अपने उत्साह से धनार्जन करेंगे तथा आर्थिक स्थिति को सुधारने में सफल रहेंगे। इस मास आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध होंगे। साथ ही इनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे एवं उनसे आपको वांछित सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा। इस समय आप मिष्ठान का उपभोग भी अधिक मात्रा में कर सकेंगे। इस मास आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा फलतः शारीरिक बल में पूर्ण वृद्धि होगी। शत्रु वर्ग को पराजित करने में भी आप सफलता प्राप्त करेंगे तथा वे आपसे भयभीत रहेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यो से भी आप धन अर्जित करने में सफल रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं अन्य महिला सहयोगियों से भी वांछित सहयोग एवं लाभ प्राप्त होगा। आपकी बुद्धि भी इस समय निर्मल रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होता रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा समाज में आपका यश व्याप्त रहेगा।

सितम्बर 2019 के लिए फलादेश

इस मास में आप उत्तम फल प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज से भी आपको यथोचित मान सम्मान एवं यश प्राप्त होगा। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा विधि पूर्वक आप इनका पूजन तथा सत्कार करेंगे। दूसरे लोगों की भलाई के लिए भी आप इस मास तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा तथा मान प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त भाइयों से आपको इस समय पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा आपके मानसिक विचार एवं संकल्प भी पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से सुख प्राप्त करेंगे एवं अपनी बुद्धिमता से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता भी अर्जित करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा भाव उत्पन्न होता रहेगा। इस प्रकार यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक रहेगा।

अक्तूबर 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथा अशुभ फल अधिक मात्रा में होंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आपको शारीरिक कष्टानुभूति होगी। साथ ही शत्रु वर्ग से भी आप भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे जिससे आप मानसिक रूप से भी अशान्त रहेंगे। पारिवारिक जनों से भी इस समय आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा अनावश्यक रूप से संबधों में तनाव विद्यमान रहेगा। आपके व्यापार या कार्यक्षेत्र में भी हानि या मंदी के योग बनेंगे। साथ ही स्थान या कार्य क्षेत्र में परिवर्तन भी कर सकते है। समाज में भी अधिकाशं लोगों से आपके विवाद होते रहेंगे जिसके कारण उनसे कटुता का व्यवहार रहेगा फलतः आपके समाजिक सम्मान में अल्पता आएगी। इसके अतिरिक्त शरीर में रोग तथा धन हानि भी हो सकती है।

साथ ही इस मास गर्मी या पित्तादि दोषों से भी अस्वस्थ रहेंगे। इस समय किसी कारण से रक्त विकार होने की भी संभावना रहेगी इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी किसी प्रकार से धन हानि हो सकती है। अतः इस समय आप सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

नवम्बर 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक रहेगा। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता की वृद्धि होगी तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न करेंगे। इस मास आप संतति पक्ष से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ अर्जित करने में भी सफल रहेंगे। इस समय आपके प्रभुत्व में भी वृद्धि होगी तथा अन्य लोग आपके प्रभुत्व को हृदय से स्वीकार करेंगे एवं आपका हार्दिक सम्मान भी करेंगे। आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे तथा किसी शुभ समाचार को भी प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों की भी आप श्रद्धा पूर्वक पूजन एवं सम्मान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य या उच्चाधिकारी वर्ग से लाभार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे।साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा आपकी मनोकामनाएं पूर्ण होगी फलतः मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप पुत्र तथा स्त्री से भी वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे तथा नवीन वस्त्र या द्रव्यों की भी आप प्राप्ति कर सकते है। इस प्रकार आपका यह मास सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा।

दिसम्बर 2019 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ फलदायक रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा फलतः आप शारीरिक रूप से दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। साथ ही शत्रु पक्ष के प्रबल होने से उनकी तरफ से भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे अतः मन में भी अशान्ति रहेगी। आपके घर में इस मास चोरी भी हो सकती है अतः चोरों से सावधान रहें। साथ ही अपने उच्चाधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग रखें एवं उनकी आज्ञा का पालन करें अन्यथा आपको दण्डित

भी किया जा सकता है। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास अल्प मात्रा में ही सम्पन्न होंगे तथा धन का व्यय भी अनावश्यक तथा अधिक होगा।साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिसके लिए आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा।संबधियों एवं मित्रों से आपके संबधों में तनाव रहेगा एवं समाज से भी आप अपने को उपेक्षित महसूस करेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगी ।

साथ ही इस समय आप वातोत्पन्न रोगों से भी पीड़ित रहेंगे। अग्नि के द्वारा भी आप न्यूनाधिक धन हानि प्राप्त करेंगे अतः सोच समझकर अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें जिससे अनावश्यक कष्ट न हों।

वार्षिक फलादेश - 2020

इस वर्ष शनि 24 जनवरी को मकर राशि में अष्टम भाव में प्रवेश रहेंगे। वर्ष के प्रारम्भ में राहु मिथुन में प्रथम भाव में होंगे और 19 सितम्बर के बाद वृष राशि में द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 30 मार्च को गुरु मकर राशि में अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे एवं वक्री होकर 30 जून को धनु राशि में सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 20 नवम्बर को मकर राशि में अष्टम भाव में आजाएंगे। 31 मई से 8 जुन तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का सामान्य रहेगा। सप्तम स्थान का गुरु व्यवसाय में सफलता व साझेदारी में सफलता का योग बना रहे है। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा और आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे परन्तु अष्टमस्थ शनि के चलते आपको कुछ रुकावटों का सामना भी करना पड़ेगा।

इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की सम्भावना कम है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग तो मिलेगा परन्तु आप उसका पूरी तरह से लाभ नहीं उठा पायेंगे। 30 मार्च से जून प्रयन्त गुरु एवं शनि का गोचर अष्टम स्थान में होगा। इस समय के अंतराल कोई नया व्यापार प्रारम्भ न करें। जो काम कर रहें है उसमें भी सावधानी की आवश्यकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि कोण से यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान पर शनि की दृष्टि आर्थिक स्थिति के लिए शुभ नहीं है। 23 मार्च के बाद राहु ग्रह का गोचर द्वितीय स्थान में होगा। उस समय अचानक आपका खर्च बढ़ सकता है। किसी को उधार पैसा न दें तथा अनावश्यक खर्च से बचें।परिवार में किसी मांगलिक कार्य में धन का व्यय हो सकता है। निवेश के मामले में जल्दबाजी न करें।

30 मार्च से जून पर्यन्त गुरु एवं शनि का गोचर अष्टम स्थान में होगा। उस समय आपको पैतृक संपत्ति अथवा अनायास स्वल्प धन लाभ हो सकता है।आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस पर विचार करना बहुत जरुरी है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य फलदायक रहेगा। परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। मार्च के बाद द्वितीय स्थान में गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समृद्धि के साथ साथ कुछ परेशानियों का आगमन हो सकता है।

29 जून के बाद भी पारिवारिक अनुकूलता भंग रह सकतीहै तथा कुछ विषम परिस्थितियां भी निर्मित हो सकती हैं। अतः अच्छा तो यही रहेगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। उच्च शिक्षा प्राप्त करने मेंसफलता मिलेगी। सर्व प्रकारेण बच्चों की उन्नति होगी।

यदि आप का दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है। तो उसका विवाह संस्कार हो जाएगा। मार्च से जून पर्यन्त गुरू ग्रह का गोचर अष्टम स्थान में होगा। यह समय सन्तान के स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं है। 19 सितम्बर के बाद समय फिर से अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा।मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। 30 मार्च से जून पर्यन्त गुरू ग्रह का गोचर अष्टम स्थान में होगा। इस समय के अंतराल आपका स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है। अचानक आप बीमार हो सकते है।

जुलाई से समय आपके स्वास्थ्य के लिए धीरे धीरे अनुकूल होना शुरु हो जाएगा। 19 सितम्बर के बाद पूर्ण रूप से अनुकूल हो जाएगा। कभी-कभी मौसम जनित बीमारिया होंगी भी तो जल्दी ही आप अच्छे हो जाएंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है।

व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए समय अच्छा है। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढ़िया रहेगा। परन्तु 30 मार्च के बाद मानसिक भटकाव के कारण पढ़ाई में अरूचि उत्पन्न हो सकती है। वर्ष के अन्तिम भाग में इस परिस्थिति से छुटकारा मिल जायेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में व्यापारिक व्यक्तियों को व्यवसाय से संबंधित यात्राए होंगी। आपकी धार्मिक यात्राओं में बाधा आ सकती है।

30 मार्च से जूनपर्यन्त अष्टम स्थान में शनि एवं गुरू ग्रह के युति प्रभाव से समुद्र यात्रा के योग बन रहें है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में आप नित्य पूजा पाठ करते रहेंगे। लेकिन 30 मार्च से जून पर्यन्त गुरू ग्रह का गोचर अष्टम स्थान में होगा। उस समय पूजा पाठ कर पाने में बाधा आएंगी।वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप धार्मिक कार्य संपन्न करेंगे।

- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।

• द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
• पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2020 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आप स्त्री तथा बन्धु वर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे अथवा इनको किसी प्रकार का कष्ट हो सकता है। साथ ही शत्रु पक्ष भी प्रबल रहेगा जिससे वे आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे अतः उनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस समय आपमें उत्साह के भाव की अल्पता रहेगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। जिससे आप आर्थिक संकट भी प्राप्त कर सकते है। आपके मन में इस मास में लोभ के भाव की बहुलता रहेगी तथा शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा मित्रों एवं बन्धु वर्ग से संबधों में इस समय तनाव रहेगा तथा मित्र भी शत्रुओं की तरह व्यवहार करेंगे। अतः हृदय से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही पारिवारिक तथा अन्य सामाजिक जनों से भी परस्पर वाद विवाद होते रहेंगे अतः संयम पूर्वक समय को व्यतीत करना चाहिए जिससे अनावश्यक कष्ट न हों।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फलों को भी प्राप्त करेंगे। इससे आप स्त्री एवं पुत्र से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे एवं इनसे आप पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इसके साथ ही इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे जिससे मानसिक रूप से आप प्रसन्न रहेंगे।

फरवरी 2020 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा अतः इस समय शत्रु पक्ष से आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे तथा आपके लिए वे अनावश्यक समस्याएं भी उत्पन्न करेंगे। साथ ही इस समय आपके घर में चोरी होने की भी संभावना रहेगी तथा अनावश्यक व्यय भी होगा एवं शुभ कार्यो में विध्न बाधाएं भी उत्पन्न होंगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी इस समय अच्छी नहीं रहेगी एवं धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा तथा इसके अनुपालन में भी उपेक्षा का भाव रखेंगे। आप इस समय शरीर से भी अस्वस्थ रहेंगे एवं कई प्रकार से कष्ट भी प्राप्त करेंगे जिससे आपकी शारीरिक शक्ति में अल्पता आएगी। इस मास में आप दूर की किसी यात्रा को भी संम्पन्न कर सकते है। सांसारिक कार्यो में भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी धन व्यय होगा अतः मानसिक रूप से भी आप असन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित्त दोष से उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। इस समय किसी प्रकार का रक्त विकार भी हो सकता है तथा अग्नि आदि से भी आप धन हानि प्राप्त कर सकते है। अतः सतर्कता पूर्वक अपने समय को व्यतीत करें जिससे अनावश्यक कष्ट तथा बाधाएं उत्पन्न न हों।

मार्च 2020 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ तथा सौभाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप मात्रा में लाभार्जन करेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य समय से सम्पन्न हो जाएंगे। इस मास आपके घर में कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न हो सकता है। संतति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपकी श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इस समय समाज में आपका यश दूर दूर तक फैलेगा तथा भाग्योदय संबधी कार्य शीघ्र सम्पन्न होते रहेंगे। आपकी बुद्धि भी निर्मल रहेगी तथा इस मास में आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी करेंगे।साथ ही उच्चाधिकारियों से मान एवं सम्मान अर्जित करेंगे तथा बन्धु एवं मित्रों से अत्यंत ही मधुर संबध रहेंगे एवं एक दूसरे से वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार समाज में सर्वत्र आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करेंगे तथा अपनी बुद्धिचातुर्य से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी सफल रहेंगे। इस प्रकार सम्पूर्ण मास विविध प्रकार के सुखों को उपभोग करते हुए व्यतीत करेंगे तथा समाज से यश भी अर्जित करेंगे।

अप्रैल 2020 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने कार्य क्षेत्र में विशेष सफलता तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही आपके अधिकारी तथा वरिष्ठ सहयोगी भी आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आप पदोन्नति के अधिक अवसर प्राप्त करेंगे। बन्धु तथा मित्र वर्ग से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करेंगे तथा उनकी भलाई के कार्यो के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सफल होंगे अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे तथा आपकी ख्याति भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगी। साथ ही अन्य प्रकार से भी लाभार्जन होता रहेगा। इसके अतिरिक्त इस महीने आप नवीन गृह या स्थान की प्राप्ति भी कर सकते है तथा आपकी मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से भी पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप अन्य प्रकार से सुख तथा ऐश्वर्य अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा सुख पूर्वक इस मास को व्यतीत करेंगे।

मई 2020 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक रहेगा इस समय स्त्री वर्ग से आपको पूर्ण लाभ प्राप्त होगा तथा आपके सौभाग्य में भी वृद्धि होगी। जिससे आपके समस्त

शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध होंगे फलतः मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट तथा शान्त रहेंगे। साथ ही सरकार तथा उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप उचित लाभ एवं सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय उत्तम रहेगा एवं ज्ञानार्जन के क्षेत्र में भी आप रूचिशील रहेंगे तथा इसको प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही मित्र एवं बन्धु वर्ग से भी आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करेंगे। इस मास में आप इच्छित द्रव्यों की भी प्राप्ति करेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगे संतति पक्ष से भी आप सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे। सामाजिक जनों के मध्य आप इस समय मान सम्मान प्राप्त करेंगे तथा आपके विलम्बित कार्य भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला सहयोगियों से वांछित सहयोग तथा लाभार्जन करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा एवं प्रचुर मात्रा में धन तथा सुख प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस मास में आप धर्मानुपालन में भी प्रवृत रहेंगे एवं समाज में यथोचित प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।

जून 2020 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए मध्यम रहेगा। अतः इस समय आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। आप का इस मास में व्ययाधिक्य रहेगा तथा दुष्ट मनुष्यों की संगति भी प्राप्त होगी। साथ ही स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा। आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अपने ही परिश्रम से सिद्ध हो सकेंगे फिर भी आपको पूर्ण सन्तुष्टि नहीं मिलेगी। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी धन हानि के योग बनेंगे। मित्रों एवं संबधियों के मध्य आपके संबधों में तनाव रहेगा तथा इनसे आवश्यक सुख तथा सहयोग भी नहीं मिलेगा। इस मास में आप जो भी कार्य प्रारंभ करेंगे उसमें अनावश्यक विध्न बाधाएं उत्पन्न होगी जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे। शत्रुओं से भी आपके हृदय में नित्य चिन्ता तथा भय का वातावरण बना रहेगा। साथ ही महत्वपूर्ण कार्यो में भी मनोवांछित सिद्धि नहीं मिलेगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। इससे आप अपने श्रेष्ठजनों तथा उच्चाधिकारियों से सहयोग अर्जित करेंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी उन्नति के अवसर बनेंगे। इस मास में आपकी यात्रा भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्रों या वस्तुओं को भी आप अर्जित करने में सफल रहेंगे।

जुलाई 2020 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं को पराजित करने में आप सफल रहेंगे साथ ही आपके लाभ मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य साधनों से भी आप इस मास में धनार्जन करेंगे। इस समय आपके

समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा भाग्य में भी वृद्धि होगी। साथ ही आपके प्रतीक्षित शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी सम्पन्न होंगे जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सुख भी अर्जित होगा। इस समय सासारिक कार्यो को भी पूर्ण करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा इनसे आपको यथोचित सहयोग तथा आदर प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री एवं संतति से पूर्ण रूप से सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा धन लाभ भी प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा एवं समाज में आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। अतः यह मास आपके लिए शुभ रहेगा।

अगस्त 2020 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने पराक्रम एवं उत्साह से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। साथ ही समाज से भी आप उचित मान सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके यश में वृद्धि होगी तथा बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा उनसे पूर्ण सहयोग तथा सुख भी प्राप्त होगा। उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे एवं अपने कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। इस मास में आप मिष्ठान अधिक मात्रा में भ क्षण करेंगे।साथ ही आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा फलतः शारीरिक बल में वृद्धि होगी। इस समय आपके शत्रु क्षीण रहेंगे अतः उनका दमन करने में आप को सफलता प्राप्त होगी। स्त्री से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगे। इसके साथ ही व्यापार आदि कार्यो से भी आप अतिरिक्त आय अर्जित होगी जिससे आर्थिक सुदृढ़ता बनी रहेगी।

साथ ही इस मास में आप महिला सहयोगियों से भी लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी अतः आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा इस मास में किसी धार्मिक उत्सव या कार्यक्रम का भी आयोजन कर सकेंगे। इस प्रकार यह मास आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा।

सितम्बर 2020 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी घटित होंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विभिन्न प्रकार से सुखोपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा तथा यश में भी वृद्धि होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगे साथ ही अन्य जनों की भलाई के लिए भी आप इस मास में कार्य करते रहेंगे। इस समय स्वास्थ्य भी सामान्य ही रहेगा। उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त करेंगे जिससे समाज में आपको पूर्ण ख्याति प्राप्त होगी।

मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस मास में पूर्ण होगी। जिससे आप मानसिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ इस मास में अशुभ फल भी होंगे।अतः आप गर्मी या पित्तादि से उत्पन्न दोषों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे साथ ही किसी प्रकार से रूधिर विकार की संभावना भी हो सकती है अतः शारीरिक सुरक्षा का पूर्ण ध्यान रखें तथा सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें जिससे कष्ट अल्प मात्रा में हों।

अक्तूबर 2020 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथापि न्यूनाधिक रूप से आप शुभ फलों को भी प्राप्त करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं कई प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति करगें। आपके शत्रु भी इस मास प्रबल रहेंगे फलतः उनकी ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से आप असन्तुष्ट तथा अशान्त रहेंगे। इस समय आपके व्यापार या आजिविका संबधी कार्य में शिथिलता आएगी तथा इनसे आपको पूर्ण लाभ नहीं होगा। साथ ही आपका कोई कार्य बन्द हो सकता है या उसमें किसी प्रकार का परिर्वतन हो सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य सामाजिक जनों से आपका परस्पर वाद विवाद भी हो सकता है। जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता आऐगी। इसके अतिरिक्त धन हानि का भी योग बनता है तथा शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी अवश्य अर्जित करेंगे। अतः स्त्री एवं पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा इनसे आप सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि की भी प्राप्ति करने में सफल रहेंगे। इस प्रकार आपके लिए यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

नवम्बर 2020 के लिए फलादेश

इस मास में आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी। अतः आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य स्वबुद्धि बल से ही सम्पन्न होंगे। इस समय आप कई प्रकार से द्रव्य लाभ अर्जित करेंगे तथा पुत्र से भी पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगे। इस मास में आप ज्ञानार्जन करने में भी सफल रहेंगे। साथ ही प्रभुत्व में भी इस समय वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को हृदय से स्वीकार करेंगे। इस मास में आपके अधिकाशं शुभ कार्य सम्पन्न होंगे तथा कहीं से कोई शुभ समाचार भी प्राप्त होगा जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप यथोचित लाभार्जन करने में सफल रहेंगे एवं समाज से भी आप पूर्ण मान प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। अतः मन से भी सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ इस मास में आप अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे। इससे आप वायु द्वारा उत्पन्न रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा जाने अनजाने किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी तथा इसके लिए आप पश्चाताप करेंगे। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप धन हानि को प्राप्त कर सकते है। अतः यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त रहेगा।

दिसम्बर 2020 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ फलदायक रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। फलतः शरीर में कमजोरी रहेगी। इस मास में आपके शत्रु भी बलवान रहेंगे जिससे वे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे। फलतः आप उनसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। आपके घर में इस समय चोरी भी हो सकती है। साथ ही नौकरी या व्यवसाय में उच्चाधिकारी वर्ग की पूर्ण रूप से आज्ञा का पालन करें अन्यथा आपको किसी भी प्रकार से दण्डित भी किया जा सकता है। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे साथ ही धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। इसके साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में न्यूनता आऐगी। आपके मित्रों एवं संबधियों से भी इस मास तनाव पूर्ण संबध रहेंगे तथा मनोकामनाएं भी अल्प मात्रा में पूर्ण होगी। इस समय मान हानि का भी योग बनता है अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

इसके साथ ही इस मास में आप वायुजनित रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे तथा आग के द्वारा भी आपको धन हानि हो सकती है। अतः आपको पूर्ण रूप से सतर्क होकर अपना समय व्यतीत करना चाहिए।

वार्षिक फलादेश - 2021

इस वर्ष शनि मकर राशि में अष्टम भाव में और राहु वृष राशि में द्वादश भाव में रहेंगे। 6 अप्रैल को गुरु कुम्भ राशि में नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 सितम्बर को मकर राशि में अष्टम भाव में गोचर करेंगे और मार्गी होकर फिर से 20 नवम्बर को कुम्भ राशि में नवम भाव में आजाएंगे। मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 17 फरवरी से 19 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। आप अपने परिश्रम के बल पर कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावट डाली जा सकती है। कुछ समय के लिए नया व्यवसाय आरम्भ करने की योजनाओं को स्थगित रखें।

आप अपने बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। क्रोधवश नौकरी न छोड़ें।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप कुछ आर्थिक बचत करने में सफल रहेंगे। रत्न आभूषण इत्यादि का सामान्य लाभ हो सकता है।

अचल संपत्ति के मामले में कुछ व्यवधान उपस्थित हो सकते हैं। सम्पत्ति के क्रय-विक्रय के मामले में सोच समझकर अन्तिम निर्णय लें। कोई बडा निवेश न करें, आर्थिक नुकसान हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि का योग बन रहा है। आपको परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। सन्तान सम्बन्धी चिन्ताएं रह सकती हैं।

6 अप्रैल के बाद सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। भाइयोंके लिए यह समय शुभ रहेगा तथा आपका पराक्रम बढ़ेगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समाजिक गतिबिधियों में कम ही सहयोग लेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। उनके स्वास्थ्य के मामले में सावधान रहें तथा उन्हें मानसिक तनाव से दूर रखें।

दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। इस वर्ष नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। कुल मिलाकर सन्तान के मामले में यह वर्ष उतार-चढ़ाव वाला रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि सेयह वर्षअनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु एवं शनि के प्रभाव से मौसम जनित बीमारियों से थोडी परेशानी हो सकती है। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है।

अपने खान पान के साथ साथ आपना दिनचर्या भी सुधारना चाहिए। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। मानसिक तनाव से बचें तथा व्यावसायिक व पारिवारिक जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थिति के चलते विचलित न हों तथा मानसिक सन्तुलन को बनाए रखें। अन्यथा आपकी सेहत पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष के प्रारम्भ में प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से विशेष शुभ परिणाम प्राप्त नहीं होंगे।यदि आप उच्च शिक्षा हेतु उच्च संस्थान मे प्रवेश पाना चाहते हैं तो 6 अप्रैल के बाद आपका प्रवेश हो जाएगा।

जिन जातक की नौकरी अभी नहीं लगी है उन लोगों को अभी और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिश्रित परिणाम देगा। इस वर्ष विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए समय बहुत अनुकूल है परन्तु व्यावसायिक उद्देश्यों से होने वाली यात्राएं विशेष शुभ फलदायी नहीं रहेंगी।

6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर नवम स्थान में होगा। उस समय आपकी लम्बी यात्राए होंगे। धार्मिक यात्रा कर आप पुण्यार्जन करेंगे। 14 सितम्बर से गुरु एवं शनि की युति प्रभाव अष्टम स्थान में होगा। उस समय आपके विदेश यात्रा के योग और प्रखर होंगे। यात्रा करते समय स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यो के लिए यह वर्ष साधारण फलदाई होगा तथा पूजा पाठ में एकाग्र होने में कुछ समस्याओं के चलते कठिनाईयां होंगी। साधारणतः गुरु कृपा व तीर्थ यात्रा के योग भी बनेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।

• शनिवार के दिन हनुमान जी को चोला चढाएंएवं काली वस्तुओं का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2022

इस वर्ष 13 अप्रैल को गुरु मीन राशि में दशम भाव में और 17 मार्च को राहु मेष राशि में एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अप्रैल को शनि कुम्भ राशि में नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 12 जुलाई को मकर राशि में अष्टम भाव में आजाएंगे। 30 सितम्बर से 21 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। कार्य में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से कुछ प्रतिद्वन्दिओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती है परन्तु सामान्य काम काज पर उसका कोई प्रभाव नही पड़ेगा।

13 अप्रैल के बाद वरिष्ठ लोगों या बड़े अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा। जो व्यक्ति परामर्शदाता, अध्यापक अथवा अपना काम करते हैं उनको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। यदि आप निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। एकादश स्थान पर शनि की दृष्टि से आय में निरंतरता बनी रहेगी। 13 अप्रैल के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ-साथ रत्न आभूषण इत्यादि की प्राप्ति के योग बनेंगे।

अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय होगा। यदि कोई बड़ा निवेश करना पड़े तो उस क्षेत्र से जुडे अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें। पैतृक संपत्ति के मामले में कोई वाद-विवाद आदि में पड़ने से बचें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद भी हो सकता है। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि से आपको सामाजिक पद व प्रतिष्ठा की प्राप्ती होगी। 13 अप्रैल के बाद पारिवारिक दृष्टि से समय अनुकूल होने लगेगा।

बड़े सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा। जिससे आपका आत्म विश्वास बढ़ेगा और परिवार के प्रति आप का आकर्षण भी बढ़ेगा। माता पिता के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। परन्तु ससुराल पक्ष के लिए वे उनके साथ संबंधों के लिए सामान्य है।

RATNAJYOTI
RATNA JYOTI®
Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चे उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

यदि आपका पहला बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह संस्कार हो जाएगा। 13 अप्रैल के बाद समय थोड़ा प्रभावित होगा। उस समय भी वे अपनी शिक्षा व रोजगार प्राप्ति के प्रयासों में सफल होंगे। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रह सकती है। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत है। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। अप्रैल के बाद आपका स्वास्थ्य थोड़ा प्रभावित हो सकता है।

अष्टम स्थान का शनि अचानक ही स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अतः उस समय स्वास्थ्य संबंधी गतिविधियों के प्रति ध्यान देना आवश्यक होगा। खाने-पीने की वस्तुओं में सावधानी बरतें। शारीरिक दुर्बलता, थकान तथा पेट संबंधी समस्याएं उत्पन्न होने की भी संभावनाएं हैं। नियमित रूप से व्यायाम करना लाभदायक होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम स्थान पर शनि एवं गुरु का संयुक्त दृष्टि प्रभाव विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा योग है। शिक्षा के क्षेत्र में वह अच्छी उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे संस्थान में उनका प्रवेश मिल सकता है।

13 अप्रैल के बाद छठे स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले व्यक्तियों को सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको अप्रैल के बाद नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ गुरु के प्रभाव से लम्बी यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। इन यात्राओं से भाग्योन्नति भी होगी। इस यात्रा के दौरान आपको किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

वर्षारम्भ में द्वादश स्थान का राहु आपको विदेश यात्रा का योग बनाएगा। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि अष्टम स्थान में शनि के गोचरीय प्रभाव से वाहन दुर्घटना या किसी अन्य प्रकार की हानि हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान, हवन इत्यादि धार्मिक गतिविधियों में रुचि लेंगे तथा मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा जिससे परमात्मा के प्रति भक्ति का भाव उत्पन्न होगा।

- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढाएं और हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- प्रतिदिन राहु मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

RATNA JYOTI

वार्षिक फलादेश - 2023

इस वर्ष 22 अप्रैल को गुरू मेष राशि में एकादश भाव में 17 जनवरी को शनि कुम्भ राशि में नवम भाव में और 22 नवम्बर को राहु मीन राशि में दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वक्री मंगल 13 जनवरी को मार्गी हो जाएंगे और पूरे वर्ष सरल गति से गोचर करेंगे। 4 अगस्त से 18 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में आपको अपने कार्यक्षेत्र में अच्छा लाभ मिलेगा। किसी अनुभवी व्यक्ति के मिलने के कारण व्यवसाय को एक नया मोड़ दे पायेंगे।वर्षारम्भ में नौकरी में पदोन्नती भी हो सकती है।

22 अप्रैल के बाद एकादश स्थान का गुरु आपके व्यापार में आय में वृद्धि होगी।यह समय साझेदारी व्यवसाय हेतु उत्तम है।22 नवम्बर के बाद राहु के प्रभाव सेनौकरी में अचानक उन्नति के साथ स्थानान्तरण के योग बनेंगे। यह स्थानान्नरण आपके अनुकूल स्थान पर होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। धनागम तो होता रहेगा साथ ही आप अपने भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन एवं रत्नादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है।

22 अप्रैल के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका रूका हुआ पैसा मिल सकता है। इस वर्ष धनागमन प्रचुर मात्रा में होगा जिससे आप इच्छित बचत करने में तो सफल होंगे ही साथ ही पूर्व कुछ समय से चली आ रही आर्थिक समस्याओं का समाधान भी प्राप्त होने लगेगा। निवेश के लिए भी समय उपयुक्त है। भाई-बहन या पुत्र के विवाह जैसे मांगलिक कार्यों पर धन का व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से देखें तो यह वर्षआपके लिए अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। बातचीत का ढंग व व्यवहर दोनों में बदलाव आएगा।

22 अप्रैल के बाद आपके प्रेम प्रसंगो में भी सफलता प्राप्त होगी। आपके जीवनसाथी के साथ संबंध मधुर बने रहेंगे। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। यह वर्ष सन्तान के लिए विशेष उन्नतिदायक है।

संतान

आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे व अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।22 अप्रैल के बाद पंचम स्थान पर गुरू की दृष्टि प्रभाव से नव विवाहित व्यक्तियो को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। यह समय गर्भाधान के लिए उपयुक्त है।

यह वर्ष आपकी सन्तान के लिए विशेष प्रगति व प्रसन्नतादायक रहेगा। प्रथम संतान के विषय मे शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा में रुचि बढ़ेगी।बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह हो जायेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यहवर्ष अनुकूलरहेगा। मानसिक रूप से भी आप सन्तुष्ट रहेंगे। 22 अप्रैल को गुरू ग्रह का गोचर एकादश स्थान में होगा। इस वर्ष कोई भी लम्बी बीमारी का संकेत नहीं है।

गुरू ग्रह का गोचर शुभ स्थान में होने के कारण आप स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए शाकाहारी भोजन करेंगे एवं योग के साथ-साथ ध्यान करना भी सीखेंगे तथा अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने में सक्षम हो सकेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। षष्ठ स्थान पर गुरू एवं शनि की दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में है उनको नौकरी मिल सकती है।

22 अप्रैल के बाद व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वालो विद्यार्थियो के लिए समय बहुत अच्छा है। विद्यार्थियों को अपने शिक्षा के प्रति रुचि बढेगी। इस समय यदि आप अपने मन को एकाग्र कर पढ़ाई करेंगे तो अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर सकते हैं।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। नवम स्थान का शनि आपको लम्बी यात्रा करा सकता है। वर्षारम्भ में अपने जन्मस्थल की भी यात्रा हो सकती है।

22 अप्रैल के बाद आपकी छोटीव व्यावसायिक यात्राएंहोंगी। इस वर्ष पूर्व निर्धारित यात्राओं की अपेक्षा अचानक यात्राओंके संयोग बनेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यो के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। धर्म स्थान का शनि आपके आध्यात्मिक ज्ञान को बढ़ा रहा है। 22 अप्रैल के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर भगवान के प्रति श्रद्धा एवं भक्ति बढ़ेगी।

• नित्यप्रति श्री सूक्त व लक्ष्मी सूक्त का पाठ करें।
• शुक्रवार को व्रत रखें।
• अपने घर को पूर्णतः साफ, स्वच्छ, शुद्ध व पवित्र रखें तथा घर में पूर्ण शुद्धि व सकारात्मकता बनाये रखने के लिए नियमित रूप से पूजा पाठ, हवन करते रहें तथा धूप-अगरबत्ती व कर्पूर से नित्य प्रति आरती इत्यादि करते रहें।

वार्षिक फलादेश - 2024

इस वर्ष शनि कुम्भ राशि में नवम में और राहु मीन राशि में दशम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में गुरू मेष राशि में एकादश में रहेंगे और 1 मई को वृष राशि में द्वादश भाव में गोचर करेंगे। मंगल ग्रह अपने सरल गति से गोचर करेंगे। 29 अप्रैल से 28 जुन तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। वर्ष के शुरुआत में सप्तम स्थान पर गुरू ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप व्यापार में उन्नति करेंगे। नया व्यापार करने के लिए समय अनुकूल है। कार्यों में सफलता मिलेगी। व्यापार में आपको भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

एकादश स्थान पर गुरू एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से अधिकारियों व वरिष्ठ लोगो का सहयोग मिलेगा तथा आय में वृद्धि होगी। अप्रैल के बाद आपके कार्यो में गुप्त शत्रु या विरोधियों द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। इस समय निवेश के मामलों में जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरू के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। यह वर्ष धनागमन के स्रोतों में वृद्धि के लिए विशेष अनुकूल है।

अप्रैल के बाद आपको भुमि, भवन व वाहन इत्यादि वस्तुओं का सुख प्राप्त होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। इस समय के अंतराल आप कोई बड़ा निवेश करेंगे। निवेश या आर्थिक मामले में कोई बड़ा निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे, परन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा।

आपको भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को सन्तान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

आपके दूसरे बच्चे का चौमुखी विकास होगा व उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। यदि वह विवाह योग्य है तो विवाह संस्कार भी हो सकता है। अप्रैल के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो सकता है अतः उस समय विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। किसी प्रकार की कोई चिंता परेशानी नहीं होने के कारण आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

अप्रैल के बाद आपका समय थोड़ा प्रतिकूल हो रहा है। उस समय छोटी-मोटी बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। द्वादशस्थ गुरु के पृथ्वी तत्व राशि में होने के कारण संक्रमण रोग या मौसम जनित रोगों से परेशानी हो सकती है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए शुभ है। उच्च शिक्षा हेतु श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जायेगा।

अप्रैल के बाद षष्ठ स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परिक्षार्थियों को परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। बेरोजगार जातकों को रोजगार की प्राप्ति होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। अप्रैल के बाद द्वादश स्थान के गुरु आप को विदेश यात्रा भी करा सकते हैं।

नवम स्थान के शनि के प्रभाव से लम्बी यात्राएं हो सकती हैं। चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। परमात्मा के भक्ति या मन्त्र पाठ में ज्यादा रुचि लेंगे। अप्रैल के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य पूजन करें।

• द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा करें।
• दाल, केला व बेसन के लड्डू इत्यादि पीली वस्तुओं का दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि नवम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु दशम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि दशम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरुद्वादश भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि लग्न स्थान में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि द्वितीय भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि लग्न स्थान में आ जाएगी।

व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टि से देखें तो वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरुग्रह के गोचरीय प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष लाभ प्राप्त नहीं होगा। आपको अपने व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अतः इस समय के अन्तराल में कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ न करें, पहले से चले आ रहे व्यापार को ही सुव्यवस्थित ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है।

मई के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपको अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। लग्न स्थान के गुरुनयी विचारधारा नयी योजनाओं को जन्म देंगे जिसका लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में और उन्नति करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान के गुरुधनागम में रुकावट उत्पन्न करेंगे, जिससे आर्थिक उन्नति में कमी हो सकती है। इस समय के अंतराल में निवेश न करें और न ही ऋण दें, नही तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है। मातुल पक्ष से लाभ प्राप्त होगा।

गुरुग्रह के गोचर के बाद समय शुभ हो रहा है। उस समय आपका रुका हुआ धन वापस मिल सकता है। सप्तम स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा या आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में इनका पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में चतुर्थ स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परन्तु 29 मार्च के बाद माता-पिता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

गुरुग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी।

सप्तम स्थान पर गुरुएवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान का गुरुसंतान सम्बन्धित कुछ चिन्ताएं दे सकता है परन्तु मई के बाद लग्नस्थ गुरु के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चे निरन्तर आगे बढ़ेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करेंगे एवं उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश होगा।

नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भधान हेतु समय शुभ है। दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का गुरुआपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना सकते हैं। मधुमेह रोगियों को अधिक परहेज की आवश्यकता है। गुरुग्रह के पृथ्वी तत्व राशि में होने के कारण संक्रामक या पेट संबंधित परेशानियां हो सकती हैं।

मई के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या को अनुशासित रखेंगे। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में षष्ठ स्थान पर गुरुएवं शनि की संयुक्त दृष्टि के कारण प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अच्छी सफलता मिलेगी। वर्ष के प्रारम्भ में बेराजगारों को रोजगार की प्राप्ति हो सकती है।

मई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। आप पढ़ाई लिखाई में सब से आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो सकता है। तकनीकि शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वादशस्थ गुरुविदेश यात्रा के शुभ योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में विदेश यात्रा होगी।

मई के बाद नवम स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि लम्बी यात्रा के योग बना रही है। तृतीय स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि छोटी-मोटी यात्राएं कराती रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप दान-पुण्य, गरीबों को भोजन, भिक्षुओं को भिक्षा, धार्मिक अनुष्ठान इत्यादि अधिक करेंगे। मई के बाद आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा एवं पूजा पाठ में रुचि लेंगे। गुरुजनों व वरिष्ठ लोगों का सम्मान करें व उनके उपदेशों का पालन करें।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें अष्टम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु लग्न स्थान में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमेंद्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें तृतीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत उत्तमरहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनिग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे जिससे आपकीआय में वृद्धि होगी। लग्न स्थान का गुरु नवीन विचार धारा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने नयेव्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैंऔरकम समय में उत्तम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। साझेदारी या शेयर बजार में आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

02 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आपको वरिष्ठ लोगों या बड़े अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगाजिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। धन संचय करने में आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी। 02 जून के बाद आपको रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपको रुके हुए पैसे मिल सकते हैं। इस वर्ष आपके परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले होथों से खर्च करेंगे। निवेश में उत्तम फल मिलने की सम्भावना है।

31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर तृतीय स्थान में होगा। उस समय सामाजिक व धार्मिक कार्यो पर आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनिग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। यदि आप विवाह के योग्य है तो विवाह हो सकता है।

02 जूनके बाद परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा। पिताजी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। 31 अक्टूबर के बाद आप सामाजिक गतिबिधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि से आप के बच्चों कीउन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है। यदि आपकी सन्तान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है। उसको अपने कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त होगी। इस वर्ष आप के बच्चे अच्छे काम करेंगे। आप अपने बच्चों पर गर्व करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में हमेशा सकारात्मक विचार आएंगे जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे एवं अपनी दिनचर्या भी सही रखेंगे। यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

25 नवम्बर के बाद राहु ग्रह का गोचर अष्टम स्थान में हो रहा है। उस समय अचानक आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः वर्षान्त में अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना अधिक जरूरी है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षिणक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल है।

पंचम स्थान परगुरु केदृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। 02 जून के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्त होगी। जिन जातको की नौकरी अभी तक नहीं लगी है, 02 जून के बाद उन लोगों को नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं होंगी।

द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव सेयात्राओं के प्रबल योग बन रहें है। 02 जून के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे और 31 अक्टूबर के बाद आपकी

छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी। आप गुरु मन्त्र लेकर साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने मे आप सबसे आगे रहेंगे। 02 जून के बाद मन्त्र सिद्ध व गुप्त विद्याओं की ओर आपका रूझान बढ़ेगा।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके समने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्रणायाम करें।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि दशम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं दशम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष अष्टम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत बढ़िया रहेगा। दशम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने कार्य क्षेत्र में अच्छा सफलता प्राप्त करेंगे। बडे अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से कुछ गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट उत्पन्न करने की कोशिश कर सकते हैं। आप अपने विवेक से उन पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे।

26 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके आय के स्रोत में वृद्धि होगी। व्यापारिक व्यक्तिओं को इस समय के अंतराल में अच्छा लाभ होगा। आपको मित्रों का भी भरपूर सहयोग मिलेगा। यदि आप अपने भाई के साथ कार्य कर रहे है तो बहुत अच्छा उन्नति करेंगे। 26 नवम्बर के बाद भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यापारियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आर्थिक संपन्नता बनी रहेगी। रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। व्यापारिक अनुकूलता से आपकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा। इस समय के अंतराल में आप इच्छित निवेश करेंगे। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके कुछ अनावश्यक खर्चे भी हो सकते हैं।

26 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम के स्रोत में वृद्धि होगी। कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाईयों का अहम सहयोग होगा। मांगलिक कार्यों में भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं। 26 नवम्बर के बाद आपको भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का पूर्वार्द्ध पारिवारिक रूपसे अच्छा रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके

परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में एक-दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनी रहेगी। परिवार में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। भाइयों का सहयोग मिलता रहेगा। अष्टम स्थान का राहु आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध खराब कर सकता है।

26 जून के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियो में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज में आपका अपना एक अलग व्यक्तित्व होगा। पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगें। 26 नवम्बर के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। गर्भाधान के लिए समय अच्छा चल रहा है।

26 जून से आपके दूसरे बच्चे के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आप का दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। इस समयान्तराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावानात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। आपकी शारीरिक उर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहें। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करें जिससे आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आप कभी कभी छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते है। परन्तु गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप जल्दी अच्छे हो जाएंगे। 26 नवम्बर से आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने कारण आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। विद्यार्थियों के लिए यह समय शुभ रहेगा।

26 जून के बाद तकनीकी शिक्षा या व्यापार के लिए समय अच्छा हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कोइ विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है। परन्तु 26 जून के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा के लिए भी समय काफी अच्छा है।

26 नवम्बर के बाद आप परिवार के साथ अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। पर्यटन स्थल व दार्शनिक स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। यात्रा करते समय सावधान रहें क्योंकि अष्टम स्थान का राहु अचानक दुर्घटना दे सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्य के लिए बढ़िया रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 26 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। 26 नवम्बर के बाद अपने परिवार में सुख, शान्ति या समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन व कोई धार्मिक कार्य भी संपन्न करेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने नित्य दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्तों को रोटी में गुड़ डालकर खिलाएं या राहु ग्रह का ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सं राहवे नमः मन्त्र का जाप करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीस का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यवसाय के लिए उत्तम रहेगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके कार्यों में कुछ विरोधी या गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं।

वर्षारम्भ में उन्नति के लिए नये नये तरीके अपनाएंगे। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे। प्रोपर्टी डीलर या कमीशन पर कार्य करने वाले व्यक्तियों की उन्नति होगी। सप्तम स्थान का राहु साझेदारी में कार्य करने वालों के लिए अच्छा नहीं है।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से भूमि, भवन व वाहन इत्यादि का सुख मिलेगा। भौतिक सुख-सुविधाओं पर आप अधिक खर्च करेंगे। फरवरी के बाद आपके आय के स्रोतो में वृद्धि होगी। निवेश के लिए समय काफी अच्छा चल रहा है परन्तु अष्टम स्थान का राहु कभी कभी अनावश्यक खर्च करा सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी आर्थिक उन्नति में आपके भाईयों एवं परिवार के लोगों का पूर्ण सहयोग होगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। आपका पत्नी के स्वास्थ्य पर भी पैसा खर्च हो सकता है। इस अवधि में वसीयत इत्यादि मिलने की भी संभावनाएं बन रही हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। चतुर्थ स्थान का गुरु पारिवारिक सुख प्रदान करने वाला है। पूरे परिवार में सुख शांति का वातावरण बना रहेगा। मांगलिक कार्य संपन्न होने के योग बन रहे हैं। परिवार में कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो सफलता प्राप्त हो सकती है।

28 फरवरी के बाद गुरु के तृतीय भाव में गोचर करने से आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार के कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाओं को चोट पहुंच सकती है। अतः अच्छा यही है कि विपरीत परिस्थितियों के लिए अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति

विकसित करें। 24 जुलाई के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। सप्तमस्थ राहु आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

संतान

यह वर्ष संतान की तरक्की के योग लेकर आ रहा है। शिक्षा के लिए समय बहुत अनुकूल हो रहा है। परिवार की उन्नति के लिए आपकी संतान नवीन योजनाएं बनाएंगे।

संतान के साथ प्रेम व समन्वय में मधुरता आएगी। घर का वातावरण उत्तम होने के साथ-साथ सामाजिक सम्मान बढ़ेगा। 24 जुलाई के बाद का समय आपके लिए शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में स्वास्थ्य बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। स्वास्थ्य संबंधी किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

तनाव कम करने के लिए इस अवधि में आप अपने मन को एकाग्र कर योग क्रियाएं कर सकते हैं। इससे उत्साह का संचार होगा और आप अपने को स्वस्थ बनाए रखने में कामयाब रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर के लिए उत्तम रहेगा। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार करेंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अपने अंदर मैं की भावना ना आने दें। 23 फरवरी के बाद समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए विशेष शुभ है। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपके माता-पिता को धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए स्थानान्तरण के प्रबल योग बने हुए हैं। यह परिवर्तन आपके हित में होगा। 28 फरवरी के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी।

24 जुलाई के बाद आप अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे या अपने परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष यदि किसी तीर्थयात्रा या कोई धार्मिक कार्य करने जा रहे हैं तो

उसको योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा धार्मिक कार्य में असफलता या पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। 24 जुलाई के बाद पूरे परिवार के साथ कोई विशेष धार्मिक आयोजन जैसे- भगवती जागरण इत्यादि कर सकते हैं।

- भगवान गणेश व माँ दुर्गा की आराधना करें।
- गौ सेवा करें व अपने भोजन का पहला भाग गाय को खिलाएं।
- राहु मन्त्र का जाप करें या राहु की वस्तुओं का दान करें।

RATNA JYOTI

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि,सूर्य — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

शकट योग

जीवान्त्याष्टारिसंस्थे शशिनि तु शकटः।।
क्वचित्क्वचिद्भाग्यपरिच्युतः सन् पुनः पुनः सर्वमुपैति भाग्यम्।
लोकेऽप्रसिद्धोऽपरिहार्यमन्तः शल्यं प्रपन्नः शकटेऽतिःदुखी।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 14, 17 ।।

यदि पत्रिका में चंद्रमा से 6, 8 या 12 वें स्थान में बृहस्पति हो तो शकट योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु — योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप जन्मभर दुःखी रहना, जीवन व्यथित रहना, प्रसिद्धि प्राप्त करना, सामान्य जीवन व्यतीत करना, भाग्यहीनता तथा पुनः भाग्य प्राप्ति के योग बनेंगे।

विमलयोग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः विमलयोगः।
किंचिद्व्ययो भूरिधनाभिवृद्धिं प्रयात्ययं सर्वजनानुकूल्यम्।
सुखी स्वतन्त्रो महनीयवृत्तिर्गुणैः प्रतीतो विमलोद्भवः स्यात्।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6।। श्लोक 57,69 ।।

जिसकी जन्मपत्रिका में द्वादशेष दुःस्थान में स्थित और अशुभ ग्रह युक्त या निरीक्षत हो तो विमल योग बनता है।

योग कारक ग्रह : राहु,शुक्र　　　　　　　　　　　　　　　　　　　योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग अच्छी प्रकार से स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप मितव्ययी, धन संचय करने वाले, सुखी, स्वतंत्र, सद्गुणी, अच्छे कार्यकर्त्ता एवं समदर्शी व्यक्ति होंगे।

महादान योग

दानाधिपेन संदृष्टे लग्ने तन्नायकेपि वा ।
तस्मिन्केन्द्रत्रिकोणस्थे महादानकरो भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि।। अ.7/भाव-9/श्लोक-4

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश पर या लग्न पर नवमेश की दृष्टि हो वह नवमेश भी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक महादानी होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,बुध　　　　　　　　　　　　　　　　　　　योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हाथी-घोड़ा दान, तुलादान तथा महादान करेंगे। आप महादानी होंगे।

अनफा योग

अनफा रविरहितैः।
अन्त्ये कैरववनबान्धवाद्विहगैः।।
वाग्मीप्रभुर्द्रविणवानगदः सुशीलो
भोक्तान्नपानकुसुमाम्बरकामिनीनाम्।
ख्यातः समाहितगुणः सुखशस्तचित्तो
योगे निशाकरकृते त्वनफे सुवेषः।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 5।।

यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा से द्वादश भाव में सूर्य रहित कोई ग्रह हो तो अनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,चंद्र　　　　　　　　　　　　　　　　　　　योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कुशलवक्ता, सामर्थ्यवान्, धनवान्, नीरोग, सुन्दर शीलवान् अन्नपानपुष्पवस्त्र व स्त्री का सुख भोगने वाले, गुणी, सुखी तथा सुन्दर वेशभूषा वाले होंगे।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,राहु   योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

हृदय रोग योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.-285।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश के साथ केतु स्थित हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

योग कारक ग्रह : केतु,सूर्य   योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हृदय रोग के रोगी होंगे ऐसा प्रतीत होता है।

कपट एवं निष्कपट योग

भानुना क्षीणचन्द्रेण सहिते हृदये यदा ।
कपटी क्षणमात्रं तु निष्कापट्यं तदूर्ध्वतः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-142 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थ सूर्य या क्षीण चंद्रमा से युक्त हो तो क्षण मात्र तो कपटी होता है, तदुपरान्त निष्कपटी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध   योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप क्षणमात्र तो कपटी स्वभाव के होंगे, पश्चात् निष्कपटी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रहीन योग

शुक्रेन्दुवर्गे सुतभे विलग्नाच्छुक्रेण चन्द्रेण युतेऽथ दृष्टे ।
शन्यारदृष्टे सति पुत्रहीनः ।।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-10 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्न से पंचम भाव शुक्र या चंद्रमा से दृष्ट, युक्त और वर्ग में हो और उसपर शनि एवं मंगल की दृष्टि हो तो पुत्रहीन योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,चंद्र,सूर्य योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप पुत्रहीन होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

एकपुत्र योग

पुत्रेशांशपतिः स्वभांशकगतो यद्येकपुत्रं वदेत् ।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-11 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान का स्वामी जिस नवांश में हो, उस नवांश का स्वामी निज नवांश में हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल   योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मात्र एक पुत्र का सुख प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.- 293 ।।

यदि जन्मपत्रिका में संतान भाव में वृष, कर्क और तुला में से कोई राशि हो, पंचम भाव में शुक्र या चंद्रमा स्थित हों अथवा इनकी दृष्टि पंचम भाव पर हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र   योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अनेक पुत्रों के सुख प्राप्त करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

दन्त रोग योग

वाक्स्थानपे षष्ठगते सराहौ राहुस्थितर्क्षाधिपसंयुते वा।
दन्तस्य रोगं पतनं च तेषां भुक्तौ तयोर्वा प्रवदन्ति तज्ज्ञाः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.- 3/श्लो.-113।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वितीयेश राहु के साथ षष्ठ स्थान में हो अथवा राहु जिस राशि में है उसके स्वामी से युक्त हो तो उसकी दशान्तर्दशा में दातों का रोग होता है तथा दन्तहीन हो जाता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र   योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जब राहु स्थित भावस्वामी की दशान्तर्दशा आएगी तब दन्त रोग होकर आपको दन्तहीन कर देगा। ऐसा प्रतीत होता है।

तालु रोग योग

तदीश्वरेणापि युतेन्दुपुत्रे सराहुकेतावरिभायुक्ते।
राहुस्थितर्क्षाधिपसंयुते वा भुक्तौ तदा तालुभवः स रोगः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-3/श्लो.-116।।

यदि जन्मकुंडली में द्वितीयेश से युक्त बुध राहु या केतु सहित षष्ठस्थान में हो अथवा जिस राशि में राहु है उसके स्वामी से युक्त हो तो तालु स्थान में रोग द्वितीयेश की दशा में होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,चंद्र   योग की संभावना : 864 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको उपर्युक्त ग्रहों की दशा का काल में तालु स्थान में रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

शास्त्राग्निव्याघ्रसर्पादि पीड़ा योग

पापर्क्षयुक्ते निधने सपापे
शस्त्रानलव्याघ्रभुजङ्गपीडा।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-20।।

यदि जन्मकुंडली में अष्टमेश पाप ग्रह हो और आठवें भाव में पापग्रह भी हों तो शस्त्र, अस्त्र, अग्नि, व्याघ्, सर्पादि की पीड़ा होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,केतु,शनि — योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शस्त्र/ अस्त्र/अग्नि/व्याघ्र या सर्पादि से पीड़ा होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेSथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : शुक्र — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : शुक्र,गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-62 ।।

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

रन्ध्रेशेंगे अस्ते द्विभार्यः।।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 302 ।।

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश लग्न में अथवा सप्तमभाव में स्थित हो तो द्वि भार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो

विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्यः।

।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि   योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएगें, अर्थात आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि   योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु   योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।